

इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वरूप महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री सकल दिगम्बर जैन समाज समिति अजमेर (राज.) के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के राजस्थान डाक परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पुण्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि (अप्रैल चैत्र शुक्ल)	नक्षत्र	तीर्थकर कल्याणक
16	मंगलवार	द्वादशी	पूर्वाफाल्गुनी	17 अप्रैल : भ. महावीर जन्म कल्याणक
17	बुधवार	त्रयोदशी	उत्तराफाल्गुनी	19 अप्रैल : भ. पद्मप्रभ ज्ञान कल्याणक
18	गुरुवार	चतुर्दशी	हस्त	21 अप्रैल : भ. पार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक
19	शुक्रवार	पूर्णिमा	चित्रा	28 अप्रैल : भ. मुनिसुब्रतनाथ ज्ञान कल्याणक
(वैशाख कृष्ण)				
20	शनिवार	प्रतिपदा	स्वाति	29 अप्रैल : भ. मुनिसुब्रतनाथ जन्म-तप कल्याणक
21	रविवार	द्वितीया	विशाखा	02 मई : भ. धर्मनाथ गर्भ कल्याणक
22	सोमवार	तृतीया	अनुराधा	03 मई : भ. नमिनाथ मोक्ष कल्याणक
23	मंगलवार	चतुर्थी	ज्येष्ठा	05 मई : भ. कुन्थुनाथ जन्म-तप-मोक्ष कल्याणक
24	बुधवार	पंचमी	मूल	10 मई : भ. अभिनन्दननाथ गर्भ-मोक्ष कल्याणक
25	गुरुवार	षष्ठी	पूर्वाषाढ़	13 मई : भ. सुमतिनाथ तप कल्याणक
26	शुक्रवार	सप्तमी	उत्तराषाढ़	14 मई : भ. महावीर ज्ञान कल्याणक
27	शनिवार	अष्टमी	श्रवण	
28	रविवार	नवमी	धनिष्ठा	
29	सोमवार	दशमी	शतभिषा दि./रा.	
30	मंगलवार	एकादशी	शतभिषा	
(मई 2019)				
1	बुधवार	द्वादशी	पूर्वाभाद्रपद	17 अप्रैल : रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
2	गुरुवार	त्रयोदशी	उत्तराभाद्रपद	17 अप्रैल : महावीर जयंती
3	शुक्रवार	चतुर्दशी	रेवती	18 अप्रैल : दशलक्षण व्रत पूर्ण
4	शनिवार	अमावस	अश्विनी	19 अप्रैल : रत्नत्रय व्रत पूर्ण
(वैशाख शुक्ल)				
5	रविवार	प्रतिपदा	भरणी	20 अप्रैल : षोडशकारण व्रत पूर्ण
6	सोमवार	द्वितीया	कृत्तिका	07 मई : अक्षय तृतीया
7	मंगलवार	तृतीया	रोहिणी	07 मई : रोहिणी व्रत
8	बुधवार	चतुर्थी	मृगशिरा	
9	गुरुवार	पंचमी	आर्द्रा	
10	शुक्रवार	षष्ठी	पुनर्वसु	
11	शनिवार	सप्तमी	पुष्य	
12	रविवार	अष्टमी	आश्लेषा	
13	सोमवार	नवमी	मघा	
14	मंगलवार	दशमी	पूर्वाफाल्गुनी	
15	बुधवार	एकादशी	उत्तराफाल्गुनी	
(शुभ मुहूर्त)				
दुकान प्रारंभ : अप्रैल-17, 19 मई-2, 10, 11, 12, 15				
वाहन क्रय : अप्रैल-18, 19, 21, 22, 28, 29 मई-2, 9, 10				
मशीनरी प्रारंभ : अप्रैल-19, 22, मई-10, 15				
विद्यारंभ मुहूर्त : अप्रैल-25, मई-9, 10				



संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 240 • अप्रैल 2019

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- आज जरूरत है महावीर की समाज-व्यवस्था 08
- राह दिखाते हैं भगवान महावीर के सिद्धांत 10
- जियो और जीने दो भगवान महावीर के अनमोल संदेश 13
- तीर्थकर भगवान महावीर 16
- जैन वाङ्मय में आयुर्वेद 32
- महान् पराक्रमी अभिनन्दन को जन-जन का वंदन 36
- 108 मुनि श्री सुधीरसागर जी का जीवन परिचय 45
- महावैज्ञानिक महावीर 52
- जैन व्यक्तित्व श्री वालचंद हीराचंद दोशी जैन 54
- कब्ज केंहू बाय-बाय 57
- जैन शोध परम्परा के अग्रणीय-विद्वान 58

बाल कहानी

- कपटी पूजा 59

कविता

- हे वीरा तेरे वन्दे हम 21
- महावीर की जय जयकार 29
- दूनिया का दस्तूर 30
- जिन्दगी क्या है ? 35
- चमन में अब अदावत नहीं होगी 40

कहानी

- वायुसेना का बाहुबली अभिनन्दन 41

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
- चलो देखें यात्रा : 15 • आगम दर्शन : 20 • पुराण प्रेरणा : 23 • माथा पच्ची : 23
- कैरियर गाइड : 24 • दुनिया भर की बातें : 25 • इसे भी जानिये : 30 • दिशा बोध : 31
- आओसीखें : जैन न्याय : 38 • हमारे गौरव : 53 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 54 • हास्य तरंग : 58
- बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांघेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- ♦ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ♦ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ♦ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ♦ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते
की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो
तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 साल)
परम संरक्षक : 15000/-

अपनेशहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788)
• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 155104000037022
• आईसीआईसीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)
में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

**पाती
पाठकों
की....**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर मार्च का अंक देखा उसमें लेखों का संकलन हमें सदैव की तरह आकर्षित करता रहा इस अंक के सभी लेख मौलिक प्रासंगिक और ज्ञानवर्धक लगे संस्कार प्रवाह में राष्ट्र सर्वोपरि अंग लेख को मैंने पढ़ा। राष्ट्र प्रेम से बढ़कर कोई चीज नहीं हो सकती। शराब के बदले में वोट देने वालों के दिल दिमाग में कभी राष्ट्र का महत्व समझ में नहीं आ सकता है। पैसों से मत की जो खरीद फरोख्त होती है उससे देश कमजोर होता है। जातिवाद समाजवाद की जड़ों को खोखला कर देता है देश का समझदार नागरिक यदि जागरूक हो जाये तो राष्ट्र सर्वोपरि का सूत्र सार्थक हो जायेगा।

गिरीश जैन (इन्दौर)

• सम्पादक महोदय, वर्तमान में बच्चों की ज़िद के आगे माता पिता झुक जाते हैं जब बच्चे घर में स्कूल या फिर अपने दोस्तों के बीच अपने मोबाईल, इंटरनेट खोल कर ध्यान मग्न होकर सारी बातों से वे परवाह जाते हैं इस बीच अभिभावकों को नजर रखना होगी कि आपका बालक हिंसक गया या अपराधी गतिविधियों में तो नहीं जुड़ रहा या कब से जुड़ जाता है मालूम नहीं चलता है पबजी, विडियो नाइट्स और अन्य खतरनाक गेम्स से बच्चों के मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एक रिपोर्ट के अनुसार 60% अभिभावक ध्यान नहीं देते हैं। गुजरात सरकार ने ऐसे खतरनाक गेम्स बंद करने के लिये कदम उठाये केन्द्र सरकार पूरे देश में वीडियो गेम्स पर रोक लगाये।

सत्यम जैन (सागर)

• सम्पादक महोदय, विगत माह आतंकवाद की कम्मर तोड़ने का काम भारतीय वायु सेना ने किया। पाक अधिकृत कश्मीर में 70किमी. घुसकर आतंकी संगठन जैश मोहम्मद के 13 ठिकानों को तबाह कर 12 मिराज भारत लौटकर आये पाक ने अपना 1 विमान भारतीय सैन्य कैम्पों को नष्ट करने के लिये भेजा था जिसे भारतीय सेना ने खदेड़ा और मार गिराया। इससे भारतीय सेना का सम्मान बढ़ा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने राष्ट्र के गौरव को शिखर पर पहुँचाया। पाक को अपनी बात का कोई ध्यान नहीं है वह एक शांतिवार्ता का प्रस्ताव देता दूसरी और लड़ाकू विमान भेजता है इससे उसके दुहरे चेहरे होने का स्पष्ट ज्ञान होता है कि वह सुधरेगा नहीं।

अंकुर जैन (वड़ोदरा)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के मार्च अंक में “मूलाचार पर चिंतन” आचार्य श्री विद्यासागर जी का चिंतन के आशय से लेख प्रकाशित हुआ। वैसे तो आचार्य श्री की चर्चा ही अपने आप में मूलाचार है। सच पूछा जाय तो आचार्य श्री स्वयं चलते फिरते मूलाचार है उनका चिन्तन हर पल आत्मकेन्द्रित होता है। मूलाचार पर आचार्य श्री ने उस समय कहा जब विद्वानों में यह चर्चा चली थी कि साधु की एक आचार संहिता बननी चाहिये तब आचार्य श्री ने कहा था कि हजारों वर्ष पहले आचार्य श्री कुंदकुंद देव जो मूलाचार ग्रंथ निबद्ध कर चुके हैं उससे भिन्न आचार्य संहिता क्या हो सकती है अर्थात् मूलाचार साधु की शाश्वत आचार संहिता है।

श्रीमति रश्मि जैन (सागर)

भक्ति तरंग भूल-भगी



जिन वैन सुनत, मोरी भूल भगी
जिन अनुभूति सहज ज्ञायकता
सो चिर रूष तुष मैल-पगी
स्यादवाद-धुनि-निर्मल-जलतैं
विमल भई समभाव लगी

संशयमोह भरमता विंघटी, प्रगटी आतमसोंज सगी
दौल अपूरब मंगल पायौ, शिवसुख लेन होंस उमगी
कर्म स्वभाव चेतन को, भिन्न पिछानन सुमति जगी

जिनेन्द्र के दिव्य वचन सुनकर मेरा अज्ञान दूर हो गया-भ्रान्ति दूर हो गई। कर्म का स्वभाव ओर चेतन का स्वभाव भिन्न-भिन्न है, यह सुमति जिनेन्द्र के दिव्य वचनों को सुनने से आई है।

ज्ञेयों का सहज रूप में जानने का अनुभव जिसका स्वभाव है वह अनादि से दीर्घकाल से कर्म मैल रूपी छिलके से ढका है। वह अब स्याद्वादमयी ध्वनि रूपी निर्मल जल से विमल होकर समताभावी होने लगा है।

संशय, मोह, भ्रम के मिटने पर आत्मपरिणति आत्मा की समार्थ्य शक्ति प्रकट हुई है। दौलतराम को अपूर्व, जो कभी पहले न हुआ ऐसा मंगल हुआ है। अभीष्ट की सिद्धि हुई है जिससे मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रबल इच्छा/उत्सुकता बढ़ी है प्रगट हुई है।

संस्कार प्रवाह भारत में चुनाव

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है जिसमें प्रति 5 वर्ष में चुनाव नियमित रूप से होते हैं। इस बार भी आम चुनाव हो रहे हैं लेकिन चुनाव के समय भारत और पाक के बीच युद्ध के बादल मड़राते रहे हैं भारत युद्ध से कभी भयभीत नहीं रहा लेकिन भारतीय जन मानस रोमांचित अवश्य रहा। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दोस्ती और दुश्मनी गाँठ बाँधकर आखिरी तक निभाते हैं। मोदी ने भारत के स्वाभिमान को जो ऊँचाईयाँ प्रदान कराई है उन पर हर भारतीय गर्व जरूर करता है। भारत के प्रधानमंत्री पद पर रहते हुये उन्होंने पाकिस्तान को घुटनों पर कर दिया और पाक के प्रधानमंत्री इमरान खान नरेन्द्र मोदी से बात करने के लिये व्याकुल हो उठे परन्तु प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी एक ही बात कही पहले आतंकवाद समाप्त करो फिर हमसे बात करो।

आचार्य पूज्यपाद के शांतिवाद में दिये गये धर्म नीति और राज नीति का सशक्त सूत्र है कि राजा न्याय प्रिय और धर्मप्रिय होना चाहिये यदि राजा कमजोर होगा तो देश राष्ट्र में आतंक, अन्याय, अत्याचार, शोषण और हिंसा का बोल बाला हो जायेगा अहिंसा परमो धर्म: का सूत्र वाक्य मात्र मंदिरों की दीवारों और शास्त्रों के पृष्ठों पर ही लिखा रह जायेगा।

चुनाव के इस संवेदन शील समय में दो विचार धारायें आपके मन मस्तिष्क में अपना दबाव बनाये होंगी कि भारत की सरकार मजबूत होना चाहिये या मजबूर। जिनके मन स्वार्थ और अहम् बैठा हुआ है जो, भ्रष्टाचार का पक्ष लेते चले आ रहे हैं वे तो हमेशा मजबूर सरकार की ही चाहत रखेंगे क्योंकि उनको दिल दिमाग में मात्र परिवार उन्नति का सपना ही प्रभावशील है जबकि मेरी भावना जैसी पवित्र प्रार्थना में कहा गया है कि बनकर सब युगवीर हृदय से देशोन्नति रत रहा करें। यह मेरी भावना का संगीत हमारे कानों में जब जब भी गूँजेगा तब तब हम राष्ट्रीय व्यापक सोच के साथ ही अपना मन बनायेंगे और मजबूत सरकार बनाने के पक्ष में खड़े रहेंगे किन्तु तुच्छ स्वार्थ साधना के व्यामोह में पड़कर सच्चा जैन राष्ट्र भक्त मजबूर सरकार के लिये सोच भी नहीं सकता है।

चुनाव में मतदान करना हर श्रावक का परम कर्तव्य है यही आपका मतदान अहिंसा धर्म की नींव को मजबूत करेगा राष्ट्र के मजबूत होने के लिये मजबूत सरकार भी चाहिये शांति की धारा मजबूत राष्ट्र में ही प्रवाहित होती है।

अतः आप मजबूत सरकार बनाने के लिये मतदान अवश्य करें।

आज जरूरत है महावीर की समाज-व्यवस्था

* ललित गर्ग (दिल्ली) *

भगवान महावीर सदियों पहले जन्में, वे जैन धर्म के मौलिक इतिहास की परम्परा में इस युग के अंतिम तीर्थंकर हैं। तीर्थंकर प्रभु महावीर के अनेक नाम हैं। उन्हें सन्मति, अतिवीर, वीर, महावीर, वर्द्धमान, प्रभृति अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है। भगवान महावीर के नामकरण संस्कार के समय राजा सिद्धार्थ द्वारा वर्द्धमान नाम रखा गया था। कल्पसूत्र में अन्यत्र उल्लेख है कि भय-भैरव के उत्पन्न होने पर भी अचल रहने वाले, परीषह एवं उपसर्ग को शांति और क्षमा से सहन करने में सक्षम, प्रिय और अप्रिय प्रसंगों में समभावी संयम युक्त तथा अतुल पराक्रमी होने के कारण देवताओं ने श्रमण-भगवान महावीर नाम रखा।

महावीर का संपूर्ण जीवन भी विचित्र घटनाओं से परिपूर्ण था। जन्म के समय से लेकर मुनि धर्म स्वीकार करने के तीस वर्ष में उन्होंने जिन नामों से प्रसिद्ध प्राप्त की थी, वे उनके जीवन की विशेष घटनाओं से जुड़े हुये हैं। तीस वर्ष की आयु में उन्होंने मुनि धर्म अंगीकार किया एवं पूर्ण रूप से अकिंचन, अपरिग्रही एवं यथाजात रूप धारण किया और घोर तप में लीन हो गये। इसके बारह वर्ष के पश्चात जब महावीर की आयु बयालीस वर्ष थी विहार में जूँधिका ग्राम के समीप ऋजुकूला नदी के तट पर अपने अत्यंत उग्र तप एवं पुरुषार्थ को कार्यान्वित करते हुये उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया और अरहंत बन गये। तीस वर्ष तक आत्मधर्म रूप आत्मविज्ञान का उपदेश देकर जगत के जीवों को स्वभाव रूप होने का मार्ग बताया और 72 वर्ष की आयु पूर्ण कर सिद्धालय में जा विराजे। वे सर्वज्ञ सर्वदर्शी परमात्मा बन गये।

भगवान महावीर एक युगद्रष्टा लोकनायक थे। दलित और पीड़ित मानवता के मसीहा, सत्य, प्रेम और अहिंसा के अग्रदूत, सामाजिक शोषण और कुरीतियों के सुधारक एवं अत्याचार, अनाचार और भ्रष्टाचार के प्रखर विरोधी एवं मानवता के दिव्यदूत थे।

महान क्रांतिकारी के रूप में भगवान महावीर सुविख्यात हैं। आज के युगों में समस्याओं का समाधान, भगवान महावीर द्वारा निर्देशित मार्ग में ही खोजा जा सकता है, दूसरा कोई विकल्प नजर नहीं आता।

महावीर ने जीवनानुभव और विवेक से सत्यानुवेषण किया। स्वयं आंखों से देखकर, अनुभवों की गहराइयों में भारतीय संस्कृति के कण-कण में महावीर की अनुगूँज है। महावीर ने अहिंसा के आदर्श को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने एक संपूर्ण अहिंसक जीवनशैली प्रस्तुत की। वे युगदर्शी थे, शाश्वतदर्शी थे, वे कोरे युगद्रष्टा नहीं थे। क्योंकि युगद्रष्टा केवल सामायिक सत्य को देखता है जबकि महावीर ने शाश्वत सत्य को देखा जो त्रैकालिक सत्य होता है। यही कारण है कि उन्होंने भारतीय समाज को जिस गहराई से उपदेश दिया उसमें त्रैकालिक सत्य की सहज ही सुगंध व्याप्त थी। महावीर ने कर्मकांडों को आध्यात्मिक रूप दिया। उन्होंने समता धर्म की स्थापना की जिसके दो मुख्य फलित हैं- अहिंसा और अपरिग्रह। उस युग की समाज-व्यवस्था में धन की भांति मनुष्य का भी परिग्रह होता था और उस पर मालिक का पूर्ण अधिकार रहता। बिका हुआ आदमी दास दृष्टियों से अनुचित बताया और जनता को इसे छोड़ने के लिये प्रेरित किया।

दास-प्रथा-उन्मूलन, अपरिग्रह, मानवीय एकता, स्वतंत्रता, समानता, सापेक्षता, सहअस्तित्व आदि समता के विभिन्न पहलुओं की मूलधारा भगवान महावीर वचनों तथा प्रयत्नों में खोजी जा सकती हैं। उन्होंने जन-भाषा में अपनी बात कही और उनकी बात सीधी जनता तक पहुंची। जनता ने उसे अपनाया, पर कोई भी पुराना संस्कार एक साथ नहीं टूट जाता। ढाई हजार वर्षों के बाद हम अनुभव कर रहे हैं कि महावीर-वाणी के वे सारे स्फुलिंग आज महाशिखा बनकर न केवल भारतीय समाज को, किन्तु समूचे मानव-समाज को प्रकाश दे रहे हैं।

भगवान महावीर भारत-भूमि पर अवतरित ऐसे महापुरुष थे, जिनके व्यक्तित्व में विकास की ऊँचाई एवं विचारों की गहराई एक साथ संक्रांत थी। उनका अपार्थिव चिंतन जहां आज हिंसा से आक्रांत भूली भटकी मानवता को नया दिशा-दर्शन दे रहा है वहीं स्वस्थ समाज की संरचना का आधारभूत भी बन रहा है।

आचार्य श्रीमद् इन्द्रदिन सूरिश्वर जी म.सा. के निकट रहकर मैंने महावीर को सूक्ष्मता से समझा, अहिंसा के दर्शन को समझा और भारतीय समाज में महावीर के महत्व को आत्मसात् किया। महावीर की अहिंसा न केवल जैन इतिहास में नया चिंतन प्रस्तुत करती है, अपितु भारतीय विचारधारा में भी नई सोच पैदा करने की सार्मथ्य रखती है।

चेतना के प्रकाशपुंज चरम तीर्थंकर भगवान महावीर ने अहिंसा परमोधर्म: कहकर सबको जीवन में हिंसा से दूर रहने एवं समता मूलक समाज की स्थापना करने का शाश्वत संदेश दिया है। अहिंसा का पालन करने पर सत्य का साक्षात्कार स्वतः ही हो जाता है। अतः यह अहिंसा हमारी मुक्ति और मोक्ष का साधन/युक्ति मानी जाती है। अहिंसा का अर्थ है- मनसा, वाचा, कर्मणा किसी भी प्रकार की

हिंसा न कर, सबसे साथ दया का व्यवहार करना यह दया ही हमारे धर्म का मूल है।

आज इस भौतिकवादी दौड़ में विश्व शक्ति के पीछे पागल है। वह तृष्णा का गुलाम/दास बनकर ही रह गया है। अतः उसे आत्मिक सुख संतोष नहीं मानसिक शांति नहीं। उसे यह जीवन बहुत दूभर, भारयुक्त और कठिन लगने लगा है। वह ज्ञान, विवेक, संस्कार, चरित्र तथा अहिंसा का मूलमंत्र भूल गया है। संयम तथा अहिंसा की साधना उसको कठिन लगने लगी है। वह योगी नहीं, भोगी बनने पर उतारू और यही भोगलिप्सा उसे विनाश के कगार पर ले आई है। आवश्यकता है महावीर की समाज व्यवस्था को अपनाने की। उसी व्यवस्था को अपनाकर हम स्वस्थ समाज की संरचना कर सकते हैं।

मृत्यु से डरने वाला तथा कष्ट से घबराने वाला व्यक्ति थोड़ी सी यातना की संभावना से ही विचलित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति हिंसात्मक परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देते हैं, जो व्यक्ति कष्ट सहिष्णु होते हैं वे विषम और जटिल स्थिति में भी अन्याय और असत्य के सामने झुकने की बात नहीं सोचते। ऐसे ही व्यक्ति अहिंसात्मक प्रतिकार में सफल होते हैं। ऐसे ही व्यक्ति महावीर की समाज व्यवस्था को साकार कर सकते हैं। भगवान महावीर ने कहा- **जीओ और जीने दो**। जीवन में यदि मानव शान्ति चाहता है तो उसे घर-घर जाकर अहिंसा का अलख जगाना होगा अहिंसा पालन का अभियान छेड़ना होगा। गांव-गांव में अहिंसा को स्थापित कर उसके प्रति समर्पित होना होगा, तभी हमारा जीवन सार्थक एवं सफल माना जायेगा। जन-जन में अहिंसा के प्रति आस्था पैदा करने एवं महावीर की समाज व्यवस्था को स्थापित करने के लिये ही सुखी परिवार अभियान का उपक्रम शुरू किया गया है। सुखी परिवार अभियान महावीर की समाज व्यवस्था की स्थापना का सशक्त माध्यम है।

राह दिखाते हैं भगवान महावीर के सिद्धांत

✽ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) ✽

जैन परम्परा में 24 तीर्थंकर हुये हैं। वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। भगवान महावीर के जन्म कल्याणक को महावीर जयंती के रूप में देश-विदेश में बड़े ही उत्साह के साथ पूरी आस्था के साथ मनाया जाता है। भगवान महावीर को वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा से 599 पूर्व कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एक मात्र सन्तान के रूप में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। 30 वर्ष तक राजप्रसाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण कर केवलज्ञान प्राप्त किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 517 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर के उपदेश आज भी अत्यंत समीचीन और प्रासंगिक हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में बहुत सी सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति और समाज सुधार लिये सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यक आचरण के सिद्धांतों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्री-दासता, महिलाओं के समान दर्जे और सामाजिक समता जैसे विषयों पर सामाजिक प्रगति की शुरुआत की। भगवान महावीर की शिक्षाओं में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का हास, युद्ध और आतंकवाद के जरिये हिंसा, धार्मिक, असहिष्णुता तथा गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी सम-सामयिक समस्याओं के समाधान पाये जा सकते हैं। भगवान महावीर ने अहिंसा परमो धर्म का शंखनाद कर आत्मवत् सर्व भूतेषु की भावना को देश और दुनिया में जाग्रत किया। जियो और जीने दो अर्थात् सह-अस्तित्व, अहिंसा एवं अनेकांत का जैसा चिंतन देने वाले महावीर स्वामी के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ है।

आज विश्व के सामने उत्पन्न हो रहीं सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदायें, हिंसा का सर्वत्र होने वाला तांडव, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, वैमनस्य, युद्ध की स्थितियां, प्रकृति का शोषण आदि समस्यायें विकराल रूप ले रही हैं। ऐसी स्थिति में कोई समाधान हो सकता है तो वह महावीर स्वामी का अहिंसा, अपरिग्रह और समत्व का चिंतन है। भगवान महावीर के तीन सिद्धांत अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह बहुत सी आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पांच महान सिद्धांतों की शिक्षा दी। उन्होंने समस्त प्राणी-जगत के प्रति प्रेम और करुणा का संदेश दिया। उनकी मान्यता

थी कि मोक्ष और कुछ नहीं है वरन आत्मिक परितोष है। संसार में व्यक्ति इसका अनुभव अपने सुविचारित प्रयासों द्वारा कर सकता है। उनका मत था कि मनुष्य अपने भाग्य का स्वामी स्वयं है और प्रत्येक आत्मा में इतनी क्षमता है कि वह परमसिद्धि तक उठकर चरमावस्था को प्राप्त कर सके, जिसे प्राप्त करने पर वह पुर्नजन्म के बंधन से मुक्त हो जाता है। भगवान महावीर ने अपने धर्म में स्त्रियों और पुरुषों को बिना किसी भेदभाव के दीक्षित किया। उन्होंने समाज में प्रचलित सभी बुराइयों के विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड़ा।

भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने मानव को मानव के प्रति ही प्रेम और मित्रता से रहने का संदेश नहीं दिया अपितु मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति से लेकर कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी आदि के प्रति भी मित्रता और अहिंसक विचार के साथ रहने का उपदेश दिया है। उनकी इस शिक्षा में पर्यावरण के साथ बने रहने की सीख भी है। भगवान महावीर के विचार किसी एक वर्ग, जाति या सम्प्रदाय के लिये नहीं, बल्कि प्राणीमात्र के लिये हैं। भगवान महावीर की वाणी को गहराई से समझाने का प्रयास करें तो इस युग का प्रत्येक प्राणी सुख एवं शांति से जी सकता है।

विश्वप्रभु भगवान महावीर स्वामी अन्तःचेतना के संवाहक एवं अहिंसक धर्म के परम उद्घोषक थे। उन्होंने अपने जीवन में मानव धर्म के निमित्त अनेक सत्यां एवं तथ्यों को उद्घाटित किया। उन्होंने प्राणीमात्र को जो कुछ भी दिव्य संदेश दिये, ये सभी आचरणात्मक थे। किसी प्रकार के प्रदर्शन या उपचार का उनकी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं था। भगवान महावीर जन साधारण के बीच रहे और साधारण रूप में रहे। समता भगवान महावीर की साधना का उद्देश्य था और वही फलश्रुति बन गयी। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में अपने समत्व को धूमिल नहीं होने दिया। सत्कार और तिरस्कार के मध्य उनके संतुलन का सेतु प्रकम्पित नहीं हुआ। अनुकूलता और प्रतिकूलता उनके मन को प्रभावित नहीं कर सकी।

भगवान महावीर ने समतामूलक समाज का उपदेश दिया। जहां राग, द्वेष होता है, वहां विषमता पनपती है। इस दृष्टि से सभी समस्याओं का की जड़ है राग और द्वेष। व्यक्ति अपने स्वार्थों का पोषण करने, अहं को प्रदर्शित करने, दूसरों को नीचा दिखाने, सत्ता और विषमता के गलियारों में भटकता रहता है। भगवान महावीर की शिक्षायें आर्थिक असमानता को कम करने की आवश्यकता के अनुरूप हैं। उन्होंने बताया कि अभाव और अत्यधिक उपलब्धता दोनों की हानिकारक हैं।

अतः यदि आज भगवान महावीर के सर्वोदयी सिद्धांत, अनेकान्तात्मक विचार, सभी पक्षों को अपने में समाहित कर लेने वाली स्याद्वाद वाणी, अहिंसा युक्त आचरण और अल्प संग्रह से युक्त जीवनवृत्ति हमारे सामाजिक जीवन का आधार व अंग बन जाये तो हमारी बहुत सी समस्यायें सहज ही सुलख सकती हैं। अतएव हम विश्व शांति के साथ-साथ आत्म शांति की दिशा में भी सहज अग्रसर हो सकते हैं। इस महावीर जयंती हम उनके चरण छूने के साथ ही आचरण भी छूने का प्रयास करें, तभी महावीर जयंती मनाने की सार्थकता है।



अयम स्वास्थ्य योग

छुहारे के अनेक प्रयोग

बिस्तर में पेशाब :- बच्चे बिस्तर में पेशाब करते हो तो नित्य रात को कुछ दिन 2 छुहारे खिलायें। बड़े आदमी बार-बार पेशाब जाते हों तो नित्य छुहारे खिलायें। पेशाब बार-बार होने से दिन में दो बार छुहारे खायें। रात को छुहारा खाकर दूध पीयें।

साफ आवाज :- सोते समय एक छुहारा दूध में उबालकर लें। इसे लेने के दो घंटे तक पानी न पीये। इससे तीखी, थोड़ी आवाज साफ हो जायेगी।

कब्ज :- सुबह शाम तीन छुहारे खाकर गर्म पानी पीयें। छुहारे सख्त होने से खाना संभव न हो। तो दूध में उबालकर ले सकते हैं। छुहारा नित्य खाते रहने से बबासीर, रक्त संचरण ठीक होगा।

प्रातः दो छुहारे पानी में भिगो दे। रात को इन्हें चबा चबा कर खायें। भोजन कम करें यो रात को दो छुहारे दूध में उबालकर भी ले सकते हैं। इससे कब्ज दूर होगी।

श्वास रोग :- छुहारा गर्म है। फेफड़ों और छाती को बल देता है। कफ एवं सर्दी में लाभदायक है।

मोटापा :- छुहारा रक्त बनाता है। बल देता है शरीर को मोटा करता है। दूध में दो छुहारे उबालकर खाने से मांस एवं बलवीर्य बढ़ता है। बच्चों के लिये छुहारा दूध में भिगो दे। जब फूल जाये तो पीसकर छानकर पिलायें।

पथरी, लकवा, पीठ दर्द में छुहारा लाभदायक है मासिक धर्म खोलता है।

गुहेरी :- गुहेरी पर छुहारे की गुठली को पानी से घिसकर लगाने से आराम होता है।

अवरोधक :- छुहारा अवरोधक अर्थात् बाहर निकालने वाली चीज को रोकता है। जैसे दस्त, वीर्य, आंसू, पसीना, लार सबको रोकता है।

शक्तिवर्धक :- छुहारे में कैल्शियम बहुत मिलती है। छुहारे खाकर ऊपर से गर्म दूध पीये। इससे कैल्शियम की कमी होने वाले रोग, हड्डियों की कमजोरी, दांतों का गलना ठीक होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

शीघ्र पतन एवं पतले वीर्य वालों को दो छुहारे रोज खाने चाहिये।

सेवन :- छुहारे एक बार में चार से अधिक नहीं खाने चाहिये वरना गर्मी करते हैं। दूध में भिगोकर छुहारा खाने से इसके पोष्टिक गुण बढ़ जाते हैं।

जियो और जीने दो भगवान महावीर के अनमोल संदेश

* श्रीमति प्रियंका जैन (ललितपुर) *

ईसा से 599 वर्ष पहले वैशाली गणतंत्र के कुण्डलपुर में पिता राजा सिद्धार्थ और रानी माता त्रिशला के यहाँ चैत्र शुक्ल तेरस को वर्द्धमान का जन्म हुआ था। यही वर्द्धमान बाद में भगवान महावीर बने। भगवान महावीर को वीर, अतिवीर और सन्मति भी कहा जाता है। भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर हैं।

उनके जन्म कल्याणक के दिन प्रातः काल से ही अनुयायियों में उत्सव नजर आने लगता है। जगह-जगह पर प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं। बड़े पैमाने पर जुलूसों के साथ पालकियां निकाली जाती हैं जिसके बाद स्वर्ण और रजत कलशों से महावीर स्वामी का अभिषेक किया जाता है। संगोष्ठी और व्याख्यान होते हैं। अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। दिन भर जैन धर्म के धार्मिक स्थलों पर धार्मिक कार्यक्रमों की धूम रहती है।

महावीर स्वामी ने पूरी दुनिया को सत्य, अहिंसा का मार्ग दिखाया और पूरी दुनिया को सत्य के मार्ग पर अहिंसा के साथ चलने का उपदेश दिया और उनके बताये गये सत्य और अहिंसा आदि के पांस सिद्धान्त आज पहले से अधिक प्रासंगिक हैं।

भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती पर आइये जानें भगवान महावीर के कुछ प्रमुख अनमोल वचन और विचार :-

वैसे तो उनका पूरा जीवन ही एक संदेश है, अनुकरणीय है लेकिन उन्होंने जो मूलमंत्र दिया वह अहिंसा परमो धर्म का है, जियो और जीने दो का है। उन्होंने कहा कि हमें किसी भी रूप में किसी भी स्थिति में कभी भी हिंसा का मार्ग नहीं अपनाना चाहिये। जब वे अहिंसा की बात करते हैं तो यह सिर्फ मनुष्यों तक सीमित नहीं बल्कि समस्त प्राणियों के बारे में है।

मनुष्य के दुखी होने की वजह खुद की गलतियां ही हैं जो मनुष्य गलतियों पर काबू पा सकता है वही मनुष्य सच्चे सुख की प्राप्ति भी कर सकता है।

उन्होंने सत्य का पालन करने उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य को मन, वचन और कर्म से शुद्ध होना चाहिये।

उन्होंने कहा जो जिस अधिकार का हो, वह उसी वर्ग में आकर सम्यक्त्व पाने के लिये आगे बढ़े। जीवन का लक्ष्य है समता पाना।

भगवान महावीर के सिद्धांतों में बहुआयामी विकास का उल्लेख किया गया है। उन्होंने कहा था, प्रसन्नता सभी जीवों का स्वभाव है। प्रत्येक जीव पीड़ा को मिटाना चाहता है ताकि वह सदैव प्रसन्न रह सके।

किसी के अस्तित्व मिटाने की अपेक्षा उसे शांति से जीने दो और खुद भी शांति से जियो तभी आपका कल्याण संभव है।

भगवान महावीर ने मानव शरीर में एक जाग्रत जीवात्मा के रूप में देवत्व प्राप्त किया। भगवान महावीर ने जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये एक दर्शन का प्रतिपादन किया। उन्होंने दृढ़ता से कर्म के सिद्धांत का अनुपालन करते हुये कहा कि कर्म, अर्थात् हमारे कार्यों से ही

हमारे भाग्य का निश्चय होता है। उनके उपदेशों में यह बताया गया है कि व्यक्ति जन्म, जीवन, पीड़ा, कष्ट तथा मृत्यु से मुक्ति पाते हुये कैसे मोक्ष अथवा निर्वाण प्राप्त करें।

भगवान महावीर ने स्वामित्ववादी भावना की समाप्ति और इसके स्थान पर धन के रक्षक की अवधारणा का प्रचार किया। उन्होंने स्वयं के उदाहरण द्वारा इस आदर्श की खूबियों का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति का परित्याग कर दिया और सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिये एकांत जीवन व्यतीत किया।

किसी का भला करके उस भलाई को भूल जाना ही सबसे बड़ी उपलब्धि है जो लोग आपका बुरा करे उसे भूल जाना ही बुद्धिमानी है।

उन्होंने उचित विश्वास अर्थात् सम्यक दर्शन, उचित ज्ञान अथवा सम्यक ज्ञान, और उचित आचरण अथवा सम्यक चरित्र को, निर्वाण प्राप्ति के लिये महत्वपूर्ण बताया। उचित आचरण के लिये उन्होंने पांच अनिवार्य सिद्धांतों अर्थात् हिंसा का त्याग अथवा अहिंसा, सच्चाई अथवा सत्य और अनुचित सम्पत्ति से बचना अथवा अस्तेय, पवित्रता अथवा ब्रह्मचर्य तथा व्यक्ति, स्थान और सांसारिक वस्तुओं से पूर्ण अनासक्ति अथवा अपरिग्रह, प्रतिपादन किया था।

उन्होंने कहा था व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से महान बनता है।

उन्होंने संवाद और सामाजिक अहिंसा के अनुपालन द्वारा मतभेदों और भिन्नताओं का समाधान करने की शिक्षा दी। वर्तमान संदर्भ में, इससे अधिक प्रासंगिक कुछ भी नहीं हो सकता है।

मनुष्य के सबसे बड़े दुश्मन खुद के भीतर होते हैं जो क्रोध, घमंड, लालच, आसक्ति और नफरत के रूप में रहते हैं इसलिये जो मनुष्य खुद के इन दुर्गुणों पर विजयी पा लेता है फिर उसे बाहरी दुश्मनों से लड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

इस नश्वर रूपी संसार में आत्मा सदैव अकेली ही आती है अकेले ही इस दुनिया को छोड़ जाती है। आत्मा का कोई भी साथ नहीं देता है और न ही कोई उसका मित्र होता है।

सत्य ही दुनिया का सबसे सच है किसी भी इन्सान को किसी भी परिस्थिति में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ना चाहिये और एक बेहतर इन्सान तभी बन सकते हैं जब हर स्थिति में सत्य का साथ दे।

दुसरो की वस्तुओं को चुराना या किसी के वस्तु को पाने की कामना भी पाप है अर्थात् हमें जो मिला है उसी में खुश रहना चाहिये।

कभी भी आवश्यकता से अधिक की कामना भी नाश का कारण बनता है क्योंकि ये दुनिया नश्वर है और सच्चा इन्सान कभी भी मोहमाया में पड़कर इन नाशवान वस्तुओं की कामना नहीं करता।

भगवान महावीर के उपदेश आज भी अत्यंत समीचीन और प्रासंगिक हैं। उन्होंने उपदेश दिया कि कोई भी जन्म से निर्धन अथवा धनी नहीं होता। उन्होंने कहा था कि व्यक्ति को अपने जन्म से नहीं बल्कि कार्यों द्वारा जाना चाहिये।

हमारा जीवन धन्य हो जाये यदि हम भगवान महावीर के इस छोटे से उपदेश का ही सच्चे मन से पालन करने लगे कि संसार के सभी छोटे-बड़े जीव हमारी ही तरह हैं, हमारी आत्मा का ही स्वरूप हैं।

चलो देखें यात्रा

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र देराटू जिला अजमेर

✱ इंजी.आई.एम. जैन (पहाडिया) ✱

राजस्थान प्रांत के अजमेर जिले में कई प्राचीन मंदिर एवं तीर्थक्षेत्र देराटू, मोराझड़ी, केकडी, चंपानेरी, सरवाड, बघेरा, टोडारायसिंह जैसे गांवों, कस्बों एवं नगरों में विद्यमान हैं।

यहां सिर्फ देराटू गांव के अतिशय क्षेत्र की जानकारी दी जा रही है।

श्री शांतीनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र ग्राम देराटू जिला अजमेर,

मार्गदर्शन- यह अतिशय क्षेत्र देराटू गांव राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित है, यहां अजमेर से नसीराबाद बायपास होकर देराटू, सरवाड से देराटू, मालपुरा से मोराझड़ी, समसर, सनोद, नसीराबाद बायपास होकर देराटू पहुंच सकते हैं।

मोराझड़ी अतिशय क्षेत्र से देराटू 24 किमी. के लगभग है।

इतिहास एवं अतिशय- देराटू एवं मोराझड़ी अतिशय क्षेत्रों का अतिशय एक साथ हुआ था, मोराझड़ी के प्रतिष्ठित जैन परिवार के धर्मात्ता प्रवृत्ति जिनकी धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी, उन्होंने धनोप गांव की नदी से दो जैन खड्गासन प्रतिमायें थी, जिन्हें विराजित करवाने हेतु मोराझड़ी और देराटू गांव के पंचों को प्रतिमायें ले जाने हेतु बैलगाड़ी लेकर धनोप बुलवाया गया और दोनों तरफ से पंच बैलगाड़ीयों के साथ धनोप आ गये।

दोनों तरफ के पंचों ने निश्चय किया कि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा देराटू एवं शांतीनाथ भगवान की प्रतिमा मोराझड़ी ले जाई जाये।

इस निर्णय के अनुसार दोनों ओर के पंचों ने अपनी-अपनी बैलगाड़ी में भगवान की प्रतिमायें बैठाकर अपने- अपने गांव ले जाने का प्रयास किया।

उस समय यह आश्चर्य देखने में आया कि दोनों बैलगाड़ियां वहां से नहीं चली, इसके लिये बड़ा प्रयास किया गया। निराश होकर दोनों ओर के पंचों ने यह तय किया कि जिधर बैलगाड़ियां जाना चाहे जाने देंगे।

कुछ देर बाद बैलगाड़ियां धनोप से प्रस्थान करने लगी। उस समय देखने में आया कि देराटू वाली बैलगाड़ी मोराझड़ी की ओर, मोराझड़ी की बैलगाड़ी देराटू की ओर चलने लगी। इस प्रकार दोनों गाड़ियां सोचे गये एवं निर्णय से विपरित मोराझड़ी एवं देराटू पहुंच गई।

देराटू में भगवान शांतीनाथ स्वामी की प्रतिमा आने पर समस्त गांववासियों को अपार हर्ष हुआ। विधी विधान अनुसार प्राचीन जिनालय में प्रतिमा जी को विराजित कर दिया गया।

यह क्षेत्र पार्श्वनाथ जिनालय था, शांतीनाथ भगवान की प्रतिमा जी विराजित होने के बाद **शांतीनाथ अतिशय क्षेत्र कहलाने लगा।**

शांतीनाथ भगवान की मनोज्ञ प्रतिमा अतिशयकारी है कहते हैं देवों द्वारा रात्री में पूजा अर्चना, संगीत की ध्वनी के साथ सुनाई देती है। इनके दर्शन से वांछित मनोकामना पूर्ण होती है।

देराटू गांव में उसी के पास दुसरा जिनालय है, इस प्रकार देराटू में दो जैन मंदिर पास 2 में है।

यह गांव ब्रिटिश सेना का डेरा टू (Two) नंबर का केम्प था, बिगडते बिगडते उसका नाम देराटू हो गया। यहां कुल आठ जैन परिवारों के घर हैं।

यहां के मंदिर की देखरेख श्री हुकमचंद जी सेठी (अध्यक्ष) जिनका मोबाईल नं. 9414824701 के द्वारा की जाती है। दर्शन हेतु उनसे संपर्क किया जा सकता है। आवास एवं भोजन व्यवस्था नहीं है।

देराटू के साथ मोराझड़ी अतिशय क्षेत्र के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित कर सकते हैं।

मोराझड़ी हेतु संपर्क सुत्र श्री धरमचंद जी जैन (कोषाध्यक्ष) मो. 9001211430

तीर्थंकर भगवान महावीर

✽ मुनि श्री विश्वयश सागर जी महाराज ✽

महावीर स्वामी विश्व में जाने जाते हैं। जिन्हें इंद्रियों को जीता वह 'जिन' और उनकी उपासना करने वाला जैन कहलाता है। जैन कोई अलग जाति नहीं बल्कि 'जिन' की उपासना करने वाला संप्रदाय है। मुलतः सभी 'जिन' तीर्थंकर क्षत्रिय वर्ण के रहे हैं। आज से 2600 वर्ष पहले भारत की बसुंधरा जब पाप भार से काँप उठी थी जिन लोगों से अपना धर्म गुरु मानती थी। धर्म का अवतार समझती थी। वे अपनी ठोठपता शान्त करने के लिये स्वर्ग राज्य पुत्र धनादि का भोली-भाली जनता का प्रलोभन देकर जनता से हवन कराते और उनमें धर्म के नाम पर बकरी आदि अनेक मूक और निरपराध पशुओं की हिंसा करते थे। ज्ञानहीन जनता उन स्वार्थी धर्म गुरुओं के वचनों को परमात्मा की वाणी समझकर पाप को धर्म समझ बैठी थी। दीन, निर्बल, असहाय पशुओं की करुणाजनक आवाज सुनने वाला कोई ना था। इस समय मांस लोलुप धर्मान्धों का स्वार्थ और जनता का अज्ञान उस पाप कार्य को कर रहा था। उस समय आवश्यकता थी। जन साधारण को ज्ञान का प्रकाश देने की ओर पथभ्रष्ट धर्मान्धों का हृदय बदलने की जिससे भारत का पाप भार हल्का होता और पाप की दुर्गन्ध देश से दूर होती।

उस समय अहिंसा रूपी सूर्य बालक वर्द्धमान के तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने जन्म दिया। महावीर का जन्म ज्ञातवंशीय कुण्डग्राम के शासक सिद्धार्थ के यहां हुआ वर्तमान में यह स्था मुजफ्फरपुर जिले के दीनापुर सब डिवीजन में स्थित बसाढ है। माता त्रिशला के गर्भ में आने के पूर्व ही किसी विशेष महापुरुष के अवतरण का संकेत मिलने पर देवराज इंद्र पृथ्वी पर आकर भगवान का गर्भ महोत्सव मनाता है। नौ मास सात दिन और बारह घंटे व्यतीत होने के उपरान्त चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के शुभ दिन भगवान महावीर ने जन्म लिया। यह समय ईसा से 599 वर्ष पूर्व का था जन्म समय के बाद से ही राजा सिद्धार्थ का यश प्रताप, पराक्रम और अधिक बढ़ने के कारण उनका नाम वर्द्धमान रखा गया। जिस तरह बाहर पदार्थों को जानने की उनकी ज्ञान ज्योति अलोकिक थी उसी तरह उनकी माध्यामिक स्वानुभूति भी अलोकिक थी। ऐसी अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। तीर्थंकर महावीर की असाधारण ज्ञान प्रतिभा को देखने आये संजयंत तथा विजयंत मुनियों की समस्या दर्शन मात्र से समाप्त होने पर उनका नाम सन्मति पड़ा। मदोन्मत्त हाथी को वंश करने पर उनका नाम वीर पड़ा। महाभयानक परीक्षा लेने के लिये सर्प रूप धर कर आये संगम देव के भयानक रूप को देखकर तनिक भी भयभीत न होने से उनका नाम महावीर पड़ा।

वर्द्धमान की सर्वांग सुन्दरता, आसाधारण ज्ञान तथा बल, पराक्रम, तेज, तथा यौवन की विशेषता के कारण अनेक राज्यों से उनकी राजकुमारियों के साथ पाणिग्रहण के लिये प्रस्ताव आये। उनके माता पिता ने कलिंग नरेश जितशत्रु की सुपुत्री यशोधरा के साथ वर्द्धमान का संबंध

तय किया। लेकिन वर्द्धमान की निष्पृहता तथा अखण्ड ब्रम्हवर्च के आगे उन्हें अपना विचार त्यागना पड़ा। अत्यंत तथा अद्भुत राज संपदा के होते हुये भी जल में कमल के समान महावीर मोह माया से अलिप्त तथा अखण्ड ब्रम्हचर्य से सुशोभित होते रहे। एक अन्य मतानुसार कुमार वर्द्धमान की शादी हुई है लेकिन यही मत प्रबल प्राचीन तथा पुष्ट है कि उनकी शादी नहीं हुई। शादी न होना बताकर किसी गहित को झुपाना नहीं बल्कि यथार्थता व्यक्त करना है क्योंकि 24 तीर्थंकरों में से 19 तीर्थंकर के विवाह हुये हैं केवल 5 बाल ब्रह्मचारी रहे हैं।

पूर्वभव के स्मरण उपरान्त महावीर का विचार संसार में धर्म के नाम पर फैला अज्ञान तथा पाप दूर करके आत्मशुद्धि हेतु संगम ग्रहण करने का हुआ तब उनमें वैराग्य की भावना जाग्रत हुई। उसी समय देवों द्वारा दिया गया संबोधन तथा उनके वैराग्य की पुष्टि से उनका वैराग्य और प्रबल और अविचल हो गया और उनका एकान्त वन में जाकर आत्मकल्याण करने का निश्चय हुआ।

अपने वैराग्य की भावना से दुखी सभी लोगों को संतुष्ट करने के उपरान्त बालक वर्द्धमान की वैराग्य भावना को देखकर उन्हें वन में ले जाया गया। वहां वह शिला पर बैठकर कृत्रिम वेशभूषा हटाकर प्राकृतिक स्वतंत्रता नगनत्व भ्रमण वेश को का धारण करते हैं। केशलौच करके अपनी साधना ध्यान में तल्लीन हो जाते हैं। मन को रोककर मौन भाव से अचल मुद्रा में आत्मचिन्तन की स्थिति में उनको मनःपर्यय ज्ञान अर्थात् दूसरे के मनु की बात जानने वाला ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो भविष्य में केवल ज्ञान अर्थात् परमज्ञान जो तीनों लोकों की वस्तुओं की दर्पण में प्रतिबिम्ब के समान स्पष्ट देखता है कि प्राप्ति का सूचक होता है।

महावीर स्वामी ने अनादि समय के कर्म बंधन को जिसमें अनंत शक्तिशाली आत्मा को दीन हीन बलदीन बनाकर संसार में बंदीग्रह में डाल रखा है को करने के लिये अत्यंत कठोर तपस्या की वे कभी एक मास तक लगातार ध्यान लगातार ध्यान लगाकर आत्मसाधना में लीन रहते शीत ऋतु में खुले में ग्रीष्म ऋतु में गर्म स्थान था वर्षा ऋतु में भयंकस वौछार के बीच बैठकर परिग्रहों को सहते हुये एक बार समशान में रात्रीकालीन समय में ध्यान के लिये उचित स्थान समझ कर ध्यान मगन बैठे महावीर पर स्थाण नामक रूध ने बहुत उपसर्ग किये लेकिन वे आत्मध्यान की मुद्रा में तनिक भी विचलित न हुये।

आत्मोन्नती के लिये, आत्मस्वधी प्रगट करने के लिये वीतराग सर्वज्ञ अर्हत जीवन मुक्त परमात्मा बनने के लिये बारह वर्ष पांच मास और 15 दिवस तपश्चार्या करने के अनन्तर धीरे-धीरे कर्मों का छय किया और सर्वग्य वीतराग या अर्हन्त जीवन मुक्त परमात्म पद प्राप्त किया अब वे पूर्ण त्रिकाल ज्ञाता वन गये शुभ समय था वैशाख शुक्ल दशमी के उर्पयानत (तीसरे पहिर में प्रारंभ) का अर्थात् 23 अप्रैल 557 ई. पू.।

केवल ज्ञान ज्योति प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी के इन्द्र द्वारा निर्मित विशिष्ट धर्म सभाओं में लोगों के कल्याण हेतु उपदेश दिया उन्होंने अहिंसा सत्य आचार्य, ब्रह्मचार्य तथा आप परिग्रह आत्मकल्याण के पांच मूल सिद्धांत बताये महावीर स्वामी प्रतिपादित सिद्धांतों की वर्तमान परिवेश में प्रासंगिता निम्न अनुसार है।

1. अहिंसा- इसका तात्पर्य है किसी भी प्राणी को मन वचन काय से दुख न पहुँचाना वर्तमान परिवेश में इसकी सबसे महत्व पूर्ण प्रासंगिकता है प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है यदि व्यक्ति अहिंसा का सच्चे अर्थों में पालन करे तो वर्तमान में निर्मित हिंसा तथा अविश्वास का भय का माहोल खत्म हो सकता है तथा संसार में पुनः सुख तथा शान्ति का साम्राज्य फैल सकता है।

2. सत्य- वस्तु का स्वरूप जैसा देखा है उसे वैसा ही कहना यदि जनता द्वारा पालन होने लगे तो देश में व्याप्त निरंतर बढ़ रही भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, स्वरूप बेईमानी भय का दमन हो सकता है।

3. आचौर्य- किसी भी भूली बड़ी वस्तु को बिना पूछे ना उठाना आचौर्य है यदि इसका सही अर्थ का पालन हो तो निर्मित अविश्वास तथा भय का माहोल समाप्त हो सकता है। तथा सभी सुख-समृद्धि की ओर अग्रसित हो सकते हैं।

4. ब्रह्मचर्य- वर्तमान समय में देश में सबसे ज्यादा इसी सिद्धांत की जरूरत है। इसका अर्थ है कि अपनी स्त्री के अलावा सभी स्त्रियों की अथवा पुरुष को माँ बहन अथवा पिता, भाई की दृष्टि से देखना। वर्तमान में अनियंत्रित शारीरिक संबंधों के कारण जो लाइलाज बिकराल बीमारियाँ बढ़ रही हैं। उनका निदान ब्रह्मचर्य द्वारा ही संभव है।

5. अपरिग्रह- अपरिग्रह से तात्पर्य है। अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना। अर्थिक विषयमता तथा पूंजी के एकीकरण के माहौल में इसकी भी महत्व पूर्ण प्रासंगिकता है। अपरिग्रह समाजवादी व्यवस्था का द्योतक है जिसमें सभी व्यक्ति समान संसाधनों से युक्त सुखमय जीवन यापन करें।

तीर्थंकर महावीर का पावापुरी में निर्माण हुआ। कार्तिकवदी अमावस्या के शुभ दिन उन्होंने संसार के समस्त बंधनों को तोड़कर परम तथा मुक्त अवस्था प्राप्त की। उसी दिन गौतम गणधर जो कि महावीर के समवशरण में दिव्यध्वनि को ग्रहण करने वाले प्रमुख स्रोत थे को केवल ज्ञान लक्ष्मी प्राप्त हुई थी। समस्त भारत में तीर्थंकर महावीर के स्मरण में प्रतिवर्ष कार्तिक वदी अमावस्या को इस दिन दीपावली महापर्वराज प्रचलित है। किसी महापुरुष की जन्म जयंती मनाने से तात्पर्य उस महापुरुष को याद करके उनके गुणों तथा उनकी श्रेष्ठता को याद करें तथा उन्हें जीवन में उतारने की कोशिश करें किसी भी महापुरुष के आदर्शों तथा सिद्धांतों की आवश्यकता केवल संबंधित संप्रदाय ही नहीं संपूर्ण विश्व के लोगों को होती है। संप्रदाय का निर्माण भी विशेष समूह में लोगों द्वारा उन सिद्धांतों को अधिक महत्वता से समझे जाने के कारण ही होता है। भगवान महावीर के सिद्धांतों की आवश्यकता भी आज संपूर्ण राष्ट्र तथा विश्व को है। लोगों का धर्म के प्रति दिखाना तथा अडंबर बढ़ता जा रहा है। विशेष जैन संप्रदाय के बहुत कुछ लोग भी जन्म जयन्ती, निर्वाणोत्सव तो मना लेते हैं लेकिन गुणों से सुशोभित उनके महत्व को ग्रहण नहीं कर रहे हैं। आवश्यकता तथा सिद्धांतों को ग्रहण करने की जिस दिन उस संप्रदाय

विशेष के लोगों द्वारा सिद्धांतों को ग्रहण कर लिया जायेगा। उस दिन से नई राह जन-जन तक पहुँचेगी तथा चरितार्थ होगी। जैन-दर्शन आत्म दर्शन का अदभुत प्रदर्शन है। जिन प्रतिमा का दर्शन एकलक्ष्य के धनुविद्या अभ्यास के समान है। जो कि गुरु की प्रतिमा के सामने अभ्यास करके संपूर्ण विद्या में पारंगत हो गया। या उसी तरह जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के सामने उनकी अवस्था को देखकर सुखमय अवस्था प्राप्ति संसार की दुखमयता से छुटकारा तथा आत्मकल्याण की भावना भाई जाती है। वीतरागी भगवान की प्रतिमा के सामने उस परमसत्ता को नमस्कार करते समय जो भावों की उत्कृष्टता होती है। उससे जो विशुद्धि आती है। अनंतानुबंधी कर्मों की क्षयकर्ता तथा अगाध पुण्य की संचायक होती है। यहां पर पुण्य संचय तथा कर्मक्षय रूढीवादिता नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण है अर्थात् परम आत्मसत्ता के प्रति समर्पण तथा आदर के भाव से भावों की पवित्रता इतनी बढ़ती है। कि उस समय जो अशुभ घटनायें घटित होती हैं। वह हमारी पवित्रता के आगे नहीं घट पाती तथा भविष्य के कार्य में शुभ फल के प्राप्ति होती है। यह सूक्ष्म वैज्ञानिक परमाण्विक तथ्य है। भगवान के सम्मुख लोगों का रूझान विभिन्न प्रकार के कार्यों का पूर्ति के साथ प्रतिष्ठित प्रतिमा में इतना अतिशय उत्पन्न हो जाता है। कि व्यक्ति की मनोकामना जो की भगवान पर श्रद्धा करके की जाती है। यह समस्त अतिशय भगवान के सम्मुख उपस्थित श्रद्धावत देवताओं द्वारा किये जाते हैं।

सत् साहित्य का महत्व होता है। कि वह पाठक के मन में संपूर्ण अवधारणा निर्मित कर देता है। वर्तमान में शिक्षा मण्डल द्वारा छोटी-छोटी तथा अपूर्ण किसी धर्म अथवा संप्रदाय के बारे में इतिहास के रूप देकर बालक के मन में उसकी महत्वता कम करने उसके प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण रख पाने तथा उस धर्म, संप्रदाय के वास्तविक इतिहास को नकारने का काम हो रहा है। जिसमें किसी धर्म के अच्छे होने पर भी लोगों का उसके प्रति संकीर्ण तथा अपेक्षाकृत दृष्टिकोण बन जाता है। इतिहास में जैन धर्म का प्रवर्तक भगवान महावीर को बताया गया है। जब कि जैन धर्म अनादी निधन है। तथा उसकी संप्रदाय के रूप में सही व्याख्या ऊपर की जा सकती है। फिर भी युग के आदि में तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा तीर्थ का प्रवर्तक किया गया था। अतः उन्हें जैन धर्म का प्रवर्तक कहा जा सकता है। जैन धर्म में इस वर्तमान काल के 24 तीर्थ कहे गये हैं। तीर्थंकर से तात्पर्य है तीर्थ का प्रवर्तन अर्थात् फैलाने वाला। यह एक विशेष अनोखी बात है कि जैन संप्रदाय में जितने भगवान पुज्यनीय है उतने ही राम हनुमान जी आदि कुछ अनेक महापुरुष भी। जैन सिद्धत्व को प्राप्त हुये हैं। सिद्धत्व अर्थात् संसार के समस्त दुःखों से मुक्त अवस्था अतः विभिन्न संप्रदाय वादी व्यक्ति तेरा मेरा तथा ऐसा वैसा भी मूढ़ता को त्यागकर सच्चे आत्म स्वरूप की प्राप्ति की ओर अग्रसित हो। महावीर जयंती के पावन अवसर पर सभी देशवादी उनके सर्वोदयी सिद्धांतों को ग्रहण कर आत्मकल्याण अथवा सच्चे सुख की प्राप्ति हेतु हमेशा जीवन में उतार रखे। तथा महावीर बनने की कोशिश करें।

बोलो महावीर भगवान की जय.....वर्द्धमान से महावीर.....



अध्यात्म रत्न : समाधि तंत्र

जीव तत्त्व के तीन रूप बहिरात्मा अंतरात्मा परमात्मा को विवेचित करने वाला 105 श्लोकों का श्रेष्ठतम ग्रंथ समाधितंत्र है। अध्यात्म के साधक को परमात्म बनने का पथ प्रदर्शित करते हुये इस ग्रंथ में कहा गया है कि सर्वप्रथम बहिरात्मपने को त्याज्य मान छोड़ दें और अंतरात्मा बन जायें फिर क्या है आप परमात्म अवश्य बन जायेंगे आचार्य पूज्यपाद ने जहाँ सर्वार्थ सिद्धि, इष्टोपदेश, दश भक्ति संग्रह सिद्ध रसायन, जैनेन्द्र व्याकरण की रचना हीं वहीं प्रस्तुत ग्रंथ का सृजन भी किया है।

आचार्य पूज्यपाद जी ने समाधितंत्र ग्रंथ में मंगलाचरण करते हुये सिद्ध परमात्मा को नमस्कार किया है। अक्षय अनंत ज्ञान आत्म स्वरूप को परमात्मा का रूप माना है। जिसके द्वारा स्व आत्मा, आत्म रूप का बोध होता है, पर-अपर का ज्ञान होता है, वे परमात्मा है। अरिहंत परमात्मा को मंगलाचरण का विषय बनाते हुये आचार्य पूज्यपाद ने कहा है कि तीर्थंकर होते हुये जो इच्छा रहित हैं, नहीं बोलते हुये भी वाणी रूपी विभूति को प्राप्त होते हैं। विष्णु शिव सुगत जिन के लिये नमस्कार किया है।

ग्रंथ प्रारंभ की प्रतिज्ञा के बाद आत्मा तीन प्रकार के बताये हैं अंतरात्मा बहिरात्मा परमात्मा के लक्षण बाद परमात्मा के पर्यायवाची शब्द बताये हैं। बहिरात्मा की मान्यता तथा एकत्व अध्यवसाय को अज्ञान घोषित किया है संयोग वियोग का कारण बताने के साथ 8 श्लोकों में बहिरात्मा का विवेचन किया है।

अंतरात्मा का विवेचन श्लोक 16 से 27 श्लोक तक किया है अंतरात्मा की बाह्य प्रवृत्ति से उदासीनता स्व में आत्मत्व बुद्धि वचन से निवृत्ति दान आदान पूर्व जीवन पश्चाताप चेष्टाओं से निवृत्ति स्वसंवेदन ही आत्मानुभूति से रागादि नष्ट होता ज्ञानी के आत्मानुभव स्वसंवेदन ही आत्मानुभूति है शत्रु मित्र की कल्पना मिथ्या है।

परमात्मा स्वरूप, परमात्म पद का कारण, भय अभय स्थान में विपरित मान्यता, आत्मा ही परमात्मा है, निर्विकल्प अनुभूति में उपास्य उपासक भाव का अभाव, संयम के बिना आत्मानुभूति नहीं, आत्मज्ञान के बिना तप की व्यर्थता, आत्मज्ञानी तप से दुखी नहीं होता है, समाधि में ही आत्मानुभव सविकल्प अवस्था हेय और निर्विकल्प अवस्था उपदेय होती है। अस्थिरता का कारण अज्ञान, मान, अपमान कल्पना का भ्रम होता है। आत्म भावना से रागद्वेष का नाश होता है, शरीर से प्रेम हटाने के उपाय प्रस्तुत ग्रंथ में बताये गये हैं।

तप की सार्थकता आत्मज्ञान से होती है ज्ञानी और अज्ञानी के तप में अंतर होता है अज्ञानी बंधता है ज्ञानी मुक्त होता है। अज्ञानी ज्ञानी में अंतर स्पष्ट किया गया है मात्र आत्म ज्ञान भी कार्यकारी नहीं कहा है। ज्ञानी वहीं है जिसके माध्यस्थ भाव हो ज्ञानी का निष्काम कर्मयोग होता है। ज्ञानी की दृष्टि में ग्राह्य अग्राह्य कुछ अलग ही होता है। अज्ञानी ज्ञानी के विश्वास स्थान अलग होने पर चर्चा की गई है ज्ञानी की दृष्टि, सुख दुख, ज्ञानी का व्यापार अज्ञानी का व्यापार विषयभोग निरर्थक होते हैं।

अज्ञानी जीव की पहचान दुख अवस्था आत्म ज्ञान अभाव हीं अज्ञानी है। अज्ञानी और मेरा ज्ञानी की रूचि संसार मोक्ष के कारण शरीर पुष्टि भ्रम है। ज्ञानी समभावी होता है। अज्ञानी शरीर को ही अपना मानता है। अज्ञानी के मरण भय है, ज्ञानी के मरण भय नहीं होता है। निर्विकल्प योगी आत्मा में वास करता है। मोक्ष का कारण भेद विज्ञान है। मोक्ष के लिये पाप-पुण्य दोनों हेय हैं। दुख का कारण विकल्प है। पुण्य पाप शुभ अशुभ त्यागने का क्रम होता है।

बाह्य लिंग को मुक्ति कारण नहीं बताया है। धर्म पंथ का आग्रह विशिष्ट जाति मोक्ष का

स्वरूप नहीं होते हैं।

आत्म ज्ञान और श्रद्धा से ही चित्त में स्थिरता आती है। परमात्मा की उपासना के लिये वार्तिका और वृक्ष के दृष्टांत दिये गये हैं। मुक्ति के बाद कोई संसार में नहीं लौटता है। मोक्ष योग साध्य है। शरीर के नाश से ज्ञानी दुखी नहीं होता है ज्ञानी उपसर्ग सहन करने का अभ्यास करता है। ज्ञानी का योग विशिष्ट होता है इन विषयों का स्पष्ट विवेचन प्रस्तुत ग्रंथ में उपलब्ध होता है।

यह ग्रंथ अध्यात्म का अद्वितीय ग्रंथ है जो भी इस ग्रंथ का अभ्यास करेगा वह ज्ञानी जरूर होगा।

कविता

हे वीरा तेरे वन्दे हम

* रचयिता - सुभाषचंद्र सरल (अशोकनगर) *

हे वीरा तेरे वन्दे हम नैतिक हों हमारे करम

पापों से डरें, नहीं गलती करें

पालें हम, अहिंसा धर्म।

हे वीरा.....

पशु हत्याओं का दौर है उनकी चीखों का ही शोर है

कुछ होवे यतन, भागें संकट के क्षण,

प्रभु ऐसा दिखाओं करम।

हे वीरा.....

भ्रष्टाचार चरम पा रहा अनाचार चहुँदिश छा रहा

फिर भी शांति जगायें,

तेरे दर्शन हम पायें जन जन में जगे, जिन धरम

हे वीरा.....

न्याय का अब नहीं राज है अन्यायी बन रहे जात हैं

फिर भी धैर्य धरें, नहीं ग्लानि करें

जीवन में जगे, सत् धरम।

हे वीरा.....



समस्या पूर्ति प्रतियोगिता मार्च 2019 तेरे पूजन को भगवान

प्रथम-

वीतराग सर्वज्ञ हितकर,
आप प्रभु मेरे भगवान
आप, आप में लीन रहें
करते निज का अनुपम ध्यान
जो भी भक्ति करे आपकी
मिट जाते सारे व्यवधान
करूँ समर्पण तन मन प्रभुवर
तेरे पूजन को भगवान
श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)
द्वितीय-
जगत पूज्य प्रभुवर तुमने

कर्म शत्रु को जीत लिया
मिथ्यामद अहंकार तज
काम क्रोध को जीत लिया
हे जिनवर तव चरणों में
निशदिन मेरा रहे ध्यान
देहालय में विराजमान कर लूँ
तेरे पूजन को भगवान
पल्लवी जैन (बासौदा)
तृतीय-
मनोज्ञ हो सर्वज्ञ हो गुरुदेव तुम
चरण में हो शुभ ध्यान
प्रार्थना स्वीकार हो
तेरे पूजन को भगवान
श्रीमति रूचि जैन (सागर)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
फरवरी 2019 के विजेता

प्रथम : श्रीमति इन्द्रा जैन (इन्दौर)
द्वितीय : श्रीमति अभिलाषा जैन (अहमदाबाद)
तृतीय : श्रीमति रजनी जैन (माडलवस्ती दिल्ली)

वर्ग पहेली क्र. 238
फरवरी 2019 के विजेता

प्रथम : सौ. सरला रमेश कस्तुरे (चंद्रपुर)
द्वितीय : श्रीमति शशीप्रभा जैन (इन्दौर)
तृतीय : इन्दु बड़जात्या (बाकानेर धार)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : मार्च 2019 का हल

- | | | |
|---------------|-----------------|----------------------------------|
| 01. विवेक | 18. करणलब्धि | 35. परिभाषा |
| 02. संयम | 19. साधन | 36. शास्त्रों |
| 03. चरण | 20. आचरण | 37. विचारों |
| 04. ध्यान | 21. उपसर्ग | 38. सिद्धांत |
| 05. घातक | 22. उपादान | 39. सत्य |
| 06. ज्ञान | 23. हित | 40. भीतर |
| 07. बुद्धि | 24. कल्याण | 41. पं. रतनलाल जी इन्दौर |
| 08. विशुद्धि | 25. मुक्ति | 42. ब्र. सुदेश कोठिया इन्दौर |
| 09. विवेक | 26. समिति | 43. सिद्धोपासक |
| 10. शोध | 27. सर्वज्ञ | 44. गुरुपासक |
| 11. अनुभूति | 28. अंश | 45. श्रुतोपासक |
| 12. अध्यात्म | 29. सिद्धांत | 46. श्री. डी.के. जैन इन्दौर |
| 13. मद | 30. निर्मलता | 47. श्री भागचंद जी भास्कर नागपुर |
| 14. ज्ञान | 31. उपयोग | 48. 23 लाख |
| 15. स्वाध्याय | 32. महत्त्व | 49. वालाकोट परिवार |
| 16. जीतने | 33. आत्मोपलब्धि | 50. पंचबालयति मंदिर इन्दौर में |
| 17. ज्ञानी | 34. भावविद् | |



पुराण प्रेरणा

पतन का प्रभाव 'तम'

तमः पतनकाले हि प्रभवत्यपि भास्वतः।
आचार्य कहते हैं कि देखो राजा सुमुख यश
से प्रकाशमान था तथा लोक-व्यवहार का
ज्ञाता था फिर भी अत्यंत मोह को प्राप्त हो
गया सो ठीक ही है क्योंकि सूर्य के पतन का
जब समय आता है तब अन्धकार की
प्रबलता हो ही जाती है।

पापोपशमनोपायाः सन्त्येव सति
जीविते ॥

इसलिये अकार्य में प्रवृत्त होने पर भी मैं
तुम्हारे द्वारा रोकने योग्य नहीं हूँ यदि जीवन
रहा तो पाप को शांत करने के बहुत से उपाय
हो जावेंगे।

अत्यभ्यर्णविपत्तीनां मन्त्रिणो हि
निर्वतकाः।

यद्यपि राजा का वह वचन अन्याय रूप था
तथा मन्त्री ने उसे मान लिया सो ठीक ही है
क्योंकि मन्त्री अत्यंत निकटवर्ती आपत्तियों
को ही दूर करते हैं।

षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रो रक्षणीयः स
यत्नतः।

दूतों के यह कहते ही उसके मुख से गरम
गरम साँसें निकलने लगीं जिनसे उसका
अधर पल्लव मुरझा गया तदनन्तर दूतों के
कई वार प्रार्थना करने पर उसने बड़े दुःख से
यह वचन कहे कि हे माँ ! तुझे छोड़कर इस
विषय में मेरा कोई विश्वास पात्र नहीं है।
चूंकि छह कानों में पहुंचा।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ल् प् आ अ अच् इ र त्र श्री
2. अ र् आ अ न य् क् उ म् अच् इ र त्र ध
3. अ र् अ अ ण् ई क् उ म् अच् इ र त्र श्रे
4. अ अ व् न् ध् र् अ अच् इ र त्र जी
5. म् अ द् य् अ म् न् क् उ आ र् अच् इ र त्र प्र

परिणाम :

मार्च 2019: (1) संस्कार सागर (2) सन्मति वाणी
(3) अर्हत वचन (4) तीर्थकर (5) जैन गजट

आंतरिक सज्जा से कमायें धन

करियर



इंटीरियर डिजाइनिंग (आंतरिक साज-सज्जा) के अंतर्गत स्थान की प्लानिंग की जाती है तथा अंदरूनी जगह की सजावट की जाती है। चाहे फिर वह घर हो, दफ्तर, होटल, सरकारी भवन, या शोरूम जैसे वाणिज्यिक संस्थान हो इंटीरियर डिजाइनिंग के अंतर्गत योजना, डिजाइन, निर्माण, पुनर्निर्माण, पुनरुद्धार और सज्जा सभी कुछ शामिल है। इंटीरियर डिजाइनिंग का कार्य करने वाले को इंटीरियर डिजाइनर कहते हैं। इंटीरियर डिजाइनर जहां एक ओर किसी स्थान की साज सज्जा करता है, उसे सुन्दर बनाता है। ऐसे सरीज जोड़ता है वहीं दूसरी ओर वाल्यूम का ध्यान रखकर जगह प्लान करता है। करियर के लिहाज से वर्तमान में इंटीरियर डिजाइनिंग के विशेषज्ञों की बाजार में भारी मांग बनी हुई है।

कहां है अवसर: पहले कभी डिजाइनिंग का काम सिर्फ बड़े-बड़े व्यावसायिक संस्थानों, होटलों, क्लबों आदि में ही इंटीरियर डिजाइनर्स का उपयोग किया जाता था। कॉर्पोरेट्स ने इस क्षेत्र में और भी रोजगार के अवसरों में इजाफा किया। हाल के कुछ सालों में घरों में इंटीरियर डिजाइनिंग के ट्रेंड ने जोड़ पकड़ा है। इस लिहाज से इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनायें निकल आई हैं।

इसके अलावा फ्रीलांसिंग कंसल्टेंसी का काम होने की वजह से इस क्षेत्र में काम का दायरा बहुत विस्तृत हो जाता है। ज्यादातर इंटीरियर डिजाइनर किसी न किसी विशिष्ट क्षेत्र-के विशेषज्ञ होते हैं जैसे कुछ अपनी विशेषज्ञता बिजनेस डिजाइन में प्रदर्शित करते हैं तो कुछ किसी विशेष कक्ष जैसे ड्राइंग रूम, बेडरूम, किचन, किड्स होते हैं। इसमें दीवारों फर्शों छतों की पसंद तथा सज्जा, फर्नीचर और अन्य अंदरूनी सामग्रियों की जमावट, विंडों ट्रीटमेंट, लाइटिंग, विजुअल और साउंड इफेक्ट पर नियंत्रण आदि शामिल है।

इंटीरियर डिजाइनर बनने हेतु कलात्मकता प्रबंधकीय कला एवं तकनीकी पारस्परिकता का मेल होना जरूरी है। क्योंकि इंटीरियर डिजाइनर को अपने विचारों तथा आवश्यकताओं से ग्राहकों को अवगत कराना होता है। साथ ही बिल्डर्स प्लंबर और इलेक्ट्रिशियन आदि से भी सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है।

इंटीरियर डिजाइनिंग के विभिन्न कोर्सेस में प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता बारहवीं कक्षा का उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इंटीरियर डिजाइनिंग में कोरियर बनाने के लिये आर्किटेक्चर में पांच वर्षीय डिग्री कोर्स सबसे बेहतर विकल्प है। इंटीरियर डिजाइनिंग का कोर्स कराने वाले प्रमुख संस्थान

- * देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
- * राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भोपाल
- * एस आर शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज सागर
- * शासकीय महिला पॉलीटेक्निक कॉलेज भोपाल
- * शासकीय महिला पॉलीटेक्निक कॉलेज ग्वालियर
- * नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन पालड़ी अहमदाबाद
- * जे जे स्कूल ऑफ आर्ट्स डॉ. डी.एन.रोड फोर्ट मुम्बई
- * सोफिया कॉलेज, बीके सोमानी पॉलीटेक्निक भूलाभाई देसाई रोड, मुम्बई
- * द स्कूल ऑफ इंटीरियर डिजाइन, यूनिवर्सिटी रोड, अहमदाबाद
- * एस-एन-डीटी वूमन यूनिवर्सिटी नाथीबाई ठाकरसे रोड मुम्बई
- * एपीजे इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन 549 तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया, महारौली बंदरपुर रोड, नई दिल्ली
- * इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन (आई एन आई एफ डी) भिलाई छत्तीसगढ़
- * एन आई एफ डी कैम्पस 2-बी मध्यमार्ग सेक्टर 27 चंडीगढ़

दुनिया भर की बातें



■ 1 फरवरी

- बेंगलुरु: मिराज 2000 प्रशिक्षण विमान दुर्घटना ग्रस्त हुये दोनों पायलटों की मौत हुई उनकी पहचान सिद्धार्थनेगी और समीर अब्रोल के रूप में हुई।

- लोकसभा में कार्यवाहक वित्त मंत्री पीयूष गोयल ने वजट पेश किया।

- जयपुर सांगानेर रेलवे स्टेशन के पास दयोदय एक्सप्रेस का इंजन एवं दो बोगी पटरी से उतरी पायलट घायल हुये।

■ 2 फरवरी

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उत्तर 24 परगना जिले की सभा में भारी भीड़ जुटी भगदड़ की स्थिति बनी।

- ऋषि कुमार शुक्ला सी.बी.आई के निदेशक बने।

- सेना के आधुनिकीकरण की बड़ा कदम उठाते हुये अमेरिका 73000 आसॉल्ट राइफलों की खरीद के लिये रक्षा मंत्रालय ने स्वीकृति दी।

■ 3 फरवरी

- कोलकाता: शाम केन्द्र और राज्य सरकार के बीच टकराव हुआ शारदा

चिटफंड घोटाले मामले में जाँच करने पहुँचे सीबीआई अफसरों को पुलिस ने हिरासत में लिया।

- भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड को 5 क्रिकेट मैच को वनडे सीरीज को 4-1 से अपने नाम किया।

- नेपाल में मासिक धर्म कुरीति के कारण पर्वती वोगाती की जान गई अकेले झोपड़ी में सो रही थीं धुँआ भरने से मौत हुई।

■ 4 फरवरी

- प्रयागराज में शाही स्नान के दिन अब तक के सभी रिकार्ड टूटे 5 करोड़ लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई।

- बैंक से करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी करने वाले विजय माल्या को भारत लाने की उम्मीद बढ़ी ब्रिटेन के गृहमंत्री ने प्रत्यार्पण पर हस्ताक्षर किये।

- दिमनी (मुरैना): थाने के लॉकअप में रघुराज सिंह तोमर ने आत्मघात किया संदिग्ध हालत में फंदे पर शव मिला।

■ 5 फरवरी

- सुप्रीम कोर्ट ने कोलकाता के पुलिस आयुक्त राजीव कुमार को शिलांग में सीबीआई को सामने पेश होने को कहा।

- अपनी विभिन्न माँगों को लेकर अनशन पर बैठे समाजसेवी अन्न हजारे को मनाने महाराष्ट्र मुख्यमंत्री पहुँचे तब वे माने।

- लखनऊ विधानसभा में हंगामा हुआ सपा काँग्रेस और बसपा के विधायकों ने राज्यपाल पर कागल के गोले फेंके।

■ 6 फरवरी

- खंडवा : गैर कानून रूप से गो वध करने पर रासुका के तहत रासुका में नदीम

शकील को जेल भेजा।

लंदन की बेनामी सम्पत्ति को लेकर रोबार्ट बाड्रा से ईडी ने पूछताछ की।

- इस्लामाबाद: पाकिस्तान के सिंध प्रांत में एक हिन्दू मंदिर की तोड़ फोड़ की गई अराजक तत्वों ने मूर्ति व ग्रंथों को जलाया।

■ 7 फरवरी

- कांग्रेस ने वादा किया कि यदि सत्ता में आये तो तीन तलाक कानून समाप्त कर देंगे।

माँसाहार के चलते 150 पशुओं की प्रजातियाँ खतरे में है। यह तथ्य के जर्वेश लटर्स जर्नल में प्रकाशित हुआ।

■ 8 फरवरी

- उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में जहरीली शराब पीने से 48 लोगों की मौत हुई सहरानपुर में 24, कुश नगर में 10 लोग मरे, 14 उत्तराखंड के हरीद्वार के बालपुर बिन्दू भगवनपुर में मरे।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा मायावती ने पार्टी के चिन्ह हाथी की प्रतिमायें जनता के धन से बनवाई मायावती अपनी जेब से पैसा लौटाये

- पूर्व मंत्री रामकृष्ण कुसमरिया ने कांग्रेस की सदस्यता ली।

■ 9 फरवरी

- कोलकाता पुलिस आयुक्त राजीव कुमार से सीबीआई 8 घंटे तक पूछताछ शिलांग में की।

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अखबार और टीवी में कुंभ में स्नान करती महिलाओं के फोटो दिखाने पर रोक लगाई।

- ग्वालियर : हाईकोर्ट मीसा बंदियों की याचिका खारिज की।

■ 10 फरवरी

- हिन्दी को लेकर आबू धाबी में ऐतिहासिक फैसला हुआ हिन्दी कोर्ट की तीसरी अधिकारिक भाषा बनी।

- सुरक्षा बलों ने जम्मू कश्मीर के कुलगाम में 5 आतंकी ढेर किये।

- जयपुर : गुजरात ने 5% आरक्षण की माँग लेकर हुआ आंदोलन हिंसक हुआ।

■ 11 फरवरी

- देश की सबसे तेज ट्रेन वन्दे भारत एक्सप्रेस दिल्ली-वाराणसी प्रारम्भ हुई।

- नागरिकता संशोधन विधेयक के विरोध में नागलैंड बंद से जनजीवन अस्त व्यस्त रहा।

- नेपाल में हशीश के साथ मोहम्मद शकील और मोहम्मद विशाल पकड़े गये दोनों भारतीय है।

■ 12 फरवरी

- दिल्ली के करोलवाग स्थित अपिर्त प्लेस होटल में आग लगने से 17 लोगों की मौत हुई 35 घायल।

- इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र संघ के शपथ ग्रहण समारोह में अखिलेश यादव को रोके पर सपाईयों ने बबाल खड़ा किया। सांसद धमेन्द्र यादव घायल हुये।

- सीबीआई के पूर्व अंतरिक्ष निदेशक राव नागेश्वर को विधिक सलाहकर अब मानना मामले में सुप्रीम कोर्ट ने दिनभर कोर्ट के कोने में बैठने की सजा दी।

■ 13 फरवरी

- संसद में कैग की रिपोर्ट पेश की गई जिसमें राफेल सौदे को 2.86 सस्ता बताया।

- म.प्र. के पूर्व विधायक महेन्द्र सिंह बुंदेला का निधन हुआ।

- जम्मू-कश्मीर के बड़गाम में दो आतंकी ढेर हुये।

■ 14 फरवरी

- जम्मू-कश्मीर के अवन्तीपुर के पास आत्मघाती हमला हुआ जिसमें 44 जवान शहीद हुआ।

- नरसिंहपुर : गोटेगांव में कांग्रेस नेता सुरेन्द्र राय पर अज्ञात लोगों ने गोली चलाई उनकी मौत हुई।

■ 15 फरवरी

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सेना को अपने तरीके से बदला लेने को कहा पुलवामा आतंकी हमले से पूरे देश में रोष रहा।

- म.प्र गठन के बाद पहली बार जबलपुर में कैबिनेट बैठक हुई।

- वैज्ञानिकों को कैसर रोकथाम में सफलता मिली एक ऐसे मोलेक्यूल की पहचान हुई जो कैसर रोक सकता है।

■ 16 फरवरी

- एल.ओ. सी के राजौरी सेक्टर पर मेजर चित्रेश बिष्ट दूसरी आई.ई.डी निष्क्रिय करते समय शहीद हुये।

- जिम्बाब्वे के हारे में बंद दो सोने की पूर्वदानों में 60 अवैध खनकों की मौत पानी भरने से हुई।

- शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती को आई.सी. यू में भर्ती कराया गया वे अयोध्या कूच करने वाले थे।

■ 17 फरवरी

- श्रीनगर : पुलवामा हमले के बाद आई.एस.आई से रिस्ते पर 6 अलगाव वादियों की सुरक्षा छीनी

-पेटलावाद के किसानों ने टमाटर पाकिस्तान नहीं भेजना का फैसला लिया।

- नदियों प्रदूषण की रोकथाम नहीं करने पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने तमिलनाडु पर 100 करोड़ जुर्माना लगाया।

■ 18 फरवरी

- जैश के टॉप आतंकी कामरान उर्फ गाजी दो साथियों सहित ढेर हुआ।

- सरदार वल्लभ भाई पटेल के मूर्ती कार राम सुतार को राष्ट्रपति रामनाथ काविंद ने टैगोर सम्मान से नवाजा।

- शहीद मेजर चित्रेश बिष्ट की अंतिम विदाई हरिद्वार में दी गई।

■ 19 फरवरी

- बैंगलुरु: सूर्य किरण टीम के दो विमान आपस में टकराये पायलेट साहिल गाँधी मारे गये।

- पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने कहा कि हम भारत से आतंकवाद बातचीत करने को तैयार है।

- पटना हाईकोर्ट ने अपने अहम-फैसले में कहा कि पूर्व मुख्य मंत्रियों को बंगले देना असंवैधानिक है।

■ 20 फरवरी

- सुप्रीम कोर्ट ने अनिल अम्बानी को अब मानन का दोषी माना 453 करोड़ चुकाने का आदेश दिया या जेल भेजने को कहा।

- दीपक सक्सेना ने सी एम कमलनाथ के लिये अपनी सीट छोड़ी विधायक पद से इस्तीफा दिया।

- हिन्दी प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह निधन कल हुआ वे 93वें वर्ष के थे।

■ 21 फरवरी

- ढाका की इमारतों में आग लगने से

81 लोग मरे

- प्रसिद्ध फिल्मकार राजकुमार बड़जात्या (राजश्री पिक्चर्स) का निधन हुआ।

- सुप्रीम कोर्ट ने सेवा निवृत्त जज डी.के. जैन को बी.सी.सी.आई का लोकपाल नियुक्त किया।

■ 22 फरवरी

- चीन के अडंगे के बाद भी संयुक्त राष्ट्र में पुलवामा हमले के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव पारित हुआ।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सिथोल शांति पुरस्कार से नवाजा गया।

- असम के गोलघाट जिले में जहरीली शराब पीने से 22 लोग मरे 30 बीमार हुये।

■ 23 फरवरी

- अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा भारत पुलवामा पर बड़ा एक्शन लेगा।

- श्री गंगा नगर सीमा के पास पाक के द्वारा किसानों पर फायरिंग हुई।

- एयर इंडिया के मुम्बई नियंत्रण केन्द्र पर विमान अपहरण की धमकी दी गई।

- बैंगलुरु: एयर इंडिया शो की पार्किंग में आग से 300 कारें जली।

■ 24 फरवरी

- चित्रकूट: ब्रजेश रावत के जुडवा बेटों का अपहरण कर 20 लाख फिरोती ली फिर भी मार डाला।

- सऊदी अरब ने पहली बार शहजादी सीमा बिन सुल्तान को अमेरिका का राजदूत बनाया।

- फ्रोसिस ने बच्चों को यौन शोषण की तुलना नरबलि से की।

■ 25 फरवरी

- पाक के प्रधानमंत्री इमरान खान ने

एक मौका भारत से शांति के लिये मांगा।

- ढाका : बांग्लादेशी विमान अपहरण के प्रयास करने वाले मारे गये पोलाश महमद के पास खिलौना की गन निकली

■ 26 फरवरी

- भारत ने आतंकी 13 ठिकानों पर हवाई हमले किये 12 मिराजों ने 21 मिनट 350 से अधिक आतंकी मारे।

- सर्वदलीय बैठक में सभी ने एयर स्ट्राइक आपरेशन के लिये सेना को बधाई दी।

- भारत की एयर स्ट्राइक से पाकिस्तान की संस में इमरान खान के विरुद्ध शोम शोम के नारे लगे।

■ 27 फरवरी

- पाकिस्तान ने भारत के सैन्य ठिकानों पर हमला करने की कोशिश की जवाब में भारत ने लड़ाकू विमान गिराया पाक को खदेड़ते हुये भारत का क़ैश हुआ भारत के

- पायलट अभिनंदन वर्धमान जैन को पाक ने गिरफ्तार किया। भारत ने विंग कमांडर को पाक से वापिस माँगा।

- जम्मू कश्मीर के बडगाम में हैलीकाप्टर क़ेश होने 6 जवान शहीद हुये।

■ 28 फरवरी

- पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने विंग कमांडर अभिनंदन को छोड़ने का ऐलान किया।

- पुलवामा हमले की जिम्मेदारी लेने वाला जैश मोहम्मद के चीफ मसूद अजहर पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव सुरक्षा परिषद में फ्रांस अमेरिका और ब्रिटेन ने पेश किया।

- अटारी बार्डर पर 32..... सोने के साथ अफगानिस्तान के आदित्य का कस्टम ने पकड़ा।

कविता

महावीर की जय जयकार

* कृष्णचन्द्र टवाणी (राजस्थान) *



आओ सब मिलकर महावीर की जय जयकार करें।
उनकी शिक्षाओं को हम जीवन में अंगीकार करें ॥

राजाओं के राजेन्द्र थे, शांति दूत महावीर जी।
प्रेम पीयूष पिलाकर किया जगत कल्याणक जी ॥
अंतर का सब मैल मिटाकर निर्विकार सबको करें।
उनकी शिक्षाओं को हम जीवन में अंगीकार करें ॥
आओ सब मिलकर महावीर की जय जयकार करें ॥1॥

कथनी करनी एक जब महापुरुषों की होती।
तभी चमकता धवल वस्त्र में संयम का ये मोती ॥
मन संकल्प सुदृढ़ हो तो महावीर उपकार करें।
उनकी शिक्षाओं को हम जीवन में अंगीकार करें ॥
आओ सब मिलकर महावीर की जय जयकार करें ॥2॥

सत्य अहिंसा दया भाव का पाठ जगत को पढ़ाया।
मंत्र जीओ और जीने दो का महावीर ने बतलाया ॥
मैत्री भाव का अर्थ जगत के सब जीवों से प्यार करें।
उनकी शिक्षाओं को हम जीवन में अंगीकार करें ॥
आओ सब मिलकर महावीर की जय जयकार करें ॥3॥

सम्यक दर्शन अपनाकर ज्ञान की ज्योति जगाना।
बाहर के मत भेद के संग मन के भेद मिटाना ॥
कृष्ण कहता महावीर वही जो जग का उपकार करें।
आओ सब मिल महावीर को नमस्कार करें ॥
आओ सब मिलकर महावीर की जय जयकार करें ॥4॥

इसे भी जानिये

भारत के अंतरिक्ष अभियान

1962 परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा अंतरिक्ष अनुसंधान के लिये भारतीय समिति की स्थापना :
 1965 थुम्बा में अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना :
 1967 अहमदाबाद में उपग्रह दूर-संचार भू-केन्द्र की स्थापना :
 1968 तिरुवनन्तपुरम के पास थुम्बा भूमध्यीय रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र (टर्ल्स) 2 फरवरी 1968 को इसे संयुक्त राष्ट्र संघ को समर्पित किया गया।
 1969 भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) 15 अगस्त, 1969 को इसकी स्थापना परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन की गई थी।
 1972 अन्तरिक्ष विभाग एवं अंतरिक्ष आयोग का गठन, पृथ्वी के संसाधनों के सर्वेक्षण के लिये एयरबोर्न दूरसंवेदी प्रयोगों की शुरुआत:
 1975 भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन स्वायत्त निकाय के स्थान पर एक सरकारी संगठन बना।
 1984 भारतीय-सेवियत मानवयुक्त अन्तरिक्ष मिशन
 1997 भारतीय मूल की अमरीकी नागरिक कल्पना चावला नासा अन्तरिक्ष मिशन पर अन्तरिक्ष में।
 2003 भारतीय मूल की अमरीकी नागरिक कल्पना जनवरी/फरवरी में कोलम्बिया यान द्वारा अंतरिक्ष मिशन पर जिसमें उनकी मृत्यु भी हो गई।
 2005 श्री हरिकोटा में उपग्रह प्रक्षेपण केन्द्र 5 मई 2005 से कार्य करने लगा है 4 मई 2005 को राष्ट्रपति ने इसे राष्ट्र को समर्पित किया।
 2008 चन्द्रमा के लिये भारत का पहला मिशन चन्द्रयान-(I) का श्री हरिकोटा से 22 अक्टूबर 2008 को सफल प्रक्षेपण

कविता

दुनिया का दस्तूर

सोच रहे हम क्या इस दुनिया का यही दस्तूर है
 जिसका साथ निभाना चाहा वह हमसे क्यों दूर है
 मात- पिता परिवार जगत सब, रूठा-रूठा सा लगता
 जिसके पीछे दौड़ रहा हैं, वो मुझसे बाहर रहता
 एक अकेला जी सकता हूँ, यह भी तो मंजूर है-2
 उखड़े उखड़े बिखरे-बिखरे रिस्ते क्या जुड़ पाते
 नाज-साज टूट तमूरे क्या फिर से बज पाते-2
 प्रेम धागे टूट ही जाते, कुदरत कितनी क्रूर है-2
 देह-नेह से पतन ही होता, विषय वासना जगती है
 आतम की अनुभूति से तो मोह अंधियारी छटती है
 आतम संगीत सुनो तो, कभी न मंजिल दूर-2

दिशा बोध
सत्य क्या है

- प्रश्न 1. जड़ता क्या है ?
 उत्तर चतुर निपुण होते हुये भी अभ्यास नहीं करना जड़ता है।
- प्रश्न 2. कौन जाग्रत है ?
 उत्तर विवेकी पुरुष ही जाग्रत है।
- प्रश्न 3. निद्रा क्या है ?
 उत्तर प्राणी की मूढ़ता ही निद्रा है।
- प्रश्न 4. कमल के पत्ते पर गिरी बूँद के समान क्षण भंगुर क्या है ?
 उत्तर धन जवानी आयु क्षण भंगुर है।
- प्रश्न 5. चन्द्रमा की किरण के समान अनुकरण करने वाला कौन है ?
 उत्तर अनुकरण करने वाला सज्जन पुरुष है।
- प्रश्न 6. नरक क्या है ?
 उत्तर पराधीनता ही नरक है।
- प्रश्न 7. सुख क्या है ?
 उत्तर जो समस्त परिग्रह विरति है वह सुख है।
- प्रश्न 8. सत्य क्या है ?
 उत्तर प्राणियों का हित करना ही सत्य है।

जैन वाङ्मय में आयुर्वेद

गंगा के आगे

* डॉ. सुशील जैन (मैनपुरी उ.प्र.) *

जैन मतानुसार आयुर्वेद रूप सम्पूर्ण प्राणावय के आद्यप्रणेता प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव भगवान ऋषभदेव जी हैं। जब भोग भूमि के पश्चात् कर्मभूमि का प्रारम्भ हुआ उस समय अनेक पुण्यात्मा जीव अपने पुण्य के प्रभाव से बिष शस्त्रादि के द्वारा होने वाले अपघात से सुरक्षित दीर्घ आयु को प्राप्त करते थे। किन्तु शनैः-शनैः कालक्रम से ऐसे मनुष्य उत्पन्न होने लगे जो बिष शस्त्रादि द्वारा घात होने योग्य शरीर को धारण करने वाले थे। उन्हें वात पित्त कफ के उद्वेग से महामय होने लगा ऐसी स्थिति में भरत चक्रवर्ति जो श्री आदिनाथ भगवान के पुत्र थे अन्य भव्यजनों के साथ भगवान के समोशरण में पहुँचे। समोशरण अशोक वृक्ष, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, छत्र, चमर, रत्न जड़ित सिंहासन, भामण्डल, और देव दुन्दुभि रूप अष्ट महाप्रातिहार्य, तथा बारह प्रकार की सभाओं से युक्त था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने प्रभु से निम्न प्रकार निवेदन किया -

देवः त्वमेव शरणं शरणागतानां-मस्माकमाकुलधियामिह कर्मभूमौ।

शीतातितापहिमवृष्टिनिपीडितानां कालक्रमात्कदशनाशनतत्पराणाम्॥

नानाविधामयभयाददितुःखितानां माहारभेषजनिरुक्तिमजानतां नः।

जैन आयुर्वेद के प्रणेता भगवान आदिनाथ

तत्स्वास्थ्यरक्षण-विधानमिहातुराणां का वा क्रिया कथयातमथलोकनाथ॥

कल्याणकारण/स्वास्थ्यरक्षणाधिकारः। पृष्ठ 2

अर्थात् हे देव ! कर्म भूमि में अत्यधिक ठंड गर्मी और वर्षा से पीड़ित तथा कालक्रम से मिथ्या आहार विहार के सेवन में तत्पर व्याकुल बुद्धि वाले शरणागत हम लोगों के लिये आप ही शरण हैं। हे ! तीन लोक के नाथ अनेक प्रकार की व्याधियों के भय से अत्यन्त दुःखी तथा आहार औषधि के क्रम को नहीं जानने वाले व अनेक प्रकार के रोगों के नय से पीड़ितों के लिये स्वास्थ्य रक्षा के उपाय और रोगों को नाश करने वाली क्रिया चिकित्सा वतलाने की कृपा करें।

इस प्रकार भगवान आदिनाथ स्वामी से निवेदन करने के पश्चात् वृषभसेन प्रमुख गणधर तथा भरतचक्रवर्ती आदि अपने अपने स्थान पर मौन पूर्वक बैठ गये। तब उस महान सभा रूप समवशरण में भगवान की उत्कृष्ट देवी साक्षात् पट्टरानी के रूप में रहने वाली सार रहित सरस शारदा देवी दिव्यध्वनि के रूप में प्रसारित हुई। उस दिव्यध्वनि सरस्वती ने सर्व प्रथम पुरुष लक्षण, रोग लक्षण, औषधियाँ एवं सम्पूर्ण काल रूप सकल वस्तु चतुष्टय का संक्षेपतः वर्णन किया जो सर्वज्ञत्व का सूचक है।

इस प्रकार आयुर्वेद का प्रारम्भ भगवान श्री आदिनाथ स्वामी प्रथम तीर्थंकर की दिव्यध्वनि से हुआ इसका विवेचन श्री उग्रदित्याचार्य ने अपने ग्रन्थ कल्याण कारक में निम्न प्रकार से किया है-

दिव्यध्वनि प्रकटितं परमार्थजातं साक्षात्तथा गणधरोडधिजगेसमस्तम्।

पश्चात् गणाधिपनिरूपितवाक्प्रपञ्च-मष्टार्थनिर्मलधियो मुनयोडधिजग्मुः ॥9॥

कल्याणकारक

इस प्रकार भगवान की दिव्यध्वनि द्वारा प्रकटित आयुर्वेद सम्बन्धी समस्त तत्त्वों का चार प्रकार के साक्षात् गणधर परमेष्ठी ने जान लिया। तदनन्तर गणधरों के द्वारा निरूपित वस्तु स्वरूप को निर्मल मति श्रुत अवधि व मनः पर्यय ज्ञान को धारण करने वाले योगियों ने जान लिया।

इसके विपरीत वैदिक मतानुसार आयुर्वेद शास्त्र के आद्य प्रवर्तक ब्रह्मा हैं। जिन्होंने सृष्टि की रचना से पूर्व ही आयुर्वेद शास्त्र की अभिव्यक्ति की किन्तु जैन मतानुसार यह सृष्टि अनादि और अनन्त है। अतः इसकी रचना का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रथम ओर द्वितीय काल में यहाँ भोग भूमि की उत्कृष्ट अवस्था थी जिसमें सभी मनुष्यों में पारस्परिक सोहार्द मात्र था। ईर्ष्या और द्वेष मात्र को वह नहीं जानते थे। सभी एक दूसरे को स्नेह प्रेम से देखते थे। उनकी मनोकामना कल्पवृक्षों से पूर्ण होती थी।

अतः हम यहाँ कह सकते हैं सृष्टि की रचना एवं आयुर्वेद के आद्य प्रवर्तक ब्रह्मा नहीं हैं। यह एक कपोल कल्पित एवं पूर्ण रूप से भ्रम है। भारतीय शास्त्रज्ञों ने अनेक निरुक्त्यर्थों द्वारा इसी को प्रमाणित किया है।

स्वास्थ्य लक्षण के विषय में आचार्यों ने कहा है जिस शास्त्र के विषय में विचार करने से हितकर आयु, अहितकर आयु, सुखकर आयु और दुःखकर आयु के विषय में जानकारी प्राप्त होती है अथवा जिस शास्त्र में बतलाये हुये नियमों को पालन करने से दीर्घायु प्राप्त की जा सकती है। उसका नाम आयुर्वेद है। आयु का अर्थ होता है शरीर इन्द्रियाँ मन और आत्मा का संयोग। अर्थात् यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि शरीर इन्द्रियाँ और मन का जब तक सम्बन्ध रहता है उसे आयु कहते हैं इस आयु का सर्वतोमुखी विवेचन जिस शास्त्र में है वह आयुर्वेद है।

वेदोऽयमित्यपि च बोधविचारलाभा-तत्त्वार्थसूचकवचः खलु धातुभेदात्।

आयुश्च तेन सह पूर्वनिबद्धमुद्य-च्छास्त्राभिधानमपरं प्रवदंतितज्ज्ञाः ॥19॥ क. का.

वैद्यशास्त्र को जानने वाले इस शास्त्र को आयुर्वेद भी कहते हैं। वेद शब्द विद् धातु से बनता है। मूल धातु का अर्थ ज्ञान विचार और लाभ होता है। इस प्रकार धातु के अनेकार्थ होने से यहाँ वेद शब्द का अर्थ वस्तु के यथार्थ स्वरूप के बताने वाला है। इस वेद शब्द के पीछे आयुः शब्द जोड़ दिया जाय तो आयुर्वेद बनता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि जो हितायु, अहितायु सुखायु, दुःखायु इनके स्वरूप आयुष्य लक्षण आयुष्य प्रमाण आयु के लिये हिताहित द्रव्य इत्यादि आयु सम्बन्धी यथार्थ स्वरूप को प्रतिपादन करता है उसका नाम आयुर्वेद है।

चरक संहिता में आयुर्वेद को निम्न प्रकार परिभाषित किया है-

हिता हितं सुख दुःख मायुतस्य हिताहितम्।

मानं च तच्च यत्रोक्त आयुर्वेद स उच्यते ॥ चरक.

जीव का हित अहित सुख और दुःख इसका नाम आयु है। इस आयु के लिये पथ्य, अपथ्य और आयु के परिमाण का विवेचन जिस शास्त्र में है उसे आयुर्वेद कहते हैं। आयुर्वेद का उद्देश्य व्याधियों को दूर कर स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य की रक्षा करना है।

सुश्रुत में लिखा है -

इह खल्वायुर्वेदप्रयोजनमव्यधुवपस्तपतानां व्याधिमोक्षः स्वास्थ्यस्य रक्षणं चः। सुश्रुत

अर्थात् रोग ग्रस्त को रोग से मुक्त कराना और स्वस्थ जीव की रक्षा करना आयुर्वेद का उद्देश्य है यहां रोग से मुक्त करना अर्थात् वात पित्त कफ इन दोषों के कुपित होने से जो रोग की उत्पत्ति होती है उसका निदान सही रूप से करना ही आयुर्वेद है। जैन दर्शन में चार कषाय सप्त व्यसन से मानसिक विकारों का बोधक है। इन व्यसनों का पालन करने से रोगों की उत्पत्ति होती है।

चार कषाय सप्त व्यसन निम्न प्रकार हैं-

चार कषाय-क्रोध, मान, माया, लोभ

सप्त व्यसन- जुआ खेलना, शराब पीना, मांस खाना, शिकार खेलना, पर स्त्री सेवन करना, चोरी करना, वेश्यागमन।

उपरोक्त व्यसनों के करने से सार परम्परा के जनक राग द्वेष क्रोधादि मानसिक विकार उत्पन्न होते हैं। जिसे जैन धर्म में कर्म को आमन्त्रण देना है। कर्मों की निर्जरा करने के लिये वृत्त, नियम, उपवास, सामायिक श्रावक के छह आवश्यक कर्म आदि का समावेश हो जाता है। यह सभी खान पान शुद्ध आचार विचार आयुर्वेद के सदाचार में भी है।

आयुर्वेद के वाग्भट संहिता ग्रन्थ में लेखन वाग्भट लिखते हैं-

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥ वाग्भटः।

जिस व्यक्ति के वात, पित्त, कफ, तीन दोष समान हैं रस रक्तादि धातुओं का निर्माण व मलमूत्र का विसर्जन स्वाभाविक रूप से होता है तथा मन इन्द्रियाँ और आत्मा प्रसन्न हों वह स्वस्थ है।

जैनाचार्यों ने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में लिखा है-

चतुः प्रकाराः प्रतिपादिता इमो । समस्त रोगास्तनुविघ्न कारिणः ॥

ततश्चतुर्वर्ग विधान साधनं । शरीर माद्यं परिक्षयते बुद्धैः ॥

चार प्रकार के रोग होते हैं। यह सम्पूर्ण रोग शरीर को बाधा पहुँचाने वाले हैं। धर्म, अर्थ काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थ के लिये शरीर प्रधान साधन भूत है। शरीर के बिना चार पुरुषार्थ सिद्ध नहीं हो सकते।

नीतिकारों ने कहा है-

शरीर आद्यं खलु धर्म साधनं निश्चय से धर्मसाधन के लिये शरीर प्रथम एवं प्रधान माध्यम है। इसलिये एहिक एवं पारलौकिक सुख शान्ति के लिये स्वास्थ्य परम आवश्यक है।

आचार्य लिखते हैं -

समाग्निधतुत्वमदोष विभ्रसो । मलक्रियात्मेन्द्रियसुप्रसन्नता ।

मनः प्रसादश्च नरस्य सर्वदा । तदेव मुक्तं व्यहारजं खलु ॥४॥ क. का.

अर्थात् मनुष्य के शरीर में सम अग्नि होना धातुओं का सम होना वात, पित्त, कफ तीनों का विकृति नहीं होना मलों का विसर्जन क्रिया यथाचित रूप से होना आत्मा इन्द्रियाँ और मन की प्रसन्नता सदैव रहना यह व्यवहारिक स्वास्थ्य का लक्षण है। यहाँ आचार्यों ने व्यवहारिक स्वास्थ्य कर्मों का नाश कैसे करेंगे।

आचार्य कहते हैं- कर्म क्षयार्थं तप्यति इति तपः । कर्म क्षय के लिये जो तपा जाता है वह तप है। शरीर को स्वास्थ्य रखते हुये परमार्थिक स्वास्थ्य का लाभ लेवें। यहाँ अब यह प्रश्न उठता है कि मुनियों को आयुर्वेद शास्त्र की आवश्यकता क्यों पड़ी।

कविता

जिन्दगी क्या है ?

✽ पलक जैन (राजस्थान) ✽

जिन्दगी.....सुनकर हमे क्या याद आता है ?

क्या जिन्दगी के कुछ माईने है ?

क्या जिन्दगी का कोई लक्ष्य है ?

क्या...क्या...क्या.. जितने भी सवाल कर लो,
जवाब आ जाता है पर इसका जवाब क्या नहीं है
कि जिन्दगी क्या है।

जिन्दगी एक ट्रेन की तरह है जो निरंतर चलती है
पर हमें इंजन बनना है जो कि उसे काबु में रख सके।
इस ट्रेन में कोयला नहीं है पर हँसी, खुशी, दुख,
मायूसी है जो इसे जीने की शक्ति देती है।

जिन्दगी को कभी हल्के में न ले लेना जनाब,
क्योंकि वो कब छीन ले जिन्दगी पता नहीं चलेगा।

पता तो तब भी नहीं चलेगा, जब चार कंधों पर जाओगे तुम।

रह जाओगे सब सूने, सूने, जब मुरझा जाओगे तुम।

क्या रखा है इस दिल में, याद आओगे तब आँसू बन जाओगे,
भूल गये तो इस महफिल में धुआ बन जाओगे।

राख को भी वही छोड़ आयेंगे वो, जब जरूरत खत्म हो जायेंगी तो।

मत मर मेरे भाई, जब हृद पार हो जायेंगी।

अगर आप मेरी यह रचित पंक्ति को गौर से पढ़ें तो कुछ झलकता है,
जो कि है मरने के बाद का तो कुछ दृश्य, तो जरा गौर कीजिये मरने के पहले का दृश्य -

रो-रोकर जन्म लिया, माँ की आँखों में खो तू गया।

क्या पता मुझे पगले, जब पिता का हो ही गया।

धूम मची मैं शहर में तब, जब तू कामीयाब हो ही गया।

रोता तू क्यों है पगले, दूसरों के बहकावे से।

काम तो कर तू एक बार अब तो, फिर जहाँ मे शा तो जा रे।

कुछ फर्क दिखा इन दोनों पंक्तियों में ?

फर्क जो था वहीं जिन्दगी थी।

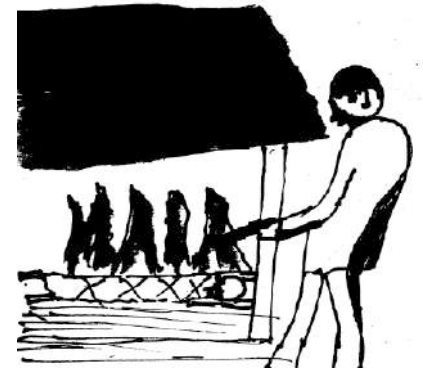
अर्थात् मरण के पहले सब चाहते है आपको पर मरने के बाद कौवा भी नहीं आता,
आता है तो सिर्फ और सिर्फ आपका धर्म।

रोशनी सा है ये धर्म, पाप पर पुण्य का गीत है धर्म।

किस्मत वालों को मिलता है जैन धर्म, बाकी हर अंधेरे को उजाला कहा मिलता।

आखरी मैं बस यही कहना चाहूँगी।

चीजों को देखने का नजरिया बदलो, तो चीजे तुम्हे देखने का नजरिया बदलेगी।



महान् पराक्रमी अभिनन्दन को जन-जन का वंदन

* ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) *

1. भारतीय वायुसेना के विंग कमाण्डर अभिनन्दन वर्द्धमान पर हमें गर्व है। 58 घंटे बाद 1 मार्च, 2019 को पाक की गिरफ्त से छूटकर पाक को आँखे दिखाते हुये वे अपना सीना तानकर भारत लौट आये। बाघा अटारी वार्डर पर रात 9.20 बजे उनका स्वागत किया गया। उन्होंने गर्व भरी मुस्कान के साथ भारत में कदम रखा। अपने देश लौटकर उन्हें अनमोल खुशी हुई। साइकिल के हैंडिल वार की भांति उनकी मूँछ युवकों के लिये बड़ी स्टाइल बन गई है। उनकी मूँछ उनकी शारीरिक और मानसिक शक्ति का प्रतिबिम्ब बन गई है।
2. बालाकोट में आतंकियों के प्रशिक्षण केन्द्रों पर भारतीय वायुसेना द्वारा दी गई कार्यवाही से पाकिस्तान के रंगटे खड़े हो गये हैं। उसके छक्के छूट गये हैं। आतंकवाद के कारण पाकिस्तान पूरी दुनिया में बदनाम हो चुका है। आतंकवादी के कारण वह गुण्डा राज्य (रोग स्टेट) के नाम से जाना जाने लगा है। आतंकवादी गतिविधियों के कारण पाकिस्तान की जनता भी बड़ी त्रस्त और दुखी हो गई है। भूतकाल में पाक के चरमपंथी और अतिरूढ़िवादी आतंकवादी हमारे सैनिकों के सिर काटते रहें हैं। अब पुलवामा हमले के कारण हमारे देश की आत्मा आहत हुई है। जन-जन दुखी हो गया है और आतंक के विरोध में पूरा देश एक जुट हो गया है।
3. अभिनन्दन के पिता और कारगिल युद्ध के हीरो एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) एस. वर्द्धमान और माता शोभा वर्द्धमान का वायुमान में गर्मजोशी से स्वागत किया। अभिनन्दन का विवाह श्रीमति तन्वी मारवाह से हुआ है। वे भी वायुसेना में रही हैं। उनके दादा जी भी वायुसेना में थे। भारतीय वायुसेना के विंग कमाण्डर अभिनन्दन वर्द्धमान तीनों पीढ़ियों के सबसे बड़े हीरो बनकर निकले हैं। वे चेन्नई में रहते हैं।
4. हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि अभिनन्दन के अदम्य साहस पर राष्ट्र को गर्व है। अभिनन्दन जी भारत की भावना के प्रतीक और भारत की पहचान के तिलस्म हैं। उन्हें पूरे देश का इतना प्यार मिला जिसे शब्दों में वर्णन करना कठिन है। अभिनन्दन की पाक के शीघ्र वापसी पर पूरी दुनिया ने भारत का अभिनन्दन किया। भारत की बड़ी और कड़ी कार्यवाही के भय से विंग कमाण्डर अभिनन्दन को पाक ने 28 घण्टे में ही रिहा कर दिया। वे 1 मार्च 2019 को बाघा वार्डर से भारत लौट आये।
5. बालाकोट एयर स्ट्राइक और अभिनन्दन की दिलेरी पर फिल्म बनाने के लिये बालीवुड में होड़ मची हुई है। अभिनन्दन के प्रति पूरे देश में सहानुभूति की लहर उठी हुई है। उनके नाम से संबंधित अनेक टाइटिल्स को फिल्म बनाने के लिये प्रोड्यूसर्स एसोसियेशन में रजिस्टर कराया जा रहा है जिससे उनके वीरता भरे कदम की जानकारी दुनिया को दी जा सके।
6. अभिनन्दन ने 27 फरवरी, 2019 बुधवार की सुबह पाकिस्तानी हवाई हमले का जवाब देने के लिये अपने विमान मिग-21 से उड़ान भरी थी। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर पाकिस्तान के एफ-16 जेट के काफी नजदीक पहुँचकर उसे मार गिराया किन्तु इसी कार्यवाही के दौरान उनका विमान भी गिर गया और उनका पैराशूट पाक अधिकृत कश्मीर में उतर गया। यह पता

- चलते ही कि वे पाक अधिकृत कश्मीर में हैं, वे आधा किलोमीटर पीछे दौड़े, पीछा कर रहे युवकों को डराने के लिये अपनी पिस्टल से उन्होंने हवाई फायर किये। इसी बीच उन्होंने पानी के छोटे से तालाब में छलांग लगा दी। अपनी जेब से आवश्यक दस्तावेज और नक्शे निकालकर पानी में भिगोकर नष्ट कर दिये। पानी में उतरते ही अभिनन्दन के पैर में एक पाकिस्तान युवक ने गोली मार दी और उन्हें पकड़ कर पाक सेना सौंप दिया। अभिनन्दन ने पाक सेना को भारत की कुछ भी जानकारी देने से स्पष्ट मना कर दिया।
7. पाक द्वारा गोपनीय जानकारी उगलवाने के लिये अभिनन्दन को शारीरिक और मानसिक यातनायें दी गईं। प्रताड़ित किया गया। उन्हें सोने नहीं दिया गया। बंद कमरे में रखा गया। पीटा गया। कई घंटों तक खड़ा रखा गया। उन्हें परेशान करने के लिये तेज गाने चलाये गये पर अभिनन्दन टूटे नहीं।
 8. पाक मीडिया के अनुसार बंदी बनाये जाने के पहले अभिनन्दन की बहादुरी काबिले तारीफ थी। अभिनन्दन के शौर्य और हवाई रणकौशल से सैन्य दुनिया अचंभित है। विश्व की विमानन कंपनियाँ तनाव में हैं। अभिनन्दन ने असाधारण समझ, साहस तथा सामयिक सूझबूझ का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।
 9. यहा एक उल्लेखनीय है कि नरसिंहपुर में जन्में और भारतीय प्रशासनिक सेवा में रहे हमारे वरिष्ठ साथ श्री परमानन्द जी पेठिया के सुपुत्र और वीरचक्र से सम्मानित एयर मार्शल विक्रम पेठिया के वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध में पकड़े जाने पर पाकिस्तान ने उनको बेइंतहा यातनायें दी थी किन्तु वर्तमान में भारत के पूरे विश्व में बढ़ रहे प्रभाव के कारण अभिनन्दन जी सौभाग्यशाली रहे और भीषण यातनाओं से बच गये। पेठिया परिवार के लिये सराहनीय है कि विक्रम पेठिया के सुपुत्र आनन्द विक्रम तथा उनकी पत्नि गीता के तीन भाई भी वायुसेना में ही हैं।
 10. अभिनन्दन जी के आसाधारण शौर्य से प्रभावित दिल्ली में विहार कर रहे ज्ञानसागर जी महाराज अपने श्रावकों को बता रहे हैं कि जैन समाज का देशभक्ति में बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे जन-जन में देशप्रेम की भावनाओं की अलख जगा रहे हैं। अपने प्रवचनों में उन्होंने कहा है कि राष्ट्र, माँ, बहिन, परिवार और समाज पर हमला होने पर उनकी सुरक्षा नहीं करना अहिंसा नहीं कायरता है। अहिंसा कायरत नहीं वीरता सिखाती है। राष्ट्र की सुरक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है। राष्ट्रधर्म है। सैनिक वतन के लिये काम करते हैं। अतः सैनिक परिवारों के लिये जो भी सहायता बन सके, हम सबको प्राथमिकता पूर्वक करना चाहिये। राष्ट्रसंत ज्ञानसागर जी ने आगे कहा कि विंग कमाण्डर अभिनन्दन वर्द्धमान ने अपनी बहादुरी से हर भारतवासी का मस्तक गर्व से ऊँचा उठाया है। ऐतिहासिक काम किया है। उन्होंने देशवासियों के हौसले बुलंद किये हैं। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई।
 11. अभिनन्दन वर्द्धमान हमारे राष्ट्र के गौरव हैं। हमारे आदर्श हैं। जन-जन के अभिनन्दन हैं। वर्द्धमान तो वे हैं ही, तदपि उनके चतुर्मुखी विकास और सर्वोच्च ऊँचाई पर पहुँचने के लिये हम सबकी हार्दिक बधाई। उनके माता-पिता, पत्नि और पुत्र को हार्दिक साधुवाद। उन सबको शत-शत शुभकामनायें। उनके सभी साथी सैनिकों को मंगलकामनायें।

आओ सीखें : जैन न्याय

भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञत्व का चिंतन

मीमांसक दर्शन ईश्वर को तो मानता है किन्तु किसी सर्वज्ञ की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। वेद को अपौरुषेय और स्वतः प्रमाण मानता है और वह कहता है कि वेद भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल के पदार्थों का सूक्ष्म व्यवहित और निकृष्ट पदार्थों का सूक्ष्म व्यवहित और निकृष्ट पदार्थों का ज्ञान कराने में समर्थ है उनका कहना है कि सर्वज्ञ का कोई साधक प्रमाण नहीं है इसलिए सर्वज्ञ नहीं हैं वे अपने तर्क निम्न प्रकार देते हैं -

1. सर्वज्ञ का साधक कोई प्रमाण नहीं हो सकता है। पाँच प्रमाणों में किसी प्रमाण से सर्वज्ञ मानने से बाधा आ सकती है।

क्र. इन प्रमाणों से सर्वज्ञ सिद्धि और	बाधा
1. प्रत्यक्ष प्रमाण से सर्वज्ञ मानने पर	इस समय किसी भी सर्वज्ञ को नहीं देखते हैं।
2. अनुमान प्रमाण से सर्वज्ञ मानने पर	सर्वज्ञ का अनुमान कोई वैसा हेतु नहीं दिखाई देता है जिसे देखकर अनुमान किया जा सके कि कोई सर्वज्ञ है।
3. आगम प्रमाण	आगम जो भेद है उसमें कोई सर्वज्ञ का उल्लेख नहीं क्योंकि वेद का प्रमाण विषय तो यज्ञ-याज्ञ आदि है। 'स सर्वत्र स लोकवित-हिरण्यगर्भः सर्वज्ञः' इस वाक्य से सर्वज्ञ सिद्ध नहीं होता है क्योंकि यह वाक्य तो याज्ञ की प्रशंसा में कहे गये हैं। वेद अनादि है और सर्वज्ञ सादि है। इसलिये नित्य आगम भी सर्वज्ञ का साधन नहीं है। अनित्य आगम सर्वज्ञ रचित मानने पर परस्पर आश्रय दोष आता है और साधारण पुरुष द्वारा रचित मानने पर आगम सच्चा सिद्ध नहीं होता है।
4. उपमान प्रमाण से सर्वज्ञ सिद्धि में बाधा	वर्तमान में सर्वज्ञ के समान किसी पुरुष को देखे तो उसकी उपमा की जा सकती है। किन्तु जगत में सर्वज्ञ के समान कोई नहीं है।

5. अर्थापत्ति प्रमाण से सर्वज्ञसिद्धि में बाधा

संसार में ऐसी कोई भी वस्तु दृष्टिगोचर नहीं होती है जो सर्वज्ञ के बिना न हो सके धर्मोपदेश भी सर्वज्ञ के बिना संभव है। बुद्ध या अरहंत ने जो धर्मोपदेश दिया वह अज्ञानवश दिया क्योंकि वे वेद के ज्ञाता नहीं थे।

निष्कर्ष - इन सभी प्रमाणों से सर्वज्ञ मानने पर बाधा को देखते हुये यह कहा जा सकता है कि इन पाँचों प्रमाणों के सिवाय और कोई भी प्रमाण नहीं हैं। अतः मानना पड़ता है कि सर्वज्ञ नहीं हैं।

2. देशान्तर और कालान्तर के लोगों के प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से भी सर्वज्ञ की सिद्धि नहीं होती है। क्योंकि वर्तमान में जिस तरह के प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से पदार्थ को जाना जाता है कालान्तर और देशान्तर के पदार्थों को भी इसी तरह से जाना जाता है अतः कोई भी प्रमाण प्रत्यक्ष आदि प्रमाण इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना नहीं हो सकता है। गृद्ध की दृष्टि, सूकर की श्रवण शक्ति, चींटी की गंध शक्ति से ज्ञान उन्हें हो जाता है। कात्यायन नाम के ऋषि को विलक्षण अनुमान का ज्ञान था। जैमिनी को वेदार्थ का विशेष ज्ञान था। इसलिये यह कहा जा सकता है कि देशान्तर और कालान्तर में भी प्रत्यक्ष आदि प्रमाण जो आज है वैसे उनके भी होंगे किन्तु यह कहना ठीक नहीं है। क्योंकि गृद्ध आदि के इन्द्रिय सामग्री के बिना ज्ञान नहीं होता है। वे अपने नियत विषय को ही जान सकते हैं। अतीन्द्रिय वस्तु का ज्ञान इनको भी नहीं हो सकता है। अतः कोई सर्वज्ञ नहीं है न अतीन्द्रियका ज्ञाता है।

3. लोक प्रसिद्ध इन्द्रिय प्रत्यक्ष से विलक्षण अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष नाम का कोई प्रमाण नहीं है। सभी पुरुष स्वभाव से ही सूक्ष्म परमाणु देशान्तरवर्ती सुमेरु पर्वत और कालान्तरवर्ती राम, रावण को देखने में असमर्थ है अतः सर्वज्ञ नहीं है।

जैन आचार्य के तर्क - जैन आचार्यों ने मीमांसकों के तर्क सुनने के बाद इनके तर्कों को विचार शून्य मानते हुये कहा कि इस तरह से सर्वज्ञ का निराकरण नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा क्योंकि सर्वप्रथम तो सर्वज्ञसिद्धि का कोई बाधक प्रमाण नहीं हैं। इसी उद्देश्य से अपनी बात आगे बढ़ाते हुये जैनाचार्य निम्न तर्क देते हैं -

1. पाँचों प्रमाण सर्वज्ञ के अस्तित्व को नहीं बतलाते हैं अतः सर्वज्ञ के ज्ञापक का अभाव ही सर्वज्ञ का बाधक है यह कहना ही तो ठीक नहीं है किन्तु ऐसा कहना ठीक नहीं है क्योंकि इस पर प्रश्न होता है कि सर्वज्ञ का ज्ञापक प्रमाण नहीं माना जाता है यह बात अपने आप अनुभव से कहते हैं या सबके अनुभव से। यदि आप अपने अनुभव के आधार पर कहते हैं तो आपके तो दूसरे के मन की बात का तो पता नहीं तो बात क्या उनका विचारों के भी अभाव हो जायेगा ? और यदि सबके अनुभव के आधार पर कहते हैं तो आपको यह ज्ञान कैसे हुआ ? कि देशान्तर, कालान्तरवर्ती सब मनुष्यों को सर्वज्ञ बतलाने वाले किसी प्रमाण का पता नहीं था।

2. सर्वज्ञ ज्ञापक अनुलम्भ (अभाव) किसी प्रमाण से सिद्ध किया जा सकता है - प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति और उपमान प्रमाण से तो सर्वज्ञ ज्ञापक अभाव की सिद्धि नहीं होती है। आगम प्रमाण शेष रहता है उससे भी सर्वज्ञ का अभाव सिद्ध नहीं हो सकता है क्योंकि वेद तो यज्ञ-याज्ञ के विषय में ही प्रमाण माना जाता है।

3. सर्वज्ञ का बाधक प्रमाण कोई नहीं है फिर भी यदि कोई कहता है कि भूत, भविष्य और वर्तमान में कोई सर्वज्ञ नहीं है और तीनों लोको में कोई सर्वज्ञ नहीं है तो आपने यह किस ज्ञान से जाना स्वयं से अथवा सब के अनुभव से यदि आप स्वयं से जानते हैं तो तीन लोक को जानने वाला ही सर्वज्ञ होता है। अतः आप ही सर्वज्ञ हो जायेंगे।

4. मीमांसक मानते हैं कि विशिष्ट पुरुषों को त्रिकालवर्ती और विप्रकृष्टि पदार्थों का ज्ञान हो सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि सकल पदार्थों को जानने की शक्ति आत्मा में है।

5. दूरवर्ती, कालान्तर, देशान्तर, सूक्ष्म पदार्थों का अनुमेय होता है अर्थात् अनुमान योग्य पदार्थ किसी न किसी के प्रत्यक्ष अवश्य होते हैं इससे अतीन्द्रिय ज्ञान की सिद्धि होती है।

6. ज्ञानावरण आदि कर्मों के अभाव हो जाने से आत्मा के अज्ञान का अभाव हो जाता है और कर्म के अभाव में मोह अज्ञान समाप्त हो जाने से पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

7. सूक्ष्म आदि विषय भी किसी ना किसी ज्ञान की प्रत्यक्ष अवश्य होते हैं यदि प्रत्यक्ष ना माने जाये तो अनुमान प्रमाण का नाश हो जायेगा क्योंकि सभी प्रमाणों के इस तरह दोष आ जायेगा। अतः अनुमान प्रमाण को मानने वाले मीमांसकों को अनुमेय होने से सूक्ष्म आदि पदार्थों को किसी प्रत्यक्ष आदि ज्ञान का विषय मानना ही चाहिये।

कविता

चमन में अब अदावत नहीं होगी

वागवाँ से कह दो चमन में अब अदावत नहीं होगी ।
गुलावों को काँटो से कोई शिकायत नहीं होती ॥
वतन में अब लोग अमन चैन से रहे ।
दुश्मनों पर अब कोई इनायत नहीं होगी ॥
कचरे में पड़ा रहेगा काँच के टुकड़े की तरह ।
गर जिन्दगी के नूर की हिफाजत नहीं होगी ॥
वाइजों से कह दो अब न मानेगे हिदायत ।
फिरका परस्ती के लिये इबादत नहीं होगी ॥
चौकस्ती करें अब मंदिर मस्जिद के लिये ।
षडयंत्र कोई लाख करे पर बगावत नहीं होगी ॥



कहानी

वायुसेना का बाहुबली अभिनन्दन

दोपहर के 3 बजे थे आसमान में सूर्य बादलों में लुफा छुपी कर रहा था। हवायें तेज गति से वह रहीं थी। जम्मू कश्मीर के राजौरी सेक्टर पर संगीने थामे हुये सिपाही दुश्मनों की हलचल पर नजरे गड़ाये हुये थे। सैन्य अधिकारी अपने में बैठे सभी परिस्थितियों का



जायजा ले रहे थे। आवश्यक आदेश व निर्देश संचार माध्यमों से प्रसारित कर रहे थे। मिलने वाली सूचनाओं पर कार्यवाही का निर्देश दे रहे थे। आज का दिन 27 फरवरी का था जहाँ पूरा देश 26 फरवरी के एयर स्ट्राइक ऑपरेशन की सफलता पर खुशियाँ मना रहा था वहीं पर भारतीय सैनिक पर हाई अलर्ट सम्पादन करने में व्यस्त थे।

देश के कौने कौने में एक ही चर्चा थी टी.वी के प्रत्येक चैनल भारतीय वायु सेना की सफलता का बखान कर रहे थे। वे कह रहे थे, भारतीय सेना के 12 मिराज विमानो ने मात्र 21 मिनट में पाक अधिकृत कश्मीर के जैस ए मोहम्मद के आतंकी प्रशिक्षण केन्द्रों के 13 ठिकानों को तबाह

कर दिया। पाकिस्तान ने भी युद्ध विरास पुनः उलंघन करते हुये गोली वारी की तथा भारतीय सेना ने जवाबी कार्यवाही में पाकिस्तान की चौकियों को नष्ट कर दिया। जब यह सब कुछ समाचार पूरे भारत में विभिन्न चैनलों के माध्यम से प्रसारित किया जा रहा था तभी भारतीय नियंत्रण रेखा को पार

करते हुये एफ-16 विमान भारत में प्रवेश करते हुये दिखा।

एफ-16 विमान को देखते ही अभिनन्दन आँखों में अचानक भारत माँ के प्रति प्रेम उमड़ आया। बिंग पायलट अभिनन्दन ने अपने मिग-21 विमान से उड़ान भर ली और पाकिस्तानी विमान का पीछा करना शुरू कर दिया और उस विमान को निशाना भी बना दिया। देखते देखते पाकिस्तानी विमान आग के गोले में परिवर्तित हो गया। परन्तु अभिनन्दन का विमान पाक की सीमा में पहुँच गया उसे यह मालुम नहीं चला। दुर्भाग्य से अभिनन्दन जिस विमान को उड़ा रहा था।

वह क्रैस हो गया। विमान के क्रैस होते ही जावाज बहादुर अभिनन्दन पैराशूट के साथ आसमान में कूँद गया। अभिनन्दन एक अनजानी जगह में सीना ताने खड़ा हो गया। भारत माँ का लाल हर कुर्वानी के लिये तैयार था परन्तु भारत की सैन्य ठिकानों की जानकारी दुश्मन को न मिले इसके लिये वह चिन्तित हो उठा उसके पास कुप दस्तावेज थे जिनमें भारत के नक्शे थे जो दुश्मन के हाथ लगते ही भारत को बहुत बड़ा नुकसान हो सकता था। एन.पी. पाकिस्तान के कुछ लोगों ने जब देखा की एक गोल लम्बा चेहरे वाला जिसकी काली लम्बी मूँछे हैं और ऐसा लगता है जिसका गणवेश भारतीय सैनिकों से मिलता जुलता है। पाकिस्तानी भीड़ की खुशी अपने आप बढ़ गयी और वे लहरियाँ भरते हुये अभिनन्दन के पास आ गये। निःशंक निडर अभिनन्दन ने पूछा कि यह किस देश की जमीन है तो चालाकी भीड़ में से एक युवक अपनी दुर्बुद्धि का प्रयोग करते हुये बोला ये हिन्दुस्तानी जमीन हैं। तपाक से अभिनन्दन ने जय-हिन्द भारत माता की जय-कारा का नारा लगा दिया। किन्तु वहाँ से कोई आवाज नहीं आई बल्कि अल्लाहु-अकबार अल्लाह से आसमान गूँज गया।

अभिनन्दन को समझते देर न लगी कि वह दुश्मन की जमीन पर खड़ा है उन्होंने चारों तरफ नजर घुमायी उसे एक तालाब नजर आया और वह अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुये तालाब की ओर दौड़ पड़ा। उसने अपने समस्त दस्तावेज पानी में गला

दिये। और तालाब से बाहर निकल आया। भीड़ अभिनन्दन के पास चली आ रही थी। उसने अपनी पिस्टल से हवाई फायर कर दिया। हवाई फायर सुनते ही भीड़ ठिढ़क गई और उसकी ओर पत्थर फेंकने लगी। अभिनन्दन ने अपने बचाव में एक और हवाई फायर की तुरन्त बाद पाकिस्तानी आर्मी के मेजर मोहम्मद अब्दुल्ला अभिनन्दन के पास पहुँच गये। उन्होंने भीड़ से कहा कोई मारेगा नहीं और सेना के जवानों ने भीड़ को भगाना शुरू कर दिया। तथा सेना की गाड़ी में बैठाकर अभिनन्दन को पाकिस्तानी सैन्य कैम्पों में ले जाया गया।

इधर भारत में विंग कमांडर के पाकिस्तान के कब्जे की खबर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विदेशमंत्री सुष्मा स्वराज एवं रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण को चिन्ता में डाल दिया तत्काल प्रधानमंत्री ने अपनी पहली प्रतिक्रिया दी विंग कमाण्डर को युद्धबंदी नहीं कहा जा सकता है, जब युद्ध चल ही नहीं रहा था तो अभिनन्दन युद्धबंदी कैसे हो सकता है उधर सुष्मा स्वराज को इस्लामिक देशों को विदेश मंत्री के सम्मेलन में कहा पाकिस्तान में आतंकी संगठन जैश ए मोहम्मद स्थित है। जिसने पुलवामा के हमले की जिम्मेदारी इस हमले में 44 जवान शही हुये हमने पाकिस्तान से कोई युद्ध नहीं किया। हमने तो आतंकियों पर कार्रवाई की है अब वक्त आ गया है कि सभी देश जीरो टॉलरेस की नीति अपनायें और आतंकवाद कि खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करें।

उधर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने घोषणा कर दी थी भारत कोई बड़ा एक्शन लेने जा रहा है जिससे पाकिस्तान विश्व में भी चारों से घिर गया और अकेला पड़ गया।

नाराज भारत ने पाकिस्तान के उच्च उपयुक्त को तलब कर दिया और अपना कड़ा विरोध जता दिया पाकिस्तान के हिमायती चीन ने भी दोनों देशों को संयम से काम लेने की सलाह दे दी बात और आगे बढ़ गई सुरक्षा परिषद में अमेरिका फ्रांस ब्रिटेन में पाकिस्तान स्थित जैश ए मोहम्मद आतंकी संगठन के प्रमुख संगठक मसूद अजहर पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पेश कर दिया।

पाकिस्तान के संसद में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने अपने बयान में कहा युद्ध यदि होता है तो इससे भारत और पाकिस्तान दोनों देशों का भला नहीं होने वाला है हम भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से बात करने का प्रयास करेंगे कि युद्ध टलना चाहिये इस बयान के बाद नरेन्द्र मोदी से बात करने का प्रयास इमरान खान ने कई बार किया। किन्तु वे बात नहीं कर सके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने बयान में कहा कि पहले हमें अपना विंग कमाण्डर अभिनन्दन वापस चाहिये। इसके बाद ही कोई बात संभव होगी। नरेन्द्र मोदी की दृढ़ता देख इमरान को घुटना टेकने पड़े।

इधर जब पूरे विश्व में पाकिस्तान की करतूत निंदा हो रही थी वहीं विंग कमाण्डर एक कोने में अकेला बैठा था उसके चारों

और संगी पहेरे थे वह सोच रहा था मैंने माँ भारती की आन बनाने बचाने में अपना थोड़ा सा योगदान दिया है उसे वे 90 सैंकेड याद आ रहे थे जब उसे 21 मिग विमान उड़ाने का कमाण्ड मिला था उसने मिसाईल युक्त एफ-16 को देखा और मालूम किया कि वह 4000 फुट ऊँचे उड़े तब मैंने अपने मिग-21 को 15000 फुट पर पहुँचाया। इतने बड़े विमान को निशाना बनना संभव नहीं फिर भी माँ भारती का आशीर्वाद ही था जो मैंने कुछ ही सैंकेड में विमान को 13000 फुट लाया और पाकिस्तान विमान को छकाया फिर अपने विमान को मूव किया और एफ-16 को निशान बनाकर गोला दाग दिया और एफ-16 के परखच्चे आसमान उड़ गये परन्तु मेरा विमान भी क्रैश हो गया और अब मैं यहां हूँ हाँरूंगा नहीं मौत तो एक बार ही आती है परन्तु मेरे रेहने न रहने कोई अंतर नहीं पड़ता लेकिन मेरा भारत सदैव अजय और अमर रहे यह मुझे मूल्यवान है।

कितने अमर शहीदों ने इस देश को अजय विश्वविजयी बनाने के लिये अपना बलिदान दिया है कष्ट सहे हैं अभिनन्दन की आँखों के सामने वह दृश्य तैर गया जो उसने कभी शहीद फिल्म में देखा था जब जेल में शहीदे आजम भगत सिंह को पीट पीट कर बेहोश कर दिया गया था मात्र उनसे यह कहा जा रहा था कि वे सरकारी गवाह बन जायें परन्तु उन्होंने कभी भी स्वीकार नहीं किया जब भगतसिंह अनेक कष्ट सहने के

बाद अंग्रेजी सरकार के सामने नहीं झुके तो फिर मैं भी तो महावीर की संतान हूँ वर्धमान पुत्र वीरों की तरह बात करेगा कायरों की तरह हूँ मैं उस दक्षिण भारत का हूँ जहाँ गोम्मटेश बाहुबली निरंतर स्वाभिमान संदेश देते हुये खड़े है ऐसे जिनदेव भक्त अन्याय के सामने कैसे झुक सकता है मार सहूँगा यातना सहूँगा पर वतन के साथ गद्दारी नहीं करूँगा।

जब अभिनन्दन यह सब कुछ सोच रहे थे तभी उनके सामने पाकिस्तानी मेजर आकर खड़े हो गये और पूँछना शुरू किया
मेजर: आपका नाम

अभिनन्दन: मेरा नाम अभिनन्दन वर्धमान है मैं भारतीय वायुसेना का विंग कमाण्डर पायलट हूँ मेरा सर्विस क्रमांक 27981 है।

मेजर: आप किस मिशन पर है।

अभिनन्दन: मेजर सॉरी मैं यह नहीं बता पाऊँगा

मेजर: आप कहाँ के निवासी है।

अभिनन्दन: मैं दक्षिण भारतीय हूँ।

मेजर: आप किस कैम्प में थे

अभिनन्दन: मेजर साहब सॉरी मैं यह नहीं बता सकता हूँ।

मेजर: चाय कैसी रही

अभिनन्दन: अच्छी लगी धन्यवाद

मेजर: पाक व्यवहार कैसा लगा

अभिनन्दन: सैन्य अधिकारी सज्जन है जिन्होंने मुझे भीड़ से बचाया।

जिनेवा संधी के अंतर्गत युद्धवंदियों को डराने धमकाने का काम या उनका अपमान नहीं किया जा सकता है

युद्धवंदियों को लेकर जनता में उत्सुकता भी पैदा नहीं की जा सकती है। केवल अपना नाम सैन्यपद और नंबर बताने का प्रावधान है। जिनेवा संधि को भारत के रक्षा मंत्रालय ने पाकिस्तान को याद दिला दिया।

पाकिस्तान की सर जमीं पर अभिनन्दन अपनी देश भक्ति का परिचय देते हुये मानसिक प्रताड़ना के उपरान्त भी उन्होंने अपने के ठिकानों के बारे में दुश्मनों को कुछ भी नहीं बताया वे एक चट्टान की तरह अडग रहे उन्हें दुश्मन के विक्षोभ विचलित नहीं कर सके। भारत के लाल अभिनन्दन की स्वदेश वापस की आश में देश तीस घंटे तक का बेसब्री से इंतजार करता रहा।

1 मार्च 2019 के सुबह से अटारी सीमा द्वार जन समूह एकत्रित हो हजारों की संख्या में लोग अभिनन्दन का अभिनन्दन करने ढोल ढमाके के साथ जमहा हेते गये दोपहर के जब बारह बज रह थे तब लोग अटारी सीमा चौकी पर नजर गड़ाये हुये थे कि अब रील का हीरो नहीं रीयल भारत की सर जमीं पर अपने बुलंद कदम रखेगा किन्तु उनकी उम्मीदों पर पानी फिरा जब सूचना मिली कि अभिनन्दन का हम अभी अभिनन्दन नहीं कर पायेंगे थोड़ा समय लगेगा कई बार अभिनन्दन के आने समय बदला परन्तु इंतजार वक्त तो समाप्त होना ही था आखिर वक्त खत्म हुआ और अभिनन्दन ने भारत की सरजमीं पर 9 बजकर 21 मिनट पर अपना पहला कदम रखा पूरे देश में दिवाली मन गई जश्न और उल्लास में पूरा भारत डूब गया अभिनन्दन का अर्थ ही बदल गया अब बधाई तक सीमित न होकर

108 मुनि श्री सुधीरसागर जी का जीवन परिचय

✽ श्रीमति रविकान्ता जैन (दिल्ली) ✽

जन्म तिथि व तारीख - 31 दिसम्बर अष्टमी तिथि 1946

जन्म स्थान - ललितपुर, उ.प्र. (झाँसी)

पूर्व का नाम - अशोक कुमार जैन जमादार

पिता का नाम - वाणी भूषण, वाणीरत्न पं. श्री बाबूलाल जैन जमादार

माता का नाम - श्रीमती दक्खीदेवी जैन

लौकिक शिक्षा - बी.एससी., एल.एल.बी. अंतिम वर्ष

ब्रह्मचर्य व्रत - भगवान के माता-पिता बनने हेतु (आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से इन्दौर पंचबालयति मंदिर के पंचकल्याणक नवम्बर 2009 में 108 मुनिश्री अजितसागरजी महाराज से इन्दौर में)

मुनि दीक्षा - 20 अप्रैल 2018, उदयपुर (राजस्थान)

दीक्षा गुरु - अंकलीकर परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश प्राकृताचार्य 108 श्री सुनीलसागर जी महाराज

अपनी बात

मैं लेखिका नहीं हूँ, ना ही मैंने कभी कुछ लिखने का प्रयास ही किया है, लेकिन मुझे लग रहा है यदि मैंने अब भी अपने मन की बात नहीं सुनी तो मुझे पहले जैसी गलती का पछतावा मात्र रह जायेगा। मेरे पूज्य (ससुरजी) पिताश्री वाणी भूषण, वाणीरत्न पं. श्री बाबूलाल जी 'जमादार' का अभिनन्दन ग्रन्थ छपा था तो मैं संकोच के कारण चाह कर भी अपने मन के उद्गार मन में ही दबा कर रह गई थी। मुझे आज तक उस गलती का अहसास है। इसी भावना से हिम्मत जुटा कर मैं अपने पति अशोक जमादार जी के जीवन के विषय में कुछ लिखना चाहती हूँ। इसमें मैंने अपने मन की बात कलम से लिखने की हिम्मत की है, यदि इसमें किसी तरहकी कोई त्रुटि हो जाये तो मुझे उसके लिये क्षमा करेंगे। गलतियाँ होना तो स्वाभाविक सी बात है। ये सब कुछ लिखते समय मैं बताना जरूरी समझती हूँ पू. ताऊजी व ताईजी (श्री छोटेलाल जैन जमादार एवं पू. ताईजी श्रीमती तुलसाबाई जैन) जिनसे मैंने जीवन के बारे में सब कुछ सुना और जाना है वही सब लिखने का प्रयास कर रही हूँ। सबसे ज्यादा आदरणीय मंगल सेन जैन अशोक जी के बचपन से अब तक मित्र) जो परिवार के बड़े बेटे और बड़े भाई की तरह हैं कि आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इनकी बचपन से कॉलेज तक की सारी बातें बताई।

संत शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की जय

सन् 1946 का दिन मंगलवार 'ललितपुर' (उ.प्र.) झाँसी की सुबह-सुबह भौर में ही सारा जैन 'जमादार' परिवार एक कक्ष के बाहर चक्कर काट रहा था कि तभी सन्नाटे को चीरते हुए एक किलकारी गूँज उठी। उस आवाज को सुनते ही घर आँगन व पास-पड़ोस का सारा वातावरण खुशी से झूम उठा। पिता श्री पं. बाबूलाल जैन 'जमादार' जी के घर में भ्राता श्रीमती दक्खी देवी की कुक्षी से प्रथम पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। पू. ताऊजी श्री छोटेलाल जी जमादार एवं ताई जी श्रीमती तुलसा

बाई का तो यह हाल था कि आज कौन सी निधि लुटा दें क्योंकि खुशी ही ऐसी थी जहां घर में तीन भाईयों में से किसी की संतान नहीं थी वहाँ इस बच्चे का जन्म तो अद्भुत उपलब्धि थी। पूत के पाँव पालने में ही पहचाने जाते हैं; उक्त उक्ति के अनुसार आप जन्म से ही होनहार थे। आपके जन्म के बाद परिवार में आर्थिक व धार्मिक वृद्धि होने लगी।

अब बारी आई बच्चे का नामकरण करने की तो बच्चे का नाम रखा गया 'अशोक'। सच ही है जिसके आने से सारा परिवार शोक रहित हो गया हो वह अशोक ही तो कहलायेगा। जिस तरह इनका नाम रखा गया उसी तरह सभी के लाड़ले, सभी के चहेते, सभी का मान-सम्मान पाते हुए अपना जीवन व्यतीत किया।

अशोक जी जिस समय 8 वर्ष के थे तभी पिता श्री. 'पं. बाबूलाल जी' ललितपुर (झाँसी) से दिगम्बर जैन इन्टर कालेज में व्याख्याता के पद पर नियुक्त होकर बड़ौत आ गये। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बड़ौत में ही प्रारम्भ हुई।

बचपन से ही मेधावी शक्ति के धनी थे इसलिए सभी छात्र व शिक्षक वर्ग आपसे प्रभावित हो जाते थे। जैसे-जैसे आप बड़े होते गये वैसे-वैसे ही शैक्षणिक, सामाजिक व धार्मिक गतिविधियाँ बढ़ती गईं। जैन व जैनोत्तर समाज में पूरे बड़ौत में अशोक जैन जमादार नाम अच्छी तरह जाना जाता था। सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने के कारण आपकी शैक्षणिक योग्यता मध्यम ही रही। दोस्तों के साथ हिल-मिल कर रहना, साहसपूर्वक निर्भिकता से हर काम को करना आपकी आदत थी।

वंशानुगत वक्तव्य शैली के कारण स्कूल स्तर की प्रत्येक वाद-विवाद प्रतियोगिता में आप प्रथम स्थान प्राप्त कर लेते थे। प्रत्येक कार्य को ऊँचाईयों तक करना आपकी आदत थी। यही कारण था कि इण्टर में आपने स्काउट में शामिल होने के पश्चात् एन.सी.सी. में सैकेण्ड लेफ्टिनेंट पद पर पहुँच कर अपनी योग्यता का परिचय दिया। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन जी के कर कमलों से राष्ट्रपति भवन दिल्ली में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त कर आपने कॉलेज का नाम रोशन किया। लेकिन आपने कभी भी अपने नियमों में शिथिलता नहीं आने दी। स्काउटिंग कैम्प में भी आप रात्रि में भोजन नहीं करते थे। राष्ट्रपति भवन के समारोह में भी आपने रात्रि में भोजन नहीं लिया ऐसी नियमों के प्रति दृढ़ता आप में शुरू से ही थी। पर्व के समय में एक समय भोजन करना, उपवास करना आपकी आदत थी।

बी.एस.सी. में जब कॉलेज में आये तो आकर्षक व्यक्ति होने के कारण बड़ौत की ही एक पतली-दुबली धरहरी सी लड़की से आकर्षित हो गये और उसी समय मन में ठान लिया कि मेरी जिंदगी में कोई दूसरी लड़की नहीं आयेगी मैं शादी करूँगी तो इसी लड़की से। यहीं से जीवन में संघर्ष शुरू हो गया। मेरे परिवार में इस बात का विरोध शुरू हो गया। लेकिन दोनों ने प्रतिज्ञा ले ली थी इसलिए दोनों अपनी बात पर अडिग रहे।

तभी सन् 1968 में बड़ौत में मुनि श्री विद्यानन्दजी का चातुर्मास हो रहा था। आपने अपने पिताजी से मुनि पथ और मुनि चर्या को जानने की इच्छा जाहिर की। तब पिताजी ने कहा अगर मुनि चर्या देखना है तो अजमेर में साक्षात् विराजमान आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास जाओ। और उनके चरणों में शरण लो। पिता आज्ञा मान कर आप तत्काल अजमेर के लिए निकल पड़े। तीव्र पुण्य योग व आपकी भक्ति व समर्पण के कारण पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी व नव दीक्षित

मुनि श्री विद्यासागर जी (वर्तमान में श्रमण संस्कृति के राजहंस संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज) के श्री चरणों में आपको संघस्थ ब्रह्मचारी के रूप में ज्ञानार्जन करने का सौभाग्य मिला।

आचार्यश्री ज्ञानसागर जी व मुनि श्री विद्यासागर जी की आहार चर्या व वैयावृत्ति में आपका समय व्यतीत होने लगा। अजमेर में आपकी चर्या, सद् व्यवहार व मधुर वचनों के कारण सबके मन में आपके प्रति प्रेम व आदर का व्यवहार करता था। उस समय मुनि श्री विद्यासागर जी को सिर्फ कन्नड़ भाषा आती थी। मुनि श्री विद्यासागर जी अशोक जी से कहा करते थे 'अशोक! तुम्हारी शैली अच्छी है तुम प्रवचन करना मैं तपस्या करूँगा।' कुछ दिन के पश्चात् अशोक जी ने अपनी मुनि दीक्षा लेने की बात आचार्य ज्ञानसागर जी के सामने रख दी। इससे अजमेर समाज में विद्रोह-सा हो गया कि इतनी कम उम्र में मुनि दीक्षा देना कहाँ तक उचित है? क्योंकि अभी कुछ ही समय पहले एक नवयुवक (विद्याधर) को मुनि दीक्षा दी गई थी। उन्हें विद्याधर से नाम दिया था 'विद्यासागर'। जब यह खबर बड़ौत पहुँची तो चरित्र मोहनीय कर्म के तीव्र उदय से परिवार व मित्रों के आग्रह पर दीपावली 1968 में पुन बड़ौत में वापस आ गये। मित्र जन, माताजी की बीमारी का झूठ बोल कर ले गये थे।

अब ग्रहस्थ आश्रम में प्रवेश के लिए दबाव पड़ने लगा। तब अपने नियम में दृढ़ता की प्रवृत्ति के कारण आपने अपनी प्रथम व अंतिम प्रेमिका (रविकान्ता) को ही अपनी जीवन संगिनी के रूप में चुना। समस्त बाधाओं को लांघते हुए सन् 1975 में रविकान्ता आपको मिल ही गई और आपका दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक गुजरने लगा।

30 अगस्त 1976 में आपके घर में प्रथम पुत्री 'रुचि' का जन्म हुआ। रुचि का लाड़ प्यार और पालन-पोषण में वक्त गुजर रहा था कि 21 अगस्त 1979 को दूसरी पुत्री 'गरिमा' (मोना) आपके घर में आई। इस तरह परिवार बढ़ने लगा। सन् 19 दिसम्बर 1981 में एक पुत्र 'अंकुर' जैन का जन्म हुआ और परिवार पूरा हो गया। बच्चों को शिक्षित व संस्कारित करने में समय व्यतीत होने लगा। आपने शिक्षा के साथ-साथ अपने बच्चों में धार्मिक संस्कार भी खूब अच्छे से दिये। एक बार की बात है रुचि मात्र 3 या 4 साल की रही होगी। नर्सरी में पढ़ती थी। इन तीनों बहन भाईयों की शिक्षा सेन्ट जोसेफ एकेडमी में हुई है। 25 दिसम्बर को स्कूल में क्रिसमस के मौके पर केक सभी बच्चों को दिया गया लेकिन रुचि ने केक नहीं खाया। यह कह कर मना कर दिया इसमें अंडा होता है हम जैन हैं इसलिए हम केक नहीं खाते हैं। रुचि की इस बात से स्कूल के प्रिंसिपल (फादर) इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा इतना छोटा बच्चा इतना मजबूत है। मैं इसके माता-पिता से मिलना चाहूँगा। फादर जब हमारे घर आये तो इतने प्यार से मिले कि जब तक वह दिल्ली में रहे तब तक उनका आना-जाना हमारे परिवार में बना रहा। मौके-मौके पर वह हमारे घर आते थे और हमारे घर का शाकाहारी भोजन खाकर बहुत खुश होते थे।

इसी तरह दूसरी बेटी मोना जब छोटी सी थी। तो हम परिवार सहित पू. पिताजी (पं. बाबूलाल जी) पू. माताजी (दक्खी देवी जी) के साथ दर्शनों के लिए अहिच्छत्र पार्श्वनाथ क्षेत्र पर गये थे। वहाँ पर जब भगवान का अभिषेक हो रहा था तो मोना अपने बाबा जी की गोदी में बैठी थी। मोना बाबू जी की बहुत लाड़ली थी तो अपने बाबा जी से पूछती? भगवान इतने बड़े होकर अपने आप नहीं नहा सकते? इस बात को सुनकर बाबाजी बहुत खुश हुए और खूब हँसे। उन्होंने यह बात भरी सभा में सबको बताई कि बच्चा किस तरह चीज पकड़ता है। अंकुर की बचपन से ही मंदिर जाना, धार्मिक कार्यों में रुचि लेना, गिनी-चुनी सी चीजें खाना इसका शौक रहा। अंकुर ने अपने 2-3

दोस्तों का नानवेज छुड़वा दिया है। वैसे भी मुनि बनाने में रुचि ही इनकी प्रेरणा रही है। हर जन्मदिन पर पूछती थी पाप इस बार क्या छोड़ रहे हो।

बात को सुनकर बाबाजी बहुत खुश हुए और खूब हँसे। उन्होंने यह बात भरी सभा में सबको बताई कि बच्चा किस तरह चीज पकड़ता है। अंकुर की बचपन से ही मंदिर जाना, धार्मिक कार्यों में रुचि लेना, गिनी-चुनी सी चीजें खाना इसका शौक रहा। अंकुर ने अपने 2-3 दोस्तों का नानवेज छुड़वा दिया है। वैसे भी मुनि बनाने में रुचि ही इनकी प्रेरणा रही है। हर जन्मदिन पर पूछती थी पाप इस बार क्या छोड़ रहे हो।

आप 7 भाई और 1 बहन है। बड़ा परिवार व घर में सबसे बड़े होने के कारण परिवार की सभी जिम्मेदारियाँ, रीति-रिवाज व उत्साह पूर्वक हम दोनों पूरी करते रहे।

सन् 1982 में आपने लॉयन्स क्लब जाइन कर लिया। वहाँ भी चार्टर्ड प्रेसिडेंट बनकर समाज की खूब सेवा करते रहे। आपने अपने क्लब में शराब व नान वेज पर पूरी तरह पाबन्दी लगा दी। मेम्बरशिप उन्हीं को दी जाती थी जो इन दो बातों का पालन करेगा। आपने सामाजिक कार्य करते हुए मुझे अपना सहभागी बनाया और मुझे ज्वाइन चेयरमैन के पद पर बना कर रखा।

सर्विस करते समय भी आप अपने नियमों के प्रति दृढ़ बने रहे। एक बार की बात है कमिश्नर के चपरासी ने इन्हें बुलवाया तब इन्होंने उससे कहा मैं थोड़ी देर में आता हूँ। अब ऑफिसर तो ऑफिसर हैं। जब ये वहाँ पहुँचे तो उन्होंने कहा तुम्हें पता है जैन! मैं तुम्हें सस्पेंड कर सकता हूँ। तब इन्होंने कहा - 'सर, आप मुझे क्या सस्पेंड करेंगे। मैं अपना रेसिगनेशन लेटर आपको दे देता हूँ। पहले आप मेरी बात सुन लीजिये। मेरे लिये, मेरे नियम और धर्म से बढ़कर कुछ भी नहीं है। मैं रात में भोजन नहीं करता हूँ। जिस समय ये मुझे बुलाने आया है मैं अपना भोजन करने के लिए बैठ चुका था इसलिए मुझे देर लगी।' कमिश्नर सरदार थे वह इतने प्रभावित हुए कि जब तक दोनों साथ रहे भाई की तरह साथ मिलकर कार्य करते रहे। ऐसी होती है नियमों के प्रति दृढ़ता।

घर में बड़े होने के कारण या आदत समझिये आप हमेशा जिद्दी रहें और किसी भी बात पर ना सुना आपको गंवारा नहीं था इसलिए हम दोनों का झगड़ा खूब होता था लेकिन उसी समय एक-दूसरे से माफ़ी मांग लेते थे। झगड़ा खत्म हो जाता था। मैंने अपनी जिंदगी में कभी कोई बात नहीं छुपाई। एक बार मुझसे ऐसी गलती हो गई थी लेकिन मैंने वह भी इन्हें बता दिया। उस गलती का प्रायश्चित्त मैं भगवान के दरबार में माँगती हूँ।

सन् 2016 में आप सेवा निवृत्त हो गये और आपने कहा! अब मैं अपना समय धर्म में ही व्यतीत करूँगा कोई काम नहीं करूँगा। आत्म कल्याण की भावना शुरू से ही प्रबल थी तथा सभी तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा करते रहना ही आपकी भावना बनी रहती थी। आपने हम सबको बच्चों सहित सारे जैन तीर्थ क्षेत्र व सिद्ध क्षेत्रों की यात्रा कई-कई बार कराई। आपकी आदत थी यदि कोई यात्री पहाड़ पर यात्रा करते हुए थक जाता था तो आप अपना सहारा देकर उसकी पूरी वन्दना कराते थे। मेरी परवाह भी नहीं करते थे कि मैं भी आपके साथ में हूँ। थोड़ी देर उसके साथ चलना फिर मुझे देखना यही क्रम बना रहता। आपने श्री सम्मद शिखर जी क्षेत्र की 108 से अधिक बार वन्दना कर चुके है।

सन् 2009 में इन्दौर में पंचबालयति मंदिर जी के पंचकल्याणक में आचार्य श्री विद्यासागर जी

के आशीर्वाद से भगवान नेमिनाथ के माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला था। उसके बाद से ही आपकी स्वाध्याय व धार्मिक क्रियाओं में रुचि और बढ़ गई। सन् 2010 में अंकुर की शादी के बाद डूंगरगढ़ में आचार्य श्री विद्यासागर जी से कहा- आचार्यश्री मुझे प्रतिमा लेनी है। तब मैंने विरोध किया कि आचार्यश्री जब मेरी तबीयत खराब होती है उस समय शुद्ध भोजन की व्यवस्था कैसे बनेगी। तब आचार्यश्री ने कहा तुम प्रतिमाओं का अभ्यास करो। तभी से ही घर में शुद्ध भोजन करना, मौन से खाना, अंतराय पालना, तीन समय सामायिक करना आपकी दिनचर्या बन गया। आचार्यश्री ज्ञान सागर ही आपके आदर्श गुरु थे। उनके बाद से ही आचार्य श्री विद्यासागर जी के बार-बार दर्शन करने से आपकी निर्ग्रन्थ मुनि बनने की इच्छा बलवती होती चली गई। लेकिन अपने स्वार्थ के वशीभूत मैं इन्हें रोकती थी। ये बीमारी में मेरी इतनी सेवा करते थे कि आज मैं अपने पैरों से जो चलती हूँ वह इन्हीं की सेवा का फल है। इनकी सेवा के सामने मैं इनकी अपने प्रति हर गलती को भुला देती थी। इन्होंने मुझे सब कुछ दिया उसके बाद भी सभी के सामने कुछ भी कह देना इनकी आदत थी। मुझे लगता था अगर इन्होंने दीक्षा ले ली तो मेरा क्या होगा? मेरा जीवन कैसे चलेगा? मैं तो इनके अधीन थी।

आचार्य श्री विद्यासागर जी से कहा- आचार्यश्री मुझे प्रतिमा लेनी है। तब मैंने विरोध किया कि आचार्यश्री जब मेरी तबीयत खराब होती है उस समय शुद्ध भोजन की व्यवस्था कैसे बनेगी। तब आचार्यश्री ने कहा तुम प्रतिमाओं का अभ्यास करो। तभी से ही घर में शुद्ध भोजन करना, मौन से खाना, अंतराय पालना, तीन समय सामायिक करना आपकी दिनचर्या बन गया। आचार्यश्री ज्ञान सागर ही आपके आदर्श गुरु थे। उनके बाद से ही आचार्य श्री विद्यासागर जी के बार-बार दर्शन करने से आपकी निर्ग्रन्थ मुनि बनने की इच्छा बलवती होती चली गई। लेकिन अपने स्वार्थ के वशीभूत मैं इन्हें रोकती थी। ये बीमारी में मेरी इतनी सेवा करते थे कि आज मैं अपने पैरों से जो चलती हूँ वह इन्हीं की सेवा का फल है। इनकी सेवा के सामने मैं इनकी अपने प्रति हर गलती को भुला देती थी। इन्होंने मुझे सब कुछ दिया उसके बाद भी सभी के सामने कुछ भी कह देना इनकी आदत थी। मुझे लगता था अगर इन्होंने दीक्षा ले ली तो मेरा क्या होगा? मेरा जीवन कैसे चलेगा? मैं तो इनके अधीन थी।

अभी सन् 2018 फरवरी-मार्च में ही मेरे भाई राकेश के साथ गोमटेश्वर बाहुबली भगवान के महामस्तकाभिषेक में 2 बार गये। वहाँ पर आचार्यश्री वर्द्धमान सागर जी से दीक्षा लेने के लिए रुकने लगे। तब मेरे भाई ने कहा 'जीजाजी इस समय आप वापिस चलो मैं जीजाजी को क्या जवाब दूँगा? अगर आपको आना होगा तो दोबारा आपको छोड़ जाऊँगा।' घर आने के बाद जब मुझे ये बात बताई तो मैंने इनसे कहा 'आप मेरे बारे में नहीं सोचते, तब इन्होंने मुझे आश्वासन दिया था कि अच्छा मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा और तुम्हारे बाद एक दिन भी घर में नहीं रुकूँगा।' मैं पागल मैंने समझा ठीक है अब नहीं जायेंगे। लेकिन मन के अन्दर की भावना को दबाना बहुत मुश्किल होता है। मैं एक बात और स्पष्ट कर देना चाहती हूँ। हमारे घर में किसी चीज की कोई कमी नहीं है हमें किसी का कुछ देना नहीं है। हमारे परिवार में मैं और मेरे बच्चों को इस तरह की आदत है कि जितना हमारे पास है हम उतना ही खर्च करते हैं किसी से उधार लेना हमने नहीं सीखा है।

घर में अंकुर व अंकुर की बहू नेहा बहुत अच्छे हैं। मेरा अच्छी तरह से ध्यान रखते हैं। दोनों बेटी-दामाद सब संस्कारित व अच्छे हैं। 15 जनवरी 2018 में जब अंकुर के बेटे आमर्ष का जन्म हुआ इन्होंने उसे भी नहीं खिलाया। अंकुर के 1 बेटी 'ऐरा' और एक बेटा 'आमर्ष' है। रुचि के

भी एक बेटा 'समग्र जैन' व एक बेटी 'देशना जैन' है। इसी तरह मोना के एक बेटी 'क्षमा जैन' व एक बेटा 'अनन्त जैन' है। दीक्षा के बाद अंकुर ने मुझे बताया कि 'आमर्ष' के होने के बाद पापा ने मुझसे कहा था 'अब मेरे सब काम पूरे हो गये। तब नहीं समझा पापा ऐसा क्यों कह रहे हैं?'

1 अप्रैल सन् 2018 को श्री सिद्धवर कूट सिद्ध क्षेत्र में महावीर जयन्ती मनाने गये हुए थे। वहाँ इन्होंने बाल ब्रह्मचारी धीरज भैया साइनटिस्ट बाल ब्र. सत्येन्द्र भैया से अपनी दीक्षा की बात की और रात में पूरे परिवार और धीरज भैया व सतेन्द्र भैया के साथ बैठकर मुझे इस तरह हिपनोटाइज किया कि मैंने कह दिया 'अच्छा! आपको जाना है तो जाओ मेरा जो होगा देखा जायेगा।' मुझसे बोले 'क्या तुम चाहती हो मैं दुनिया से ऐसे ही चला जाऊँ मुश्किल से मनुष्य जन्म और जैन कुल मिला है। मुझे मुनि बनकर समाधिपूर्वक मरण करना है। मुनि बने बिना समाधि नहीं होती है।'

सिद्धवर कूट से आते ही नेहा से बोले 'नेहा बेटा! मेरी उदयपुर की सीट देख कब की मिल रही है। हमने पूछा वहाँ किसलिए जाना है तो बोले, वहाँ आचार्यश्री सुनीलसागरजी का संघ विराजमान है। जिसमें सतीश जी (जो अब संघ में मुनि श्री सर्वार्थसागरजी हैं) उनके दर्शन करने जाना है।' कभी अकेले जाते नहीं थे हम चार लोग भाई राकेश, भाभी संगीता मैं और ये चारों अक्सर यात्राओं पर यहीं जाना होता था तो इकट्ठे ही जाते थे। राकेश और मैं ने कहा सभी चलते हैं। तब इन्होंने कहा - नहीं भाई अबकी बार तो अकेला ही जाऊँगा। फिर कभी सब चलेंगे। इनके दिमाग में क्या चल रहा था, हमें किसी को कुछ भी पता नहीं था और उन्होंने 11 अप्रैल 2018 को उदयपुर की टिकट करा ली। 19 अप्रैल को आचार्यश्री विद्यासागर जी के पास जाने की टिकट करा रखी थी।

अबकी बार तो अकेला ही जाऊँगा। फिर कभी सब चलेंगे। इनके दिमाग में क्या चल रहा था, हमें किसी को कुछ भी पता नहीं था और उन्होंने 11 अप्रैल 2018 को उदयपुर की टिकट करा ली। 19 अप्रैल को आचार्यश्री विद्यासागर जी के पास जाने की टिकट करा रखी थी।

11 अप्रैल को ही रुचि के घर पर मुनिश्री वीरसागर जी महाराज का आहार हुआ था हम सभी वहाँ पर गये हुए थे। आहार के बाद कुछ देर तक रुचि से अकेले चर्चा करते रहे मुझे नहीं पता इनकी क्या बातें हुई? फिर बोले अच्छा मैं चलता हूँ। मुझे अपनी पैकिंग भी करनी है और घर वापस आ गये। मुझे कुछ बेचैनी सी रही कि कभी अपनी पैकिंग अपने आप करते ही नहीं थे क्या लेकर जायेंगे। मैंने मोना से कहा- मोना अब घर चल पापा को शाम को उदयपुर जाना है और हम घर आ गये। वहाँ से आकर मैंने देखा अपना एक बैग पैक किया हुआ है उसमें पहनने के लिए 2 कुरीतियाँ, 2 लुंगी, तौलिया वगैरह रखे हुए थे। मैंने कहा वहाँ क्या पहनोगे और 2 कुर्ते - पाजामे में मैंने रख दिये। ये बोले 17 को वापस आ रहा हूँ और हँस दिये। उस दिन की हँसी का मतलब हमें अब समझ में आता है।

जाने वाले को कोई रोक नहीं सकता वह किसी के रोके नहीं रुकता। 11 अप्रैल की शाम को 6 बजे मैं और अंकुर इन्हें निजामुद्दीन स्टेशन पर छोड़ने गये तो वहाँ भी कुछ अटपटा सा व्यवहार था बिना कुछ बोले एकदम से कुली किया और चले दिये। अंकुर भी कहने लगा पापा को क्या हो गया है। संयोग मिलते ही 12 अप्रैल की शाम 8.30 बजे गोद भराई की फोटो सहित समाचार मोबाइल पर भेद दिया मेरी 20 अप्रैल को दीक्षा है आना हो तो आ जाना ऊपर से नेहा रोते हुई आई 'देखो! मम्मी पापा ने क्या कराया है ये सब देखकर हम सब तो स्तब्ध से रह गये समझ ही नहीं आ रहा था ये क्या हो रहा है?' उसी समय दो जोड़े तरुण जी अंजू एवं नरेन्द्र भाई साहब और सरिता भाभी जी का

फोन आया कि हम घर आ रहे हैं। मेरा और नेहा का तो रोना ही बंद नहीं हो रहा था कुछ समय में नहीं आ रहा था हम क्या करें, क्या करें? उन चारों को हमसे पहले पता था कि भाई साहब दीक्षा ले रहे हैं। तभी अंकुर ऑफिस से आया तो वह भी देख रहा था क्या हो गया सब ऐसे क्यों हैं वह भी सकपका सा गया बिना बताये बिना कुछ कहे पापा क्या कर रहे हैं और कहने लगा - मेरा आज से आजीवन रात्रि भोजन का त्याग है।

मेरा दिमाग ही काम नहीं कर रहा था कि दीक्षा की खुशी मनाऊँ या अपने अकेलेपन पर रोऊँ। दो दिन तक हम सब बहुत विचलित रहे। घर में दो दिन तक रिश्तेदारों और मिलने वालों का तांता-सा लग गया। फिर मैंने अपने मन को समझाया इन्होंने तो अपने आत्म कल्याण का रास्ता पकड़ लिया मैं अति रौद्र ध्यान करके अपने कर्म क्यों बाँधू। मुझे तो अब अनुमोदना करनी है। इस तरह हम सभी परिवार वाले व रिश्तेदार दीक्षा में जाने की तैयारी में लग गये। इनके सारे भाई-बहन परिवार व सभी रिश्तेदार उदयपुर जाने की तैयारी में लग गये जिसके जैसे सीट मिली वैसे ही बुकिंग करा ली।

17 अप्रैल को जब हम उदयपुर पहुँचे तो वहाँ आचार्यश्री सुनील सागरजी पूरे संघ को पढ़ा रहे थे। जैसे ही हमने नारियल समर्पित किया वैसे ही आचार्यश्री बोले लो 'जमादार जी का परिवार तो आ गया।' आचार्यश्री ने कहा - 'हमें इनके और इनके पिताजी के बारे में सब कुछ पता था।' मैं एक बार भी इनके सामने कमजोर नहीं पड़ी ना ही रोई। मैंने इनसे सिर्फ इतना ही कहा, आप अपने मेरे बारे में कुछ नहीं सोचा बिना बताये इतना बड़ा फैसला ले लिया। तुमने सिद्धवर कूट में हाँ तो कह दिया था इतना कह कर ये चल दिन फिर दो दिन तक मुझसे कोई बात नहीं की। मेहंदी की रस्म भी नहीं करवा रहे थे जबरदस्ती सारे प्रोग्राम कराये। आचार्यश्री ने कहा! आप क्षुल्लक दीक्षा ले लो बाद में मुनि दीक्षा दे देंगे। लेकिन इनकी तो जिद थी मुझे मुनि ही बनना है। तब मैंने आचार्यश्री से कहा आचार्यश्री आप मुनि दीक्षा ही दीजिये आपको किसी भी तरह की शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।

धन्य हैं ऐसे गुरुदेव जिन्होंने पहचान लिया कि शिष्य दृढ़ है और आचार्यश्री सुनील सागर जी इन्हें मुनि दीक्षा देने के लिए तैयार हो गये। आखिर इनका इंतजार पूरा हो गया और 50 वर्ष के धीरज के बाद वह सुनहरा दिन आ ही गया। जो इनके जीवन में सुनहरे अक्षरों में अंकित हो गया। 20 अप्रैल 2018 का वह दिन जब आचार्यश्री सुनीलसागर जी महाराज ने अपने कर कमलों से उदयपुर में इन्हें मुनि दीक्षा प्रदान कर नाम दिया मुनि श्री सुधीर सागर जी। ऐसे दीक्षा देकर आचार्यश्री ने हम सभी पर बहुत बड़ा उपकार किया। मैं तो जब भी आचार्यश्री के दर्शन करती हूँ मुझे उनमें वात्सल्यमयी समता की शांतमूर्ति नजर आती है मैं तो आचार्यश्री से यही प्रार्थना करती हूँ अपने ही चरणों में जगह देकर इनको ज्ञानार्जन करायें और रत्नत्रय भी अच्छे से पालन करने हेतु प्रेरित करें। आपकी और संघ की चर्चा देखकर लगता है ऐसे ही गुरु की तो तलाश थी अशोक जी को।

मुनिश्री सुधीर सागर भी अपने गुरु आज्ञा और उनके पद चिन्हों पर चलकर अपना मुनि धर्म अच्छे से निर्वाह कर रहे हैं।

अंत में मेरी तो भावना और आचार्यश्री से यही प्रार्थना है कि इन्हें इतनी शक्ति और दृढ़ता दें जब तक समाधि हो तब तक इनके रत्नत्रय और चर्चा में किसी भी प्रकार शिथिलता न आये इसी तरह धर्म के मार्ग पर निर्विकल्प आगे बढ़ते रहें।

महावैज्ञानिक महावीर

✽ आर्थिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माताजी ✽

पानी में कमल तब खिलता है जब सूर्य निकल जाता है। हमारे शरीर को कमल उपमाओं से विभूषित किया है। मुख कमल, नयन कमल, हृदय कमल, हस्त कमल, नाभि कमल, चरण कमल आदि। कमल जैसे हमारे में भी सूर्य के निकलने पर संकुचन विस्तार होता है। अपना मुख कमल निकलने के बाद खोलना चाहिये और सूर्य अस्त होने पर बंद हो जाना, अर्थात् रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिये। भगवान महावीर वैज्ञानिकों के वैज्ञानिक उन्होंने 2536 वर्ष पहले कहा कि रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिये। रात्रि में सूर्य न होने से अनंत जीवों की उत्पत्ति होती है और जीव भोजन में शामिल हो जाते हैं। हम हिंसा के भागी बनते हैं।

आज डॉ. भी कहता है सो 5 घंटे पूर्व भोजन कीजिये ताकि आपका शरीर स्वस्थ हो भगवान महावीर कहते हैं कि पानी छानकर पियें क्योंकि 1 बूंद पानी में 36450 जीव होते हैं छानकर वापस पानी के जीव पानी में पहुँचा देते हैं। जिससे अहिंसा की रक्षा होती है। वहीं डॉ. कहते हैं पानी को फिल्टर कर पीजियें क्योंकि उसमें बैक्टीरिया कीटाणु हमारे पेट को खराब कर देगे। डॉ. ने अब कहा है और प्रभु महावीर ने 2536 वर्ष पहले कहा है।

इसी तरह से भगवान महावीर कहते हैं कि अष्टमी चतुर्दशी को उपवास या व्रत करना चाहिये। जिससे मन वचन काय पर संयम प्राप्त होगा। और हमारी आत्मा शुद्ध होगी। वहीं डॉ. कहते हैं कि सप्ताह में एक दिन लंघन करना चाहिये। ताकि पेट की मशीन को आराम मिल सके और पेट अच्छी तरह से काम करे अतः हमें भगवान महावीर की बात को बिना किसी तर्क की श्रद्धा पूर्वक मानना चाहिये।

श्रद्धा के द्वारा किया गया थोड़ा कार्य भी बहुत होता है और बिना श्रद्धा के द्वारा किया ज्यादा धर्म भी थोड़ा फल प्रदान करता। किसी भी मंत्र को पढ़ने के पूर्व उस मंत्र की प्रतिश्रद्धा अति आवश्यक है। आदमी की श्रद्धा एक डॉक्टर के प्रति है दवाई को जाने बिना डॉ. के कहने पर खा लेता। आदमी की श्रद्धा एक नाई के प्रति है हाथ में छुरा है और गर्दन झुका देता है विश्वास है कि बाल ही काटे गर्दन नहीं। ऐसा श्रद्धा हमारी भगवान और गुरुओं के प्रति होनी चाहिये।

यदि हम धर्म की छत्रछाया में न हो तो सारे ग्रह हम पर विपरीत प्रभाव डालते हैं किन्तु यदि हम छाया में हैं तो इसका प्रभाव कम हो जाता है। ज्योतिष का नियम है सूर्य से पिता, चंद्र से मां, मंगल से भाई, बुध से बहन बुआ बेटा गुरु से गुरु, शुक्र से पत्नी, शनि से नौकर आदि और राहु से केतु से बाहरी जानवर आदि की स्थिति देखी जाती है। यदि आप पिता की सेवा करते हैं तो आपका सूर्य ग्रह आपके अनुकूल होगा यदि माता की सेवा करेंगे चंद्र ठीक होगा, भाई को साथ रखोगे तो वात्सल्य करेंगे तो मंगल ठीक होगा, बहन बुआ बहू बेटा को उपहार दो एवं प्रियवचन बोलो तो बुध ठीक हो जायेगा, गुरु की सेवा यथा योग्य कीजिये आपका गुरु ग्रह ठीक हो जायेगा पत्नी के प्रति अच्छा व्यवहार रखे तो शुक्र ठीक होगा, नौकर से ठीक रहें तो शनि ठीक होगा और गाय को रोटी कुत्ते को रोटी चीटी आदि को भोजन दे तो राहु केतु ठीक होंगे।

पहले समय में प्रथम रोटी गाय को और आखरी रोटी कुत्ते को खिलाते थे। अब गाय और कुत्ते की रोटी आदमी खाने लगा है इसलिये ग्रह भी हावी हो रही है। राहु केतु शनि का सबसे बड़ा दुश्मन शराब है। शराबी मनुष्य का राहु अनुकूल होते हुये भी प्रतिकूल हो जाता है।

हम अपनी जन्मपत्नी ज्योतिषी को दिखाये उसके पहले यदि इन कार्यों को करें तो ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। घर स्वर्ण बन जाये और ग्रह अनुकूल हो जायेंगे।

हमारे गौरव

धर्मात्मा रानी जक्कियब्बे

इसी युग की एक उल्लेखनीय जैन महिला-रत्नी थी। राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण द्वितीय (कन्नरदेव) के समय में 911 ई. में बनवासि- 12,000 प्रान्त का शासक महासामन्त कलिबिट्टरस था, जो सम्भवतया बंकेयपुत्र लोकादित्य का उत्तराधिकारी था। उसके अधीन नागरखण्ड-70 का नालगावुण्ड (सामन्त) सत्तरस नागार्जुन था। उस वर्ष सम्भवतया किसी युद्ध में नागार्जुन की मृत्यु हो तो सम्राट ने उसकी पत्नी जक्कियब्बे को उसके स्थान में नागरखण्ड एवं अबुतबूर की नालगावुण्ड और सामन्त नियुक्त किया। यह महिला उत्तम प्रभु शक्ति युक्त, जिनेन्द्र शासन की भक्त और अपनी योग्यता एवं सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध थी। अपनी वीरता और पराक्रम के उचित गर्व से गौरवान्वित इस महिला ने कुशलता पूर्वक सात-आठ वर्ष पर्यन्त अपने पद का सफल निर्वाह किया और अपने प्रदेश का सुशासन किया। अन्त में 918 ई. में इन्द्र तृतीय के शासन काल में वह रुग्ण हो गयी तो शरीर और भोगों को क्षणभंगुर समझ अपनी संपत्ति एवं पदभार सौंप दिया और स्वयं वन्दन के तीर्थ की बसदि में जाकर पूरी श्रद्धा के साथ सल्लेखनाव्रत पूर्वक देह का त्याग किया। इस बसदि (जिनालय) का नाम जक्कलि-बसदि था और सम्भवतया यह स्वयं जक्कियब्बे द्वारा निर्मापित थी उसने उस बसदि के लिये चार मत्तल धान्य का क्षेत्र भी दान दिया था। चिक्कहन सोगे के रामेश्वर में प्राप्त एक शिलालेख में उल्लिखित जक्कियब्बे भी यहीं प्रतीत होती है। उक्त लेख में उसे नागकुमार नामक एक महान योद्धा की भार्या बताया है और लिखा है कि इस भक्त श्राविका ने जो अपने गुणों के कारण रोहणी से भी बढ़ गयी थी। शरीर की अशुचिता, नश्वरता एवं हेयता का भान करके प्रसन्नता के साथ समाधिमरण पूर्वक परलोक यात्रा की थी।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

- 1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
- 2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
- 3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान -**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)

फोन: 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



जैन व्यक्तित्व श्री वालचंद हीराचंद दोशी जैन



भगवान ऋषभदेव ने इंसान को आजीविका के लिये जो शिक्षा दी इन सब शिक्षाओं का सेठ बालचंद हीराचंद दोशी (जैन) ने अपने जीवन में भरपूर उपयोग किया था।

1. असि-डिफेन्स के लिये अति आधुनिक अस्त्र-शस्त्र बनाये।
2. मसि- शिक्षा के लिये स्कूल, कॉलेज व होस्टल बनवाये।
3. कृषि- खेती के लिये वैज्ञानिक ढंग से कार्य किया जिससे हजारों एकड़ भूमि लहलहा उठी
4. शिल्प- देश में पहला हवाई जहाज, समुद्री जहाज व मोटर कार बनाई।
5. वाणिज्य- व्यापार को खूब बढ़ावा दिया, जिससे हजारों व्यक्तियों को आजीविका मिली।

ऐसे व्यक्ति बालचंद का जन्म गुजराती जैन परिवार में श्री हीराचंद की धर्मपत्नी श्रीमति राजूबाई की कुक्षी से 23 नवम्बर 1882 को शोलापुर में हुआ था। वालचंद को जन्म देने के एक पखवाड़े के उपरांत ही इनकी माता राजूबाई का देहांत हो गया। इनकी चाची उमाबाई ने इनको पाला पोसा व कभी माँ की कमी का अहसास नहीं होने दिया। कुछ समय बाद इनके पिता हीराचंद ने दूसरी शादी सुखोबाई से कर ली जिससे इनके तीन सौतेले भाई गुलाबचंद, रत्नचंद तथा लालचंद पैदा हुये।

पिता हीराचंद ने यह सुनिश्चित किया कि वालचंद की दिनचर्या अनुशासन, सत्यनिष्ठा तथा नित्यता से युक्त हो। उन्होंने भगवान महावीर के संस्कृत में लिखे उपदेशों से बालक में संस्कार भरे। इन्होंने अपने पुत्र से कुछ चुनिंदा खण्डों को कंठस्थ कराया, सामायिक तथा प्रतिक्रमण की विधि को कंठस्थ करवाया। धर्म की व्याख्या उन्होंने स्वयं तथा विद्वानों से करवाई।

वालचंद ने ई.स. 1899 में मैट्रिक पास की तथा सेंट जेवियर कॉलेज से बी.ए. की डिग्री हासिल की। पढ़ाई के दौरान ही इनकी शादी ई. सन् 1900 में किला चन्द्र बाई से हो गई जिससे इनकी एक बेटी चतुर का जन्म हुआ परंतु पत्नी का प्रसव के समय ही देहांत हो गया। बाद में वालचंद ने परिवार दबाव में आकर 1913 में दूसरी शादी कस्तूर बाई मेहता से कर ली जिससे इनके दो बच्चे एक बेटा व एक बेटी पैदा हुई। परंतु बाल्यकाल में ही इन दोनों बच्चों की मृत्यु हो गई।

कुछ वर्षों बाद वालचंद ने शोलापुर में अपने पिता तथा चाचा के विरोध के बावजूद कपास तथा बैंकिंग का पारिवारिक धंधा छोड़ दिया और रेलवे के एक भूतपूर्व क्लर्क लक्ष्मण बलवंत पाठक के साथ भागीदारी में पाठक-वालचंद प्रा.लि. कम्पनी बनाकर रेलवे की ठेकेदारी का काम शुरू किया तथा बारसी लाईट रेलवे नामक रेलवे लाइन के निर्माण का ठेका प्राप्त किया जो सफल रहा। इसके बाद इन्होंने रेलवे के कई ठेके हासिल किये। इनकी यह भागीदारी 1915 तक चली। इसके बाद वालचंद ने आगे बढ़ते हुये अनेक उद्योगों की स्थापना की। इन्होंने लोगों को जोड़ने के लिये पुलों का निर्माण शुरू किया। महाराष्ट्र में भोर घाट सुरंग को सफलता पूर्वक पूरा किया। इस कार्य को उस समय किसी भारतीय कम्पनी की क्षमताओं से परे का समझा जाता था। इन्होंने हिन्दुस्तान कंस्ट्रक्शन कम्पनी (एच.सी.एल) बनाई जिसने बड़ी-बड़ी निर्माण योजनाओं को अंजाम दिया।

वालचंद ने ई. सन् 1923 में देखा कि जब तक खेती को आधुनिकी कृत तथा लाभकारी नहीं बनाया जाता तब तक भारत के लाखों गरीबों की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता इनका उपनिवेशवाद शोषण होता रहेगा। उन्होंने 1500 एकड़ भूमि खरीदी, उसमें से पत्थरों तथा चट्टानों को

हटवाया। खेती के वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों को बुलाकर भूमि को खेती योग्य बनवाया। वैज्ञानिक ढंग से उसके ऊपर गन्ने की फसल की बिजाई करवाई। बंजर जमीन लहलहा उठी, इसी जमीन के एक भाग पर भारत की प्रथम चीनी मिल रावलगांव शुगर फार्म लि. की स्थापना की। बेहतरीन चीनी प्रोसोसिंग प्रौद्योगिकी के द्वारा ऐसी चीनी का उत्पादन किया जो अंतराष्ट्रीय मानकों के अनुरूपी थी। इस बात से प्रभावित होकर महाराष्ट्र में किसानों ने हजारों एकड़ की भूमि पर गन्ने की फसल उगाई। जगह-जगह चीनी बनाने की मिलें खुल गई। चीनी मिलों की अभूतपूर्व सफलता का श्रेय श्री वालचंद को जाता है कि महाराष्ट्र राज्य इस समय भारत में सबसे अधिक चीनी बनाता है। वालचंद ने 1929 में जल परिवहन में भी पहचान बनाई तथा सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी के पास 54 स्टीमरों का बेड़ा था जो उस समय की सबसे बड़ी जल परिवहन कंपनी थी, उसके चेयरमैन बन गये तथा 1950 तक इसी पद पर रहे, जब इन्होंने सेहत की खराबी के कारण त्यागपत्र दे दिया था।

1939 में अपनी विदेश यात्रा के दौरान संयोग से इनकी एक अमेरिकन हवाई जहाज कम्पनी के मैनेजर से भेंट हो गई जिसके परिणामस्वरूप इन्होंने भारत में हवाई जहाज बनाने का निश्चय किया। इन्होंने हिन्दुस्तान एयरक्राफ्ट लि. (H.A.L.) की स्थापना की। इनकी फैक्ट्री में निर्मित प्रथम प्रशिक्षण हवाई जहाज हालों ने जुलाई 1941 में उड़ान भरी। इसके कुछ समय बाद 1943 में भारत की ब्रिटिश सरकार ने इसे सामरिक महत्व का तथा युद्धकौशल सम्बन्धी संवेदनशील बताकर (H.A.L.) का राष्ट्रीयकरण कर लिया और इस कम्पनी का नाम HINDUSTAN AERONAUTICS LTD. कर दिया। तब से यह कम्पनी हवाई जहाजों का निर्माण कर रही है और यह जहाज वायु सीमा की सुरक्षा कर रहे हैं।

21 जून 1941 को वालचंद ने विशाखापट्टनम में सिंधिया शिपयार्ड लि. द्वारा बनाये जाने वाले समुद्री जहाज के कारखाने का नींव पत्थर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से रखवाया था। इस बात की कल्पना भी कोई ब्रिटिश राज में नहीं कर सकता था। देश आजादी के पश्चात् 1948 में इस कम्पनी द्वारा निर्मित पहले समुद्री जहाज जलुशाह को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के करकमलों से समुद्र में जलावतरण करवाया था। 1961 में इस कम्पनी का भारत सरकार ने देश की सुरक्षा के हित में राष्ट्रीयकरण कर लिया था और इसका नाम हिन्दुस्तान शिपयार्ड लि. रख दिया गया।

1945 में वालचंद ने प्रीमियर ऑटोमोबाईल को भारत में मोटरकार बनाने के लिये स्थापित किया। इन की स्वदेशी निर्मित मोटरकार 1949 में मार्किट में आ गई जो देश में निर्मित पहली मोटर कार थी। 1955 में इस कम्पनी के फायट के साथ समझौता कर के इंजनों का भारत में निर्माण शुरू किया।

वालचंद नगर इंडस्ट्रीज लि. इंडस्ट्रीयल मशीनरी डिब्बजन का निम्नलिखित क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान है। स्वनिर्मित शुगर मशीनरी का निर्यात, नौसेना के जहाजों का गिअर बॉक्स, स्वनिर्मित सीमेंट फैक्ट्री, अणु ऊर्जा प्रकल्प के महत्वपूर्ण हिस्से, आकाशयान, प्रक्षेपणास्त्र के पार्ट्स पनडुब्बी के महत्वपूर्ण पार्ट्स, ऑप्टिकल टेलीस्कोप आदि।

वालचंद हीराचंद दोषी (जैन) की जीवन गाथा एक निर्भीक, दृढ़निश्चयी, निष्ठावान, बुद्धि तथा अंतर्ज्ञान से सम्पन्न असाधारण व्यक्ति के जीवन को प्रकट करती है। इस व्यक्ति में सुजनात्मक की एक ऐसी ऊर्जा थी जो उनमें श्रेष्ठ विचारों को संजोने एवं उन्हें उत्कृष्ट रूप से मूर्त रूप देने में सहायक थी। वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, चलना सीखने से पहले दौड़ना जानते थे। वह एक सच्चे देशभक्त और दूरदृष्टि रखने वाले जैन श्रावक थे।

व्यापार में उतार-चढ़ाव आने के बावजूद, वालचंद ने अपने कर्मचारियों और समुदाय के हित और कल्याणक का मुख्य रूप से ध्यान रखा। इन्होंने बहुत से ट्रस्ट स्थापित किये जिन्होंने अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की। 1941 में अपने पिता तथा चाचा के नाम पर सेठ हीराचंद-नेमचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग-पूना में जैन विद्यार्थियों के लिये बनवाया जहाँ पर केवल शुद्ध व सात्विक भोजन दिया जाता है।

- * शोलापुर में वालचंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- * सांगली में वालचंद कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग
- * बेलानदुर में वालचंद-डेलकारनी फिनिशिंग स्कूल
- * शोलापुर में वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साईंस
- * सांगली में श्रीमति कस्तूर बाई-वालचंद कॉलेज तथा सोनीपत में वालचंद पब्लिक स्कूल मुख्य रूप से है।

वालचंद चेम्बर ऑफ कामर्स-ईडस्टीज एवं एग्रीकल्चर के 1927 से 1938 तक 11 वर्ष प्रधान रहे। इण्डियन नेशनल शिप ऑनर्स एसोसिएशन के 1929 से 1948 तक 19 वर्षों तक प्रधान रहे, इण्डियन मर्चेंट चेम्बर के 1927-28 में प्रधान रहे। 1947 में जब देश आजाद हुआ उस समय वालचंद गुप देश के प्रथम 10 बड़े औद्योगिक घरानों में एक था। 1949 में इनकी सेहत पर प्रहार हुआ तथा 1950 में इन्होंने व्यापार से अवकाश प्राप्त कर लिया। इनकी धर्मपत्नी कस्तूर बाई इनको प्राकृतिक परिवेश में बसे धार्मिक नगर सिद्धापुर (गुजरात) ले गईं ताकि इनकी सेहत में सुधार हो सके वहां कस्तूर बाई ने इनकी सेवा की तथा धर्म ध्यान करवाया। तीन साल बाद 8 अप्रैल 1953 को सिद्धापुर में श्री बालचंद भारतीय उद्योग और इसके बुनियादी ढाँचे पर अपनी अमिट छाप छोड़कर परलोक सिधार गये। उनके जीवन का ध्येय भारत को आर्थिक बंधनों से मुक्त करना और यह सिद्ध करना था कि यदि अवसर दिये जाये तो भारत में वह क्षमता और योग्यता है कि वह कभी किसी से पीछे नहीं रहेगा। इन्होंने अपनी पूरी इच्छा शक्ति तथा निष्ठा के साथ अपने स्वप्नों का वास्तविकता में बदला। भारत सरकार के संरक्षण मंत्रालय की तरफ से देश के प्रति सेवा के कारण कई बार इनको सम्मानित किया गया। इनकी याद तथा सम्मान में मुम्बई की एक रोड का नाम वालचंद हीराचंद मार्ग रखा गया है। शोलापुर में एक सड़क का नाम सेठ वालचंद हीराचंद रखा गया है। इण्डियन मर्चेंट चेम्बर, मुम्बई में एक हॉल का नाम वालचंद हीराचंद हॉल रखा गया है। पूना के निकट एक औद्योगिक शहर को वालचंद नगर का नाम दिया गया है।

वालचंद हीराचंद दोशी (जैन) पर डाक टिकट

23.11.2004 को इनके 121वें जन्म दिवस पर भारत सरकार के डाक विभाग ने इनके सम्मान में एक बहुरंगी डाक टिकट जारी की थी, जिसका मूल्य 500 पैसे हैं, इसे 30 लाख संख्या में छापा गया था। इस डाक टिकट के मध्य में वालचंद का चित्र छापा गया है, पृष्ठभूमि में एक तरफ पुल बना हुआ है, व दूसरी ओर समुद्री जहाज बना है। टिकट के नीचे इंग्लिश व हिन्दी में वालचंद हीराचंद लिखा है। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैण्ड से छपने वाले स्टेनले गिब्सन के टालॉग में नम्बर 2237 पर दिया गया है तथा अमेरिका से छपने वाले सकाट के टालॉग में नम्बर 2087 पर दिया गया है। तथा कामनवेल्थ देशों के टालॉग में नम्बर 2240 पर दिया गया है।

प्रथम दिवस आवरण तथा विरूपण



कब्ज कैहू बाय-बाय

* जिनेंद्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर)*

देश में कब्जियत ही एक ऐसा रोग है जो लगभग हर घर के दूसरे व्यक्ति के पेट में पाया जाता है। हम जो नित्य खाते हैं उसका सार अंश रक्त और असार अंश मल में परिणत होकर रोज निकल जाता है यही स्वाभाविक नियम है। जब ऐसा न होकर वहीं मल आंतों में रुका रह जाय या कष्ट से निकलता हो अथवा बहुत चेष्टा करने पर थोड़ा निकलता है तो उसे कब्ज या कांसिपेशन (Constipation) कहते हैं। यह समस्या वयस्कों के साथ ही बाल युवा पीढ़ी को हो रही है जो दिनों दिन बढ़ती जा रही है। यह अस्वस्थता की निशानी है कहा जाता है कि पेट ही सारी बीमारियों का घर है, पुरानी कहावत है एक बार हो तो योगी, दो बार हो तो भोगी, और तीन बार हो तो रोगी।

कब्ज की समस्या का प्रमुख कारण अनियमित दिनचर्या, नित्य अधिक मात्रा में वरिष्ठ चीजें खाना, सूखे, द्रव्य जैसे बारीक गेहूँ, मेंदे की बनी रोटी, तेज मसालों वाली सब्जियाँ, दाल, पर्याप्त मात्रा में फाइबर युक्त भोजन न लेना, अत्याधिक डेयरी प्रोडक्ट्स खाना, चायनीज खाना, कम मात्रा में पानी पीना, जुलाब लेना, चायकाफी अधिक पीना, ठंडा गरम एक साथ खाना, धुम्रपान, तम्बाकू, गुटका खाना। इसके अतिरिक्त भारी रासायनिक व विषैले तत्वों से प्रदूषित वायु, जल व अनाज भी जिम्मेदार है। इसके साथ ही अनेकों बीमारियों जैसे एनीमिया, डायबिटिज, डिप्रेशन, थाइराईड, पथरी फेफड़े, मस्तिष्क संबंधी रोग, पक्षाघात भी इसके लिये हानिकारक हैं।

आंतों के भीतर बहुत दिनों तक मल रहने से सड़ जाता है उससे विषैले पदार्थ उत्पन्न होकर शरीर में फैलने से सिरदर्द, आधा सीसी सिरदर्द, कम दिखाई देना, मुँह का स्वाद कड़वा होना, जीभ मैली, पेट फूलना, चिड़चिड़ा स्वभाव, नींद न आना, बुखार बना रहना, बवासीर होना, सायटिका नसों में दर्द, पैर के तलवा फूल जाना, पाचन शक्ति कमजोर होना, हमेशा मल त्याग की इच्छा, कलेजे में धड़कन, हृदय रोग, आंतों की पेशी की शुद्धि हाइपर ट्रापी, आंतों की भीतरी आयतन बढ़ना डाइलेटेशन, हार्निया के साथ ही पेट की जुड़ी अन्य बीमारियों को आमंत्रित करता है।

कब्ज को छुटकारा पाने हेतु 1. आहार की सुव्यवस्था 2. नियमित व्यायाम 3. औषधि सेवन। चौकर युक्त मोटे गेहूँ के आटे की रोटी, थुली, चावल, फाइबर युक्त अनाज, सब्जियाँ, फलों की उपयोग करना, पानी में गलाकर नरम किये गेहूँ, जों छिलका युक्त मूंग, मैथी को खाना, तरल पदार्थ छाछ, सूप, सलाद का उपयोग करना। भोजन के एक घंटा पहले व भोजन के दो घंटा बाद कुनकुना पानी नियमित रूप से पीना व शरीर की आवश्यकतानुसार पानी पीना, समय पर शौच जाना।

प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट सुबह शाम की वाक प्रभावी होती है। कब्ज से छुटकारा हेतु बहुत व्यक्ति प्रायः जुलाब की दवाई लेते हैं किन्तु लाभ की अपेक्षा नुकसान होता है व आंतों की गतिशीलता कम पड़ जाती है इसलिये इस कदम को त्याग देना उचित है।

कब्ज के कारणों को दूर करके नियमित दिनचर्या रखना, भोजन स्वाद व पेट भरने की अपेक्षा औषधि के रूप में करना एवं आवश्यकतानुसार आर्युवेदिक व होम्योपैथी पद्धति चिकित्सा से नियंत्रण हो जाता है। योग भी प्रभावी है किसी अनुभवी योग्य चिकित्सक की देख रेख में इलाज कराना चाहिये जिससे स्वस्थ-निरोगी वलिष्ठ शरीर प्राप्त करके आनंदमय जीवन प्राप्त कर सकते हैं।



हास्य तरंग

1. चुनाव में जीत पाकर नेताजी अपनी पत्नी के साथ मतदाओं का अपने पक्ष में वोट देने के लिये बधाई व आभार प्रदर्शन करने आये तो एक व्यक्ति ने पूछा कि आप इतने पतले व आपकी पत्नी मोटी है ? कैसी जोड़ी है। नेताजी ने कहा जिन लोगों ने मुझे वोट दिया उनका मैं आभारी हूँ। और जिन लोगों ने मुझे चोट दी उनका आभारी मेरी पत्नी है।
2. वेलेटाइन दिवस पर एक लड़के ने लड़की को फूल दिया तो, लड़की ने लड़के के गाल पर चांटा जड़ दिया। लड़का गुस्से में बोला मैंने तो फूल देकर क्या गलती की। लड़की ने कहा मैंने बराबर की आपने फूल दिया जो पार्टी का चुनाव चिन्ह मैंने में बदले में पार्टी का चुनाव चिन्ह पंजा दिया।
3. अप्पदा पीड़ितों ने राज्य सरकार के कर्मचारियों उनकी सहायता एक दिन के वेतन लेने से मना कर दिया क्योंकि यह कोई सहायता है। सहायता सचमुच में यदि चाहते हो तो एक दिन की उपरी कमाई ही दे दो।
4. सेटी जी ऑपरेशन थ्रेटर से बाहर निकल कर आ गये तो बाहर बेटी पत्नी पूछती है क्या बात है ? नर्स कह रही है पहला ऑपरेशन घबराने की बात नहीं है। पत्नी बोली तो क्या हुआ ऐसा होता है। सेटी जी नर्स मेरे से नहीं डॉक्टर से कह रही थी।
5. पुत्र बेटी की वार्ता शादी के कार्ड में वर के नाम के आगे चि. क्यों लिखा होता है ? जिसका अर्थ है-चिन्ताग्रस्त। वधु के नाम के आगे चि.सौ क्यों लिखा होता है ? जिसका अर्थ है-चिन्ता के सौ कारण

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

जैन शोध परम्परा के अग्रणीय-विद्वान

* डॉ. श्री कपूरचन्द जी जैन *

कपूर का सौरभ किसी भी आवरणों के द्वारा रूकता नहीं है ठीक इसी प्रकार जैन जगत के मूलधन्य विद्वान कपूरचन्द जी ने अपनी शशक्त लेखनी विद्वता के माध्यम से जिस साहित्य का सृजन किया वह जैन संस्कृति के लिये मील का पत्थर सिद्ध होगा। एवं उनके द्वारा संकलित संपादित स्वतंत्रता संग्राम में जैन एक ऐसी कृति है जो इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण अक्षर से लिखा जायेगा श्रमण संस्कृति के निष्ठावन प्रहरी कपूरचन्द जी को विस्मृत करना कई पीढ़ियों के लिये मुश्किल होगा साहित्य से भी मनीषी सरल स्वभावी सीधी सपाठ शैली में अपनी बात रखने की अद्भुत कला के धनी कपूरचन्द्र जी से जैन समाज को एवं श्रमण संस्कृति को बहुत अपेक्षाओं थी पर नियत की कुट असामायिक परिवर्तन की दशा को हृदय को कठोर करते हुये हम सबको स्वीकार करना पड़ा।

मेरा संपर्क सन् 1993 से रामटेक चातुर्मास में डॉ. कपूरचन्द्र खतौली से हुआ था प्रथम परिचय में उन्होंने मुझे प्राकृत विद्या जैन शोध संदर्भ की अपनी संकलित कृति भेट की दी जिससे प्रेरणा लेकर मेरी रूचि शोध कार्य कराने में निरन्तर बढ़ती गयी और आज में एक ऐसे पड़ाव पर पहुँचा कि जब लगभग 25 शोध प्रबन्ध ग्रन्थों के कार्य में व्यवहारिक रूप से मार्गदर्शन देकर शोध विद्यार्थियों को विद्या वारिधी की उपाधि दिलाने में सफल हो सका इसमें में सदैव डॉ. कपूरचन्द जी से सहयोग लेता रहा उनके सुझाव अत्यन्त विनम्र और मूल्यक हुआ करते थे। उनका मूल्यांकन जब मैं आज बैठकर के करता हूँ तब मुझे ऐसा लगता है कि उनका अनुभव शोध कार्य में कितना गम्भीर और यथार्थ परख था।

जब मैं यह कल्पना करता हूँ कि कास डॉ. कपूरचन्द के जीवन के 10 वर्ष और होते तो जैन दर्शन के महान ग्रंथों पर जो शोध कार्य होता वह जिन शासन की प्रभावना में कितना योगदान देता। शोध के क्षेत्र में उनकी जो दृष्टि थी उसे यदि युग दृष्टि कहा जाता तो मुझे लगता कोई अतिशयोक्ति नहीं होती है। सदैव उत्तेजित विचारों के धनी थे एवं शान्ति और क्रान्ति के समन्वयन थे 23 जुलाई 2016 की वह घड़ी जिसमें हमसे डॉ. कपूरचन्द जी को छीना उसे हम नियति की परणति मानकर समताभाव से स्वीकार करते हैं और उनके प्रति आभार का भाव व्यक्त करते हैं।

बाल कहानी कपटी पूजा



गुना की दुर्गा कॉलोनी में एक इरफान नाम का लड़का रहता था जिसके पिताजी का नाम अंसार खान था अंसार खान के मुहल्ले में एक गरीब आदिवासी परिवार रहता था जिसकी एक तेरह वर्षीय पूजा नाम की लड़की थी इरफान की कामुक नजरें पूजा की जवानी पर लगी रहती थी पूजा के पिताजी अभी कुछ ही दिन पहले स्वर्गवासी हुये थे इरफान पूजा और पूजा की मां से सदैव यह बोलता रहता था कि पूजा के पिताजी की आत्मा भटक रही है इसके लिये कुछ विधि विधान करालो पूजा की माँ ने एक दिन इरफान की बात मान ही ली और कहा ठीक है जब तुम कहोगे तब हम पूजा करा लेंगे पूजा कि सामग्री इरफान खुद लेकर आ गया इरफान ने कहा यह पूजन तालाब के किनारे एकांत स्थान में होगी और वह एक दिन पूजा को लेकर चांदवाडी तालाब के पास सुनसान स्थान में ले गया और पूजा के साथ अश्लील करकत करने लगा यहाँ तक कि पूजा के वस्त्र तक उतारने लगा कुछ वस्त्र इरफान के हाथ में थे पर पूजा ने मौका देखकर वहाँ से भागा और एक परिवार में शरण ली जिस परिवार में शरण ली उस परिवार की महिला उमा देवी को आप बीती घटना सुनाई उमादेवी घटना सुनकर इरफान को सजा दिलवाने का निर्णय किया और वह पूजा के साथ कोतवाली पहुँच गई कोतवाली के टी. आई विवेक आछाना ने कठोर कार्यवाही कि किन्तु समय निकल जाने पर मौका पाकर इरफान भगोड़ा हो गया।

पुलिस ने इरफान पर दस हजार (10000) रुपये का इनाम रखा और अपना जाल फैलाया इरफान 30 दिसम्बर को पुलिस के चंगुल में फँस गया अन्त में इरफान की कपट भरी पूजा की पोल खुल गई और इरफान को उम्रकैद की सजा हुई।

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

* घुड़सवार दौड़

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- विभिन्न प्रकार की दौड़

खेल विधि- एक स्वयं सेवक की पीठ पर दूसरा सवार होगा। इसी स्थिति में निर्धारित स्थान तक जाकर वापस आना है। आते समय घोड़ा तथा सवार अपनी स्थिति बदल भी सकते हैं।

* भालू दौड़

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- विभिन्न प्रकार की दौड़

खेल विधि- अपने हाथ से पैरों के अंगूठे पकड़कर भालू बनें। अब निर्धारित स्थान तक दौड़ होगी।

खेल क्रं- 1.15 की तरह बने भालू टक्कर मारकर एक दूसरे को मंडल से बाहर निकालेंगे जो अपने अंगूठे छोड़ देगा वह भी बाहर हो जायेगा।

* भैंसा दौड़

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

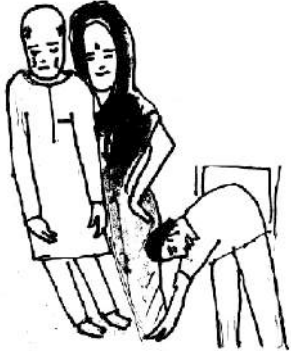
खेल वर्ग- विभिन्न प्रकार की दौड़

खेल विधि- दो स्वयंसेवक आगे-पीछे खड़े होकर एक दंड को अपनी टांगों के बीच से निकालकर क्रमशः आगे तथा पीछे से पकड़ेंगे इस प्रकार बने भैंसों की दौड़।

संस्कार गीत

परिवार महिमा

ॐ ॐ ॐ



सम्हालो अपना परिवार इसी से धर्म निभता है
धर्म बिन जिंदगी का सुख सभी जीवन से छिनता है

1.

खड़ा परिवार जिसके अंग
वही हर युद्ध जीता है
पिता माता हों जिसके संग
वहीं अमृत को पीता है
बना परिवार स्वर्गों सा
जहां परिवार रहता है

2.

चरण छूलो बुजुर्गों के यहीं
अशीष फलता है
जो दुख दे माँ पिता को
वहीं नरकों में पड़ता है
होंगे साकार सपने सब
यदि गुरु संग मिलता है

3.

नहीं तुम छोड़ना नाता
कभी निष्ठुरता मन रख के
नहीं कृतघ्न तुम बनना,
अकड़ झूठी ही मन रख के
विनय से काम सब बनते
प्रेम परिवार निभता है।

बाल कविता

मटका



मटका का पानी है ठण्डा
मटका कर दे सबको ठण्डा
मिट्टी का मटका है प्यारा
गर्मी में लगता यह न्यारा
दलित मिट्टी से मटका बनता
बिन मटके प्यासी सी है जनता
एसी फ्रिज तो रोग बढ़ाते
मटका हो तो रोग मिटाते
मटके में है कौन सा जादू
हिन्दुस्तानी मटका दादू
मटका दादू मटका दादू
देखके मटका मटका दादू
दादू को है प्यारा मटका
मन के सारे मिटाता खटका
धरती माँ का बेटा मटका
जन-जन को प्यारा है मटका

समाचार

आर्यिका दीक्षायें सम्पन्न

धरियावत (राजस्थान)- आर्यिका श्री विशुद्धमति माताजी समाधि स्थली नन्दनवन धरियावत राजस्थान में 8 मार्च 2019 को आर्यिका श्री प्रशान्तमति माताजी के करकमलों से ब्र. मीना दीदी गठी, सारिका दीदी अर्थुना, शैली दीदी कर्नाटक, दीप्ती दीदी महाराष्ट्र को आर्यिका दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री देवयश श्री, आर्यिका श्री देवांगना श्री, आर्यिका देवशी श्री, आर्यिका श्री देवर्धी श्री रखा गया

सनावद-आर्यिका श्री सुदृष्टिमति माताजी के करकमलों से क्षुल्लिका श्री शुभ्रमति माताजी को आर्यिका दीक्षा 2 मार्च 2019 को श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर परिसर धर्मशाला में दी गई। जिनका नाम आर्यिका श्री शुभ्रमति रखा गया।

बांसावाड़ा- गणिनी आर्यिका सुभूषण मति माताजी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर बाहुबली कॉलोनी बांसावाड़ा में 2 मार्च 2019 को शिवानी दीदी, हीराबाई जी को दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री अंशभारती एवं क्षुल्लिका श्री दर्शभारती रखा गया।

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं
विश्वशांति महायज्ञ

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में दिनांक 13 मार्च से 22 मार्च 2019 तक सिद्धचक्र महामंडल विधान नेमीचन्द्र अवधेश राजेश प्रवीण एवं समस्त सुसनेर परिवार के द्वारा प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश मलैया के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें सौधर्म इन्द्र-श्रीमति इन्द्रा नेमीचन्द्र जैन, महायज्ञनायक-श्रीमति ऐश्वर्या अंकित जैन, कुबेर- मनोज जैन बबीना, श्रीपाल मैना सुन्दरी, श्री हर्ष तृप्ती जैन, यज्ञनायक-नरेन्द्र कमलेश जैन जयपुर, अवधेश अनीता जैन, राजेश सीमा जैन, श्रीफल द्रव्य प्रदाता- श्रीमति सुलोचना

चन्द्रप्रकाश जैन, ईशानेन्द्र-प्रवीण अभिलाषा जैन, सानतकुमार- उत्तमचन्द्र जैन, माहेन्द्र-ज्ञानचन्द्र चन्द्रा देवी जैन, ब्रह्मेन्द्र- श्रीमति मीना अनिल पाड्या, ब्रह्म प्रत्येन्द्र- श्रीमति अनिता सुरेश बैक वाले, लान्तवेन्द्र- श्रीमति शिरोमणि ऋषभ जैन, लान्तवप्रत्येन्द्र- राजश्री मनीष जैन, शुक्रेन्द्र- श्रीमति किरण आर.सी जैन, शुक प्रत्येन्द्र- श्रीमति समता राजकुमार जैन, शतारेन्द्र-श्रीमति ज्योति राजेन्द्र कंठाली, शतार प्रत्येन्द्र- श्रीमति विद्या राजेन्द्र जैन, आनतेन्द्र- श्रीमति पद्मा सूरजमल जैन, प्राणतेन्द्र- श्री विमल कुमार जी जैन, आरनेन्द्र- श्रीमति शचि गौरव जैन, अच्युतेन्द्र-श्रीमति रोशनी प्रतीक जैन ध्वाजारोहण करने का सौभाग्य गजेन्द्र जैन गिन्नी गुप एवं भरत जैन शांति निकेतन मुख्य कलश स्थापन-श्रीमति कविता राजीव सेठी, श्रीमति मणि आजाद मोदी, श्रीमति सुधा डॉ. सनत् कुमार जैन, श्रीमति कल्पना प्रियदर्शी जैन, श्रीमति निधि आशीष जैन, श्रीमति पूनम अभिषेक जैन को सौभाग्य प्राप्त हुआ। अंतिम दिन श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र वावनगजा बडवानी सिद्धचक्र विधान हेतु छब्बीस प्रतिमायें पंचबालयति मंदिर से गयी थी। उनकी वापिसी पर मस्तकाभिषेक एवं शान्तिधारा कर विराजमान की गई।

समाधिमरण

बावनगजा (बड़वानी)- मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज के ससंध सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा सिद्धचक्र विधान के अंतिम दिन दिनांक 20.03.2019 को ब्र. शांतिलाल (बाबाजी) का समाधिमरण हुआ।

कंचनबाग इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन समोशरण मंदिर कंचनबाग इन्दौर में श्री विमल कुमार, मनोज कुमार, मुकेश कुमार, बाकलीवाल परिवार के द्वारा अष्टान्हिका पर्व में

सिद्धचक्र विधान का आयोजन किया गया। जिसमें पं. श्री रतनलाल जी, पं. भरत शास्त्री के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें अंतिम दिन विश्वशांति महायज्ञ एवं स्वर्ण रथ यात्रा के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

बावनगजा- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी एवं मुनि श्री विराट सागर जी के सान्निध्य के श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र बावनगजा बड़वानी में दिनांक 13 से 21 मार्च 2019 तक चौंसठ मंडलीय संस्कृत सिद्धचक्र विधान ब्र. अभय भैया इन्दौर प. उदयचन्द्र जी शास्त्री सागर आदि लगभग 48 विद्वानों के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें 26 प्रतिमायें पंचबालयति मंदिर इन्दौर से, उदयनगर से एवं अंजलीनगर से प्रतिमायें पहुँची जिसका प्रसारण जिनवाणी एवं पारस चैनल प्रमाण सागर एप्प के माध्यम से प्रत्येक नगर के मंदिरों एवं घर पर बैठकर लोगों ने विधान का लाभ लिया।

सागर (म.प्र.)- सागर शहर के सामाजिक सरोकार में संलिप्त नामचीन व्यक्तित्व श्री सुबोध मलैया (पिता स्व. श्री दुलीचन्द्र मलैया) के बहुआयामी व्यक्तित्व, सामाजिक, सांस्कृतिक, सेवाभावी, संस्थाओं अथवा शहर विकास के सार्थक पहल में संभवतः शायद ही कोई बुद्धिजीवी तब का उनकी भागीदारी से परिचित न हो, राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, राष्ट्रीय विचारों के उत्प्रेरक, बेनरों के माध्यम से राष्ट्र विरोधी पाकिस्तान और कश्मीर के आतंकवादी तत्वों का मुखर विरोध उनका यह साहसिक प्रयास प्रदेश ओर देश में बिरले ही देखने को मिलता है, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं अन्य संस्थाओं द्वारा अनेक अलंकरणों एवं नगर पालिक निगम, सागर द्वारा सर्वोच्च नागरिक सेवा सम्मान से सम्मानित श्री मलैया का निकट संपर्क में रहने से उनके व्यक्तित्व और सार्वजनिक क्रियाकलापों से करीब 30 वर्षों से मैं भलीभांति परिचित हूँ।

संविधान निर्मात्री सभा सदस्य, पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राष्ट्रीय वेलफेयर लेबर कमीशन के अध्यक्ष, सागर में जन्में एवं देश के कोयलांचल से जुड़े बीसवीं सदी के एकमेव राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय श्रमिक नेता श्री आर.के. मालवीय (रतनलाल किशोरीलाल मलैया) श्री सुबोध मलैया के सगे चाचा थे। जिनके सान्निध्य में देश के शीर्ष राजनेताओं और मूर्धन्य विद्वतजनों से श्री सुबोध मलैया का निकट संपर्क रहा है, देश में संभवतः ऐसे बिरले राजनेता होंगे जिनके निकटस्थ परिवारजन अति साधारण जीवन यापन करते हो, ऐसे ही आडम्बर विहीन सार्वजनिक जीवन में निष्कलंक श्री मलैया हैं।

राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में विशिष्ट हिन्दी शब्द शैली में प्रकाशित आलेख अभिव्यक्त करने की क्षमता श्री मलैया के लेखों में मिलती है।

निःस्वार्थ सेवाभाव, अति सरल जीवन और सामाजिक सेवा के प्रति समर्पण, युवाओं के प्रेरणापुंज ऐसे समग्र सेवाओं को रेखांकित करने वाले श्री सुबोध मलैया को शुभकामनायें आशीर्वाद और उनके स्वस्थ जीवन की श्री प्रभु से कामना करते हैं।

पंचकल्याणक सम्पन्न

बीनाबारह- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बीनाबारह में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में दिनांक 4 से 10 मार्च 2019 तक पंचकल्याणक एवं सप्त गजरथ महोत्सव ब्र. विनय भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

पंचकल्याणक चतुर्थ वर्षगांठ सम्पन्न

बीना- अनेकान्त ज्ञान मंदिर श्रुतधाम बीना में अनेकान्त ज्ञान मंदिर का 27वां वर्षगांठ एवं पंचकल्याणक का चतुर्थ वर्षगांठ ब्र. संदीप जी सरल के मार्गदर्शन में ब्र. विनोद भैया जबलपुर के विधानाचार्यत्व में शिखरचंद संजय कुमार पहाड़िया परिवार बीना द्वारा सम्पन्न करवाया। जिसमें आनन्द लेने का शुभारंभ डॉ. महावीर प्रसाद आगरा ने किया।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : अप्रैल 2019

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

- वह अमूल्य निधि है। जिसकी तुलना संसार की समस्त सम्पदा से भी नहीं की जा सकती ?
- रत्नत्रय की कीमत, उसकी क्षमता अदभुत है बंधुओ ! अन्तर्मुहूर्त हुआ नहीं कि यह जीव केवलज्ञान प्राप्त कर भी पा सकता है ?
- भव्यत्व की पहचान भले ही सम्यग्दर्शन के साथ हो सकती है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति के साथ ही होगी ?
- रत्नत्रय ही हमारी अमूल्य निधि है, इसे बचाना है। इसको लूटने के लिये कर्म-चोर सर्वत्र घूम रहे हैं। जागते रहो, सो जाओगे तो तुम्हारी लुट जायेगी ?
- रत्नत्रय में तपन के बिना चमक नहीं आती अतः उसे भी बारह तपो सो आवश्यक है ?
- निरीहता और के बिना हम मोक्षमार्ग पर सही-सही कदम नहीं बढ़ा सकते ?
- त्यागी जनों की त्यागवृत्ति देखने से जनों की रागवृत्ति में कमी आती है ?
- बाहर में गुणीजनों को देखकर व अंदर में आत्मस्वभाव को देखने से में निखार आता है ?
- चाहे श्रावक हो अथवा साधु, वही कार्य करे जो में शोभा दे ?
- उलझे हुये की अपेक्षा सुलझे हुये श्रावक श्रेष्ठ हैं और उलझे हुये श्रावकों की अपेक्षा सुलझे हुये पशु श्रेष्ठ हैं ?
- मोक्षमार्ग बहुत है और बहुत कठिन भी। अपने लिये ब्रत पालन में कठोर, दृढ़ होना चाहिये और दूसरों के लिये सुकुमार ?
- चलना आवश्यक है किन्तु लक्ष्य बनाकर। जब तक नहीं बनता तब तक चलने को चलना नहीं कहते ?
- लक्ष्य बनाकर निरंतर चलने वाली पतली नदी भी जिस प्रकार एक दिन विशाल का रूप धारण कर लेती है।
- जैसे-जैसे हम राग-द्वेष को कम करते चले जायेंगे वैसे-वैसे अपनी के पास पहुँचते जायेंगे ?
- पसीना बहाने का नाम मोक्षमार्ग नहीं है वहाँ तो समता को धारण करना पड़ता है ?
- प्रत्येक मोक्षमार्गी के लिये अथवा निन्दा करने वालों के प्रति सद्धर्मवृद्धिरस्तु कहना चाहिये तभी वह जीवन में कुछ पा सकता है ?
- मोक्षमार्ग पर चलना बहुत है। इस मार्ग पर शिथिलता आने में देर नहीं लगती, किन्तु देर है तो एक मात्र इस मार्ग में सफलता पाने में ?
- मार्ग पर चलते समय यदि कोई वाला मिल जाता है तो मार्ग तय करना सरल हो जाता है। गुरु निर्ग्रन्थ-साधु हमारे मोक्षमार्ग के बोलने वाले साथी हैं। उनके अनुगामी बनने से हमारा मोक्षमार्ग सरल हो जाता है ?
- जिसके हृदय में ज्ञान और वैराग्य की किरण जग जाती है उसके चरणों में धन, सम्पदा, वैभव आदि सारे भोग्य पदार्थ झुक जाते हैं ?
- मोह की महिमा का अन्त तब तक नहीं हो सकता जब तक की अनभिज्ञता जीवित रहती है ?
- के विनाश से ज्ञान का विकास होता है और मोह के विकास से ज्ञान का विनाश ?

22. अकेले वैराग्य से सब कुछ नहीं होता किन्तु वैराग्य के साथ-साथ और व्यवहार कुशलता भी अनिवार्य है ?
23. अकेले दूसरों का उपदेश सुनकर ही वैराग्य को नहीं समझा जा सकता बल्कि उसे स्थिर रखने के लिये पुरुषार्थ की भी आवश्यकता है ?
24. वैराग्य की दशा में स्वागत आभार भी सालगता है ?
25. के क्षेत्र में प्रचार-प्रसार की आवश्यकता नहीं है वह अपने आप ही हो जाता है ?
26. वैराग्य की होने पर भी यदि तदनुकूल स्थान न मिले तो उसे स्थिर रखना दुष्कर है ?
27. के अभाव में अकेली दृष्टि का कोई महत्व नहीं, कोई लाभ नहीं ?
28. दृष्टि में पहले पथ आता है और बाद में पथ पर पड़ते हैं ?
29. आँखों के द्वारा जिसे हम देखते हैं उसकी पूर्ति करते हैं ?
30. मंजिल की प्राप्ति मात्र बनाने से नहीं, बल्कि कदमों के बढ़ाने से होती है ?
31. आँखों की पूजा आज तक किसी ने नहीं की, सदा चरणों की पूजा होती है यानि दृष्टि नहीं पूज्य होता है ?
32. आस्था के स्थायी होने पर ही व आचरण वृद्धि को प्राप्त होता है ?
33. आस्था से वास्ता होने पर स्वयं रास्ता देता है, साधक को ?
34. बोलने का नहीं बल्कि चुपचाप का भी प्रभाव पड़ता है ?
35. बोलना, सोचना, चेष्टा करना मोक्षमार्ग में पुरुषार्थ नहीं है, किन्तु एक जगह पर शान्त चित्त से बैठकर आत्म-ध्यान करना वास्तविक है ?
36. अध्यात्म और आचरण ही हमारे का आधार हो ?
37. भवन को छोड़कर वन की ओर जाना पलायन नहीं बल्कि की लाइन (मार्ग) है ?
38. प्राथमिक दशा में अनुत्तीर्ण होकर उच्चता की चर्चा मात्र करना स्वयं को एवं अन्यो को उत्पन्न कराना है ?
39. व्रती के लिये व्रत ही सम्पदा है, उसकी सुरक्षा में वह दिन-रात लगा रहता है ?
40. जो समय काटने में लगा है उसका कर्म नहीं कटना किन्तु जो है काटने में लगा है, उसका समय कब कट जाता है पता भी नहीं चलता ?
- संक्षेप में उत्तर दें ?
41. डाक टिकिट पर जैन व्यक्तित्व का परिचय दिया जाता है इस बार किसका परिचय दिया गया है ?
42. कहानी हर माह दी जाती है इस बार कहानी का शीर्षक क्या है ?
43. आगरा कौन सी नदी के किनारे बसा है ?
44. जबलपुर कौन सी नदी के किनारे बसा है ?
45. सूरत कौन सी नदी के किनारे बसा है ?
46. एम.पी.पी.एस. सी के टॉपर मंडल कौन बने ?
47. मुनि श्री समयसागर जी की मुनि दीक्षा कहा हुई थी ?
48. चलो देखे यात्रा में कौन से प्रांत के प्राचीन अतिशय क्षेत्र एवं मंदिर का वर्णन है ?
49. दुनिया के हर बच्चे के लिये सबसे खाँस सबसे प्यारा रिश्ता किसका होता है ?
50. संवदेना पुस्तक के लेखक कौन है ?

10 प्रश्न संस्कार सागर मार्च 2019, 40 प्रश्न दिव्यताणी सागर बूंद समाय, रत्नत्रय, मोक्षमार्ग से लिये गये हैं।

यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें- फोन 0731-4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: अप्रैल 2019

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर

नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजे तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 240

1		2			4	5		6
			7				8	
9	10		11	12				13
14		15				16		
		17		18		19		
20			21	22				
			23		24		25	
26	27	28		29			30	31
32					33			

ऊपर से नीचे

- श्रेष्ठदान, देवों द्वारा दिया गया दान -4
- एक हिन्दी माह का नाम -2
- कोमल, नम्र, -3
- लीन, तल्लीन -3
- पराजय गले का आभूषण -2
- आचार्य समन्तभद्र द्वारा रचित श्रावकाचार-6
- समवसरण सभा के प्रवक्ता -4
- देखने योग्य, दिखने का भाव -2
- शक्ति, ताकत श्वास, दमन का भाव -2
- दृष्टि -3
- दाग, धब्बा, कालिमा, पाप -3
- समुद्र का नाम -4
- चाह, चाहत मनौति -3
- लता, बेल, बल्लरी -2
- पदक -3
- चाचा, काका पिता के भाई -2
- मुँह निकलने वाला पानी -2
- रेट, दरवाजा -2

बाये से दाये

- अंतिम तीर्थकर का एक नाम -4
- मकान -2
- यदि, अगर -2
- धब्बा, कलंक -2
- काम, श्री कृष्ण एक नाम -3
- पकना, पकने की किया -2
- पति की बहन -3
- शहर, कसबा -3
- धाक् धमाका -3
- मुकुट, ताज महल के नाम का अंश -2
- जल, पानी -2
- रावण की नगरी -2
- पंकज, नीरज -3
- निस्सृत, निकला हुआ -3
- पीता, दुहिता -2
- घमन्ड -2
- धिक, धुत करना -3
- कर्मचारी, काम करने वाला -4

वर्ग पहेली 239 का हल

1	व	2	सं	3	त		4	अ	5	मो	6	घ	व	7	र्ष
8	स	त	त				8	मृ	त				र		
	न					9	र	त			10	ना	दा	11	न
		12	ज	13	स			14	चं	15	ग		न	16	ग
17	शी			18	जी	19	व	20	द्र	व्य					र
	त			21	व	ह					22	मा	23	हि	
24	ल	25	ता		26	म	म	27	ता		28	म	29	द	
31	ना	श	क		32	त		33	रं	34	ग		म		
	थ		35	ल	त			36	गा	ज			न		

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीया पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

सच्ची शरण ये प्रभु के चरण



नियम

- आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
- समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
- पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार 949 रु., द्वितीय 49 रु., तृतीय 24 रु.
- पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की 94 तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक
कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ ललितपुर (उ.प्र.)

ॐमंत्रण...



नवागढ़

महोत्सव 2019

शिलान्यास समारोह

दिनांक : 4-5 अप्रैल 2019



क्षेत्र अनवेषक

महामस्तकाभिषेक

निर्वाण लाडू

भगवान अरनाथ स्वामी के अतिशय सम्पन्न विश्व को एक मात्र प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नंदपुर) का वार्षिक मेला गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की परम शिष्या आर्यिका श्री विनतश्री एवं क्षुल्लिका श्री विक्रमा श्री माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में अठारह मण्डलों द्वारा श्री अरनाथ भगवान विधान, शिलान्यास समारोह, महामस्तकाभिषेक एवं निर्वाणोत्सव के साथ आयोजित किया जा रहा है।

आप सभी इष्ट मित्रों एवं परिवार सहित महोत्सव को भव्यता प्रदान करते हुये धर्मार्जन का सौभाग्य प्राप्त करने हेतु सादर आमंत्रित हैं।



मंगल सान्निध्य
क्षुल्लिका श्री 105
विक्रमाश्री माताजी



मंगल सान्निध्य
आर्यिका श्री 105
विनतश्री माताजी

मांगलिक कार्यक्रम

04 अप्रैल 2019 (वैश्व कृष्ण 14 गुरुवार)

प्रातः 7 बजे - देवाज्ञा, गुरुआज्ञा, आचार्य निर्मंत्रण, खंडपूजा, जाप प्रारम्भ
प्रातः 8 बजे - ध्वजारोहण, आर्यिका श्री का प्रवचन
दोप. 1 बजे - 18 मण्डलीय श्री अरनाथ महामण्डल विधान
सायं 7.30 बजे - आरती, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम (श्री चक्रेश योजना)

05 अप्रैल 2019 (वैश्व कृष्ण 15 शुक्रवार)

प्रातः 7 बजे - नित्यमह पूजा, मूलनायक महामस्तकाभिषेक एवं भगवान अरनाथ स्वामी निर्वाणोत्सव लाडू
प्रातः 12.40 - शिलान्यास समारोह, आर्यिका श्री का प्रवचन

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक

Click कर

www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

निर्दिष्ट दिनांक : 28/03/2019, पोस्टिंग दिनांक : 03/04/2019